

## ख़ुशख़बरी

आपको ये ख़बर देते हुए इन्तिहाई खुशी हो रही है कि शाफ़ई हज़रत के लिये किताबों की कमी को दूर करने के लिये इमाम शाफ़ई फ़ाउन्डेशन की बुनियाद रखी गई है। कूतुबे कौकन हज़रत मख़दूम अली माहिमी रहमतुल्लाहि अलैह की तफ़सीरे कुरआन के सूरए बकर का उर्दू तर्जमा तीन माह की कम मुदत में शाए (प्रकाशित) होकर कामयाबी हासिल कर चुका है। दूसरे "अहकामे शाफ़ई" रिसाला (जो सफ़ीनतुनजा फ़ी उसूले दीन व फ़िक्ह का तर्जमा है) भी शाए हो चुका है। फ़ैजे शाफ़ई (जो मुख़्तसर बा फ़ज़ल का तर्जमा है) आपके हाथों में है। नमाज़ के मसाइल पर किताब और बरकाते शाफ़ई जो अक़ाइदे एहले सुन्नत और इबादात से मुतअल्लिक अहम दस्तावेज़ और अनवारे शाफ़ई जो रोज़ मर्रा के मामूलात पर फ़िक्ह शाफ़ई (मसलक) की रौशनी में एक बेहतरीन किताब है बहुत जल्द मन्ज़रे आम पर आ रही है। अपने इमाम के तअल्लुक से जानकारी के लिये उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी में सीरते इमाम शाफ़ई भी शाए (प्रकाशित) होने जा रही है।

आप हज़रत से गुज़ारिश की जाती है कि किताबों को घर-घर पहुँचाने के लिये हमारा साथ दें।

(1) दफ़्तर इमाम शाफ़ई फ़ाउन्डेशन 4/7 अमीर बाग़ न0 2  
चेम्बूर, मुम्बई 89

(2) जनाब अय्यूब अब्दुल ग़नी वाघु साहब दस्गाह मस्जिद  
डाक्यार्ड रोड, मजगाँव, मुम्बई 10

(3) न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी 14, मुहम्मद अली रोड, मिण्डी

# फ़ैज-ए शाफ़ई

लेखक

अल्लामा फ़कीह अब्दुल्लाह बा फज़ल हज़रमी

उर्दू अनुवाद

हज़रत मौलाना मुहम्मद अस्मत बख़्ख़ेरे, मिरबाही

मौलाना मुहम्मद सलाहुद्दीन मिरबाही

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद अहमद नईनी

प्रकाशक

इमाम शाफ़ई फ़ाउन्डेशन मुम्बई

© सर्वाधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

नाम किताब: फैज़े शाफई  
लेखक: अल्लामा फकीह अब्दुल्लाह बा फज़ल  
हिन्दी अनुवाद: मौलाना मुहम्मद अहमद नईमी, महमूद  
नगर आगरा रोड, मैनपुरी, यू.पी.  
कम्पोज़िंग: हाफिज़ दिलनवाज़ ख़ाँ  
पृष्ठ: 128  
मूल्य: 40  
प्रकाशक: इमाम शाफई फ़ाउन्डेशन, 4/7 अमीर  
बाग़ न० 2 चेम्बुर मुम्बई 89  
संस्करण 2007 ई०

★ मिलने के पते

- (1) दफ़्तर इमाम शाफई फ़ाउन्डेशन, 4/7 अमीर बाग़ न० 2  
चेम्बुर, मुम्बई 89
- (2) जनाब अय्यूब अब्दुल ग़नी वाघु साहब दर्गाह मस्जिद  
डाकयार्ड रोड, मजगाँव, मुम्बई 10
- (3) न्यू सिल्वर बुक एजेंसी 14, मुहम्मद अली रोड भिण्डी  
बाज़ार मुम्बई 3

फ़ेहरिस्त (विषय सूची)

न०	उनवान (विषय)	पेज न०
1	अर्ज़ नाशिर (प्रकाशक निवेदन)	6-7
2	तहारत (पाकी) और मकरूह पानी	8
3	इस्माल किया हुआ पानी और नापाक पानी	9
4	इन्जेहाद (गौर-फ़िक्र) और बर्तन	10
5	मिसवाक	11
6	वुजु	12
7	वुजु की सुन्नतें	13
8	वुजु के मकरूहात और वुजु की शर्तें	15
9	मौजों पर मसह	16
10	वुजु तोड़ने वाली चीज़ें	17
11	हृद्से असगर यानी बे वुजु होना	18
12	किन हालात में वुजु करना सुन्नत है	18
13	ज़रूरत से फ़ारिग़ होने के आदाब	20
14	इस्तिन्जा	21
15	गुस्ल वाजिब करने वाली चीज़ें	22
16	गुस्ल का तरीका और गुस्ल की सुन्नतें	23
17	गुस्ल के मकरूहात और नापाकी	24
18	नापाकी दूर करने का तरीका	25
19	तयम्मूम	27
20	तयम्मूम की शर्तें व फ़र्ज़	29
21	तयम्मूम की सुन्नतें	30
22	पाक चीज़ें न पाने वाले का हुक्म	30
23	हैज़, इस्तेहाज़ा और निफ़ास का ख़ून	31
24	नमाज़	32

न0	उनवान (विषय)	पेज न0
25	नमाज़ के वक़्त	33
26	वक़्त के लिये ग़ौर-फ़िक्र	35
27	अज़ान	37-40
28	नमाज़ का तरीक़ा व उसूल	40
29	नमाज़ी की सुन्नतें	44-51
30	नमाज़ की शर्तें	51-56
31	नमाज़ के मकरूहात	56-57
32	सुत्रा यानी नमाज़ी की आड़	57
33	सजदए सहव	58
34	सजदए तिलावत	62
35	सजदए शुक्र	62
36	नफ़िल नमाज़	63
37	नमाज़ जमाअत	64
38	जुमा और जमाअत के ढ़ज़	65
39	मुक़्तदी होने की शर्तें	66
40	जमाअत सही होने की शर्तें	67
41	इमामत की ज़रूरी बातें	72
42	जमाअत से मुतअल्लिक़ सुन्नतें	73
43	मुसाफ़िर की नमाज़	74
44	दो नमाज़ें जमा करने का बयान	75
45	नमाज़े जुमा	76
46	खुत्बे की सुन्नतें	78
47	नमाज़े ख़ौफ़	80
48	लिबास	81
49	नमाज़े ईद	82
50	सूरज और चाँद गृहण की नमाज़	84
51	बारिश की नमाज़	85

न0	उनवान (विषय)	पेज न0
52	बारिश की नमाज़ की ज़रूरी बातें	86
53	नमाज़ छोड़ने वाले का हुक्म	87
54	बीमारी और मौत का बयान	88
55	गुस्ल मय्यत व कफ़न	89
56	नमाज़े जनाज़ा और दफ़न	91
57	ज़कात	93
58	सदक़ए फ़ितर	98
59	ज़कात के हक़दार	100
60	रोज़ा	102
61	नफ़ली रोज़ा	107
62	ऐतिकाफ़	109
63	हज़ व उमरा	111
64	एहराम बाँधने का वक़्त और जगह	112
65	अरकाने हज़	113
66	हज़ की सुन्नतें	114
67	तवाफ़ की सुन्नतें	115
68	सई और चुकूफ़ की सुन्नतें	116
69	वाजिबाते हज़	117
70	रमी की सुन्नतें और शर्तें	118
71	हज़ अदा करने के तरीक़े व किस्में	119
72	दम के उसूल	120
73	एहराम से ह़राम होने वाली चीज़ें	120
74	हज़ से रोकने वाली चीज़ें	123
75	क़ुरबानी	125
76	अक़ीक़ा	126
77	बाल वग़ैरा के बारे में ह़राम चीज़ें	127
78	ख़ुशख़बरी	128

## अर्ज-ए नाशिर

तहमदुह व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम व अला आलिही व अस्फाबिही अजमईन।

अल्लाह जिसके साथ भलाई चाहता है उसे दीन में फ़कीह (विद्वान) बनाता है। फ़िक़ह एक अज़ीमुश्शान और अहम इल्म है जो इन्सानि ज़िन्दगी के तमाम गोशों को अपने अन्दर समेटे हुए है। इसी पर इबादत की सेहत का दारोमदार है लिहाज़ा अल्लाह और उसके रसूल के हुक्मों पर अमल करने, हलाल और हराम की तमीज़ करने और इबादात सही करने के लिये इल्मे फ़िक़ह यानी शरीअत के मसाइल जानना हर मुसलमान मर्द औरत पर फ़र्ज़ करार दिया गया है। अगरचे अरबी जुबान में शाफ़ई फ़िक़ह (मसलक) की किताबों का ज़ख़ीरा हज़ारों की तादाद में मौजूद है लेकिन उर्दू जानने वालों के लिये शाफ़ई बहिश्ती ज़ेवर के बाद कोई आम फ़हम किताब न थी इसी ज़रूरत के पेशे नज़र इमाम शाफ़ई फ़ाउन्डेशन के ज़ेरे इन्तेज़ाम अहकामे शाफ़ई (तर्जमा सफ़ीनुन्नजा) हाल ही में शाए (प्रकाशित) की गई जो अलहम्दु लिल्लाह काफ़ी मक़बूल हुई मगर अ़वाम की ज़रूरत अब भी पूरी न हो सकी इसलिये कि आज हमारी नस्ल उर्दू जुबान से नावाकिफ़ है। लिहाज़ा आम लोगों को इल्मे फ़िक़ह व मसाइले शरीअत से आगाह करने के लिये हिन्दी में किसी किताब की सख़्त ज़रूरत थी। आख़िर ये तमन्ना पूरी हुई और “फ़ैज़-ए शाफ़ई” के नाम से ये किताब आपकी ख़िदमत में पेश करते हुए हम बे पनाह खुशी महसूस करते हैं और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि उसने हमें इस अज़ीमुश्शान किताब को शाए (प्रकाशित) करने के काबिल बनाया।

ये किताब फ़ैज़-ए शाफ़ई (मुख़्तसर बा फ़ज़ल) जिसके मुसन्निफ़ (लेखक) अल्लामा फ़कीह अब्दुल्लाह बिन अब्दुरहमान बा फ़ज़ल अलहज़रमी हैं। यह शाफ़ई हज़रात के लिये निहायत मक़बूल व

मोअतबर किताब है। जिसमें नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज़ और दूसरे फ़िक़ही व शरई मसाइल बड़े अच्छे अन्दाज़ में शामिल किये गए हैं इसका उर्दू तर्जमा सबसे पहले मुफ़्ती मुहम्मद असमत बूबेरे मिस्बाही साहब की सरपरस्ती में मौलाना मुहम्मद सलाहुद्दीन मिस्बाही साहब ने किया है और मकतबा जामिया शाफ़ेइया मोरबा से शाए हुआ है। और अब हिन्दी में तर्जमा मौलाना मुहम्मद अहमद नईमी साहब रिसर्च स्कॉलर हमदर्द यूनीवर्सिटी, नई दिल्ली (खानकाह रशीदिया, मैनपुरी, यू०पी०) ने किया है। जिसके लिये हम मौलाना साहब के शुक्र गुज़ार हैं और दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला इस किताब को मक़बूल ख़ास व आम बनाए और मुसन्निफ़ व मुतर्जिम को दौनों ज़हान की नेअमतों से मालामाल फ़रमाए।

आख़िर में हम शुक्र गुज़ार हैं मौलाना सैय्यद रिज़वान अहमद रिफ़ाई सकाफ़ी शाफ़ई साहब के जिनकी सरपरस्ती में ये किताब शाए हुई जिनकी मेहनतों और कोशिशों का नतीजा रहा कि नासिक महाराष्ट्र के हमारे चन्द दोस्त हज़रात ने प्रचार व प्रसार की ज़िम्मेदारी क़बूल करते हुए माली तआवुन पेश किया। अल्लाह तआला मौलाना सैय्यद रिज़वान अहमद रिफ़ाई और नासिक वाले हज़रात को भी दुनिया व आख़िरत की खुशियों से मालामाल फ़रमाए।

आपसे गुज़ारिश है कि इमाम शाफ़ई फ़ाउन्डेशन के लिये दुआ करें कि अल्लाह हमसे ज़्यादा से ज़्यादा दीन की ख़िदमत लेता रहे और हर मुशिकल को आसान करे।

काम वो ले लीजिये तुमको जो राज़ी करे  
ठीक हो नामे रज़ा तुमपे करोड़ों दुरुद

दुआओं का तलबगार  
मुहम्मद फ़ारूक़ इब्न महमूद काज़ी शाफ़ई रिफ़ाई  
(मुम्बई)

### तहारत (पाकी)

पाकी बगैर पानी के हासिल नहीं हो सकती और न ही नापाकी बगैर पानी के दूर हो सकती है। और अगर पानी जिसका मज़ा, रंग, या बू पाक चीज़ों की मिलावट की वजह से ऐसी बदल गई हो कि उस पर पानी का लफ़्ज़ न बोला जा सके। पानी में बदलाव इतना ज़्यादा हो कि उस पर पानी का लफ़्ज़ न बोला जा सके, उन पाक चीज़ों की मिलावट से पानी दूर हो, यानी पानी में इन चीज़ों का पाया जाना ज़रूरी न हो वरना उससे पाकी सही न होगी। तग़य्युर तकदीरी तग़य्युर (बदलाव) हिस्सी की तरह है और अगर उस पानी में गुलाब का पानी मिला दिया जिसमें कोई खुशबू न हो, फ़र्ज़ करो कि दरम्यानी सिफ़ात (गुण-विशेषता) में मुख़ालिफ़ हो, और थोड़ी तब्दीली नुक़सान नहीं कर सकती कि इससे पानी के इतलाक़ में रुकावट नहीं होगी, और पानी के ज़्यादा ठहरने और रुके रहने की वजह से कोई नुक़सान नहीं होगा। और पानी के रुके रहने की जगह और गुज़रने की जगह में मिट्टी और काई से भी पानी को नुक़सान नहीं होगा और तेल और अगर की लकड़ी की खुशबू के पास होने से भी कोई नुक़सान नहीं होगा और न पानी के नमक से कोई नुक़सान होगा, न पेड़ के पत्ते झड़कर गिरने से नुक़सान होगा।

### मकरूह पानी

ज़्यादा गर्म पानी और ज़्यादा ठण्डा पानी भी मकरूह है। और आंबे मुशम्मश यानी वो पानी जो सूरज की गर्मी से गर्म हुआ हो। सोने चाँदी के अलावा किसी और धातु के बर्तन में, गर्म देशों में गर्म होने से मकरूह तन्ज़ीही की सूरत पैदा होती है, बदन पर पानी का इस्तेमाल मकरूह है। बदन के अलावा दीगर ज़रूरतों में कपड़े या बर्तन धोने में इसका इस्तेमाल मकरूह नहीं है अगर ये पानी ठण्डा हो जाए तो मकरूह होने की सूरत ख़त्म हो जाएगी।

### इस्तेमाल किया हुआ पानी

इस्तेमाल किया हुआ पानी वह थोड़ा और कुल्लतैन से कम पानी

हैं जो पाकी हासिल करने और नापाकी दूर करने में पहली मर्तबा के धोने में इस्तेमाल किया जाए इस पानी से पाकी सही न होगी, और अगर वुजू करने वाले ने थोड़े पानी में अपना हाथ डुबो दिया अपना चेहरा धोने के बाद चुल्लू से पानी लेने की नियत के बगैर तो वो पानी इस्तेमाल किया हुआ हो गया, दूसरे और तीसरे मर्तबा के धोने से इस्तेमाल किया हुआ नहीं कि दूसरे और तीसरे बार का धोना सुन्नत है तो उस पानी से पाकी सही होगी।

### नापाक पानी

पानी कम मिक्क़दार में और पानी के सिवाए दूसरी पतली चीज़ें भी नापाकी से मिलते ही नापाक हो जाती हैं, और ऐसी नापाकी जो नज़र न आ सके उसका हुक्म अलग है, और मुर्दा बिन खून वाला जानवर भी अलग है। अगर पानी वगैरा में थोड़ा भी बदलाव पैदा हो गया तो माफ़ नहीं है, और बिल्ली का मुँह नापाक हो गया फिर वो चली गई हो सकता है कि उसने ज़्यादा पानी में मुँह डाला होगा और यँही बच्चे का मुँह नापाक हुआ फिर वो कहीं जाकर पानी पी लिया हो कि जिससे उसका मुँह पाक हो गया होगा, और धुआँ जो गन्दगी के जलने से पैदा हो अलग है और नापाक बाल क़लील (कम) मिक्क़दार में अलग हैं। और गोबर का गुबार (गर्द) थोड़ी मिक्क़दार में अलग है और गोबर के गर्द व गुबार से गीले अज़ा (अंग) नापाक नहीं होंगे।

जब पानी कुल्लतैन हो तो उसमें नजासत (गन्दगी) गिरने से नापाक नहीं होता लेकिन अगर मज़ा या रंग या बू बदल गई हो तो वो पानी नापाक है और अगर उसका तग़य्युर (बदलाव) खुद ब खुद ख़त्म हो जाए या उसमें ज़्यादा पानी मिला दिया तो वो पाक हो जाएगा या उसमें मुश्क की खुशबू से बू दूर होगी या मिट्टी के गदलापन वगैरा से ज़ायक़ा, रंग बदल गया तो पाक नहीं होगा, बहता पानी खड़े पानी की तरह है।

कुल्लतैन:- 500 रत्न बग़दादी, (203 सेर, दस तोले हिन्दुस्तानी

हैं दस केन और आधी केन 195 किलो हैं) ये वज़न अन्दाज़न है दो या दो से कम रत्न की कमी नुक़सानदेह नहीं और दो से ज़्यादा नुक़सान करती हैं नापतौल में सवा हाथ मुक़अब यानी लम्बाई, चौड़ाई और गहराई हर एक में सवा हाथ और गोल शक्ल में जिस तरह कुआँ, कुल (व्यास) में एक हाथ और गहराई में ढाई हाथ होगा।

**मुसब्बल पानी :-** वो पानी जो पीने के लिये रखा गया है ऐसे पानी से पाकी हासिल करना हराम है।

### इज़्तेहाद (गौर-फ़िक्र)

और इज़्तेहाद यहाँ तहरी (बेहरतीन चीज़ें चुनना, तलाश करना) के मअना में है, जब किसी पर ताहिर (पाक) के बारे में नापाक होने का शक (पोशीदा और ग़ैर ज़ाहिर) हो जाए तो इज़्तेहाद (गौर-फ़िक्र) करे और जिसकी पाकी का गुमान हो उससे पाकी हासिल करेगा अगरचे कि वो नाबीना (अंधा) हो जब कोई क़ाबिले ऐतबार आदमी उसको उसके नापाक होने के बारे में बतलाए और उसके नापाक होने की वजह बयान करे या सिर्फ़ नापाक होना बयान करे या कोई फ़कीह (आलिम समझदार) ख़बर देने वाले के मुताबिक़ ख़बर दे तो उस पर भरोसा करेगा।

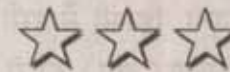
### बर्तन

सोने और चाँदी के बर्तन बग़ैर ज़रूरत के इस्तेमाल करना हराम है और उनके बर्तन बनाना भी अगरचे छोटे बर्तन मसलन सुर्मेदानी ही हो। और सोने के जोड़ (पैवन्द) लगाना सरासर हराम है। और बर्तनों के कोनों के जोड़ में चाँदी लगाना हराम नहीं है मगर ज़्यादा चाँदी बतौर जीनत (ख़ूबसूरती) लगा दी जाए तो हराम है। और सोने चाँदी का पालिश चढ़ाना हलाल (जाइज़) है।

### मिसवाक

**कुदस्ती ख़ासियतें (विशेषताएं), पैदाइशी आदतें**

मिसवाक का इस्तेमाल हर हाल में मुस्तहब (बेहतर) है। और अहम सुन्नत है। वुजू और नमाज़ फ़र्ज़ या नफ़िल के लिये तकबीरे तहरीमा (अल्लाहु अकबर) कहने से पहले और तिलावते कुरआन के वक़्त, और हदीस शरीफ़ और ज़िक़रे इलाही के वक़्त, जब कि दाँतों में ज़र्दी और मैल पैदा हो जाए और घर में दाख़िल होते वक़्त और नौद से बेदार होने पर और सोने से पहले और हर उस वक़्त जबकि मुँह में बदबू पैदा हो जाए मगर रोज़ादार के लिये सूरज के ज़वाल (पतनशील) के बाद से मिसवाक करना मकरूह है। मिसवाक की फ़ज़ीलत (नेकी) हर खुरदुरी चीज़ से हासिल होगी जिससे दाँतों का मैल और पीलाहट दूर की जा सके। अपनी खुद की ऊँगली से नहीं, और मिसवाक के लिये पीलू (इराक) की लकड़ी बेहतर है, फिर खजूर के दरख़्त की लकड़ी हो और बेहतर है कि पानी से गीली की हुई मिसवाक हो और दाँतों की चौड़ाई में मिसवाक करे लेकिन जुबान में लम्बाई में फेरे। और अच्छा है कि नागा करके बालों में तेल लगाए और ताक़ अदद (बेजोड़ गिन्ती) में सुर्मा डाले और मुँछे काटे, और नाखुन तराशे और बग़ल के बाल साफ़ करे और नाफ़ के नीचे के बाल दूर करे और दाढ़ी में कंधी करे और सुख़्ख़ी या ज़र्दी (लाल-पीला रंग) से सफ़ेद बालों में ख़िज़ाब लगाए और शौहर वाली औरत अपने हाथ और पाँव में मेहंदी लगाए। और सर के बालों को कुछ मूँडना और कुछ छोड़ना मकरूह है और सफ़ेद बाल नोचना और पहली बार दाढ़ी के बाल निकलते वक़्त दाढ़ी नोचना मकरूह है। और एक ही जूता (चप्पल स्लीपर) पहनकर चलना और खड़े-खड़े जूते पहनना मकरूह है।



## वुजू

वुजू के फर्ज छै: हैं।

(1) नियत, नापाकी दूर करने या नमाज़ के लिये पाकी की या उसके मिस्ल (या वुजू के अदा करने की नियत या फर्ज वुजू अदा करने की नियत) नियत चेहरा धोते वक़्त करे। सुलसुल बोल वगैरा (पेशाब के क़तरे आते रहना) फ़क़त फर्ज नमाज़ के जाइज़ होने की नियत सही होगी और अगर सुन्नत के लिये वुजू किया तो नमाज़ जाइज़ होने की नियत करे।

(2) पूरे चेहरे का धोना, लम्बाई में ऊपर सर के बालों के उगने की जगह तक और नीचे दाढ़ी के आख़री हिस्से तक और चौड़ाई में दोनों कानों तक। और जबड़े का अगला हिस्सा ठुड़ी पर और पिछला हिस्सा कानों के पास ख़त्म होता है। और पेशानी के लम्बे घने बाल, पलक के बाल (बुच्ची दाढ़ी) खाल और बालों समेत चेहरे के अन्दर दाख़िल हैं अगरचे घनी हो। मर्द के दाढ़ी के बाल और गालों के बाल अगर छिदरे हों तो अन्दरूनी और बाहरी हिस्सा धोना वाजिब है और अगर मर्द की घनी दाढ़ी ऐसी हो कि उसमें से अन्दर की खाल नज़र न आती हो तो दाढ़ी का बाहरी धोना काफी है, और घनी दाढ़ी का ख़िलाल (ऊँगलियाँ डालना) बेहतर है।

(3) दोनों हाथ कोहनियों समेत धोना। हाथों पर जो बाल, गुदूद (गांठ) व ज़ाइद ऊँगलियाँ और नाखून हों।

(4) मसह करना सर के कुछ हिस्से का, सर की खाल का या सर के बालों का जो सर के दायरे में हों।

(5) दोनों पाँव टख़्नों समेत धोना, पाँव की दरार व फटन वगैरा।

(6) तरतीब (अनुक्रम) वुजू में, तक्दीरी जैसा कि गोता लगाया नियत करके तो वुजू हो जाएगी, हिस्सी में इसी तरतीब से हो जैसा कि बयान की गई, अगर निचले अज़ा (अंग) ऊपरी अज़ा से पहले धोए गए

तो काफी नहीं होंगे क्योंकि हिस्सी (महसूस की जाने वाली) तरतीब नहीं हासिल हुई।

## साहिबे ज़रूरत

दाइमुल हृदस (हमेशा नापाक रहने) के वुजू में मवालात (पे दर पे होना) भी वाजिब है। इस्तिस्हाब नियत यानी नियत दिल में हुक्मी तौर पर कायम रहना उसको कहते हैं जबकि नियत ख़त्म करने का इरादा न किया जाए और कोई ऐसा अमल न किया जाए जो नियत के खिलाफ़ हो।

## वुजू की सुन्नतें

मिसवाक करना, बिस्मिल्लाह कहना, सुन्नत वुजू की नियत के साथ हाथ धोने के शुरु के साथ, और बिस्मिल्लाह कहने के बाद वुजू की सुन्नतों की नियत करना और इस्तिस्हाब नियत (नियत बाकी रहना) भी। बिस्मिल्लाह कहना अगर शुरुआत में भूल जाए तो वुजू के दरम्यान भी कह सकता है। "बिस्मिल्लाहि अव्वलहु व आख़िरहु" जिस तरह कि खाने-पीने के शुरु में भूल जाए तो खाने के बीच में भी कहना सुन्नत है। फिर दोनों हाथ पहुँचों तक धोए तीन मर्तबा। ऐसे बर्तन में हाथ डुबोने से पहले जिसमें कुल्लतैन से कम पानी हो अगर हाथों की पाकी में शुबह हो तीन मर्तबा हाथ धोए बगैर कम पानी माए रकीक (पत्ली चीज़) में हाथ डुबोने में कराहत (मकरूह) है, फिर मुँह में पानी लेना, फिर नाक में पानी लेना है। मुँह में पानी लेना और नाक में पानी लेना दोनों को एक ही वक़्त एक साथ और तीन चुल्लू पानी से करना अफ़ज़ल (बेहतर) है। तीन चुल्लू में से हर एक चुल्लू से कुल्ली करे और उसके बाकी पानी से नाक साफ़ करे। मुँह में पानी लेने और नाक में पानी लेने (यानी कुल्ली करने) में ज़्यादाती करना अच्छा है बशर्ते कि रोज़े से न हो। धोने और मसह करने में तीन-तीन बार करना सुन्नत है, और ख़िलाल (ऊँगलियाँ डालना) भी तीन बार करना बेहतर है। वुजू के अज़ा (अंग) धोने में तादाद के बारे में शक हो तो उस तादाद पर अमल किया जाए

जिसके बारे में यकीन हो और तमाम सर का मसह करना, सर से अमामा (पगड़ी) वगैरा न निकालना चाहे तो सर के कुछ हिस्से का मसह करके उसके ऊपर भी मसह की अदाएंगी हो सकती है, पूरे कानों के अन्दर और बाहर दोनों जानिब मसह करना नए पानी से, और दोनों कानों के सूरखों का नए पानी से मसह करे, और सुन्नत है कि हाथ की ऊँगलियों में तश्बीक (एक हाथ की ऊँगलियों को दूसरे हाथ की ऊँगलियों से तरतीब से मिलाने) से खिलाल करे, और पाँव की ऊँगलियों का खिलाल इस तरह करे कि बाएं हाथ की कनकी छोटी ऊँगली दाहने पाँव की छोटी ऊँगली के नीचे डाले और उसी सिलसिले से बाएं पाँव की छोटी ऊँगली पर खत्म करे और पे दर पे (लगातार) इस तरह कि दो अंग (अंग) के धोने में लम्बा फासला न हो, और दाहने हाथ और दाहने पाँव को बाएं हाथ और बाएं पाँव से पहले धोए। चेहरे को धोते वक्त सर का कुछ हिस्सा धोना और हाथों को धोते वक्त बाजुओं का कुछ हिस्सा धोना और पाँव को धोते वक्त पिण्डली का कुछ हिस्सा धोना सुन्नत है। वुजू करते वक्त बगैर उज्ज के पानी डालने में मदद न लेना सुन्नत है। वुजू के पानी को बगैर उज्ज के जिस्म से न पोंछना और न झाड़ना सुन्नत है, और अंगूठी को हरकत देना सुन्नत है। और चेहरे के धोने में चेहरे के ऊपर के हिस्से से शुरु करना सुन्नत है। हाथ और पाँव के धोने में ऊँगलियों से शुरुआत करना सुन्नत है। और अगर किसी दूसरे की मदद से पानी डलवाया तो कोहनी ओर ऐढ़ी से शुरु करे। और अंग (अंग) का रगड़ना सुन्नत है। और आँख के दोनों गोशों (किनारों) का पोंछना सुन्नत है। और वुजू करते वक्त क़िब्ले की तरफ मुँह करके बैठना सुन्नत है। पानी के बर्तन से हाथ डुबोकर पानी लेना हो अगर बर्तन बड़ा हो तो बर्तन को दाहने जानिब और अगर बर्तन को झुकाकर पानी लेना हो तो बाएं जानिब बर्तन रखना सुन्नत है। वुजू में एक मुद (620 ग्राम वज़नी) से कम पानी न सर्फ़ किया जाए, बगैर हाजत के तमाम वुजू में बात न करना सुन्नत है। और चेहरे पर पानी न मारना सुन्नत

है, और गर्दन का मसह सुन्नत नहीं, और वुजू के खत्म होने पर क़िब्ला रुख होकर यह दुआ पढ़ी जाए “अशहदु अल लाइला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू व अशहदु अन न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह, अल्लाहुम्मजअल्ली मिनत्तच्चाबी-न वजअल्ली मिनल मु-त त्वहहिरीन, सुद्धा-न कल्लाहुम म वबि इम्दि-क अशहदु अल लाइला-ह इल्ला अन त अस्तगफिरु-क व अतुबु इलैक, व सल्लल्लाहु अला सैय्यदिना मुहम्मदिव व अला आलिही व सहबिही वसल्लिम” और वुजू के अंग (अंग) की दुआ पढ़ने में हर्ज नहीं है।

**तर्जमा :-** “मैं गवाही देता / देती हूँ कि नहीं कोई इबादत के लायक़ सिवाए अल्लाह तआला के जो एक है उसका कोई शरीक नहीं, और गवाही देता/ देती हूँ कि हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लिम उसके बंदे और रसूल हैं, ऐ अल्लाह मुझको तौबा करने वालों में से बना और मुझको पाक लोगों में बना, मैं पाकी बयान करता/ करती हूँ ऐ अल्लाह तेरी तारीफ़ के साथ गवाही देता/ देती हूँ कि नहीं कोई खुदा सिवाए तेरे, मगरिफ़रत (बख़्शिश) माँगता/ माँगती हूँ तुझसे और तौबा करता/ करती हूँ तेरी तरफ़ और रहमत नाज़िल फ़रमा ऐ अल्लाह हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लिम पर और उनकी आल और उनके सहाबए किराम पर और सलाम भेज”

### वुजू के मकरूहात

वुजू के पानी गिराने में फूज़ूल ख़र्ची, एहराम वाल के लिये गंजान (घनी) दाढ़ी में खिलाल करना, किसी उज्ज (अंग) को तीन से ज़्यादा या तीन से कम मर्तबा धोना, बगैर ज़रूरत के वुजू में गैर से मदद लेना मकरूह है।

### वुजू की शर्तें

**गुस्ल:** यानी नापाकी वगैरा से पाकी, इस्लाम में होना, तमीज़ होना, निका यानी हैज़ व निफ़ास यानी माहवारी वगैरा से पाकी अदमे

हाइल यानी खाल से उस चीज़ का दूर करना जिसकी वजह से पानी पहुँचने में रुकावट हो वुजू में फ़राइज़ और सुन्नत और उनकी जगहों से जानकारी और उनमें फ़र्क, इस बारे में यकीन हो कि वुजू में कुछ चीज़ें फ़र्ज़ और कुछ चीज़ें सुन्नत हैं। इसके फ़र्ज़ों में से किसी मुअय्यन (निश्चित) फ़र्ज़ के सुन्नत होने का अक्दीदा न रखना। मुतलक पानी यानी जो मुकम्मल पाक और पाक करने वाला हो, और नज़र आने वाली नापाकी दूर की गई हो। नज़ासत ऐनी का दूर करना यानी वो नज़ासत जो दिखाई देती हो दलदार हो जिस्म वाली) उसका पाक करना वाजिब है। उज़्व (अंग) पर कोई ऐसी चीज़ न हो जो पानी को बदल दे अपने वुजू की नियत को मुअल्लक (लटकाना) न करे, अपने इरादे को मज़बूत करे, उज़्व (अंग) पर पानी का जारी करना, साहिबे ज़रूरत के वुजू में नमाज़ का वक्त शुरु हो जाना, मवालात (पे दर पे यानी लगातार) वुजू और नमाज़ के दरम्यान।

### ख़ुफ़ैन (मौज़ों) पर मसह

वुजू में दोनों पाँव धोने के बजाए मसह ख़ुफ़ैन (मौज़ों पर मसह) करना जाइज़ है, मसह ख़ुफ़ैन जाइज़ होने की शर्त:-

मुकम्मल पाकी के बाद मौज़े पहने हों, मौज़े पाक हों, मौज़े ऐसे हों जिनको पहनकर चलना फिरना आसान हो, मौज़े पाँव के उस हिस्से को ढाँके जिसका धोना वुजू में फ़र्ज़ है, न कि बाहरी हिस्से में और न ऊपरी हिस्से में, उस पर पानी डाला जाए तो असर न कर सके, इस हुक्म से मौज़े का बालाई (ऊपरी) हिस्सा जिस हिस्से में डोरी बाँधी जाती है अलहदा है।

मुक़ीम (निवासी) एक दिन और एक रात के बाद मसह करके मौज़े निकालेगा, और मुसाफ़िर क़स के सफ़र में तीन दिन और तीन रात मसह करने के बाद मौज़े निकालेगा। मुदत की इब्तिदा (शुरुआत) मौज़े पहनने के बाद के हदस (बे वुजू होने) से होगी, अगर इक़ामत (निवास करने) में मसह करे और सफ़र पर जाए, या सफ़र में मसह करे और

क़याम (निवास) करे तो मुक़ीम के मसह की मुदत पूरी होगी। सुन्नत है कि मसह ऊपरी हिस्से पर, निचले हिस्से पर और पिछले हिस्से पर किया जाए और मसह खुतूत (लकीरों) की शक्ल में किया जाए। एक मर्तबा और मौज़ों के बाहरी और ऊपरी हिस्से पर भी मसह करना वाजिब है।

### वुजू तोड़ने वाली चीज़ें

वुजू तोड़ने वाली चार चीज़ें हैं।

(1) पेशाब पाख़ाने के रास्ते से कोई चीज़ निकले सिवाए मनी के।

(2) अक्ल ग़ायब हो जाए, नींद, पागलपलन या बेहोशी से ये नींद उस नींद के अलावा हो जो नीचे जमकर बैठने में लग गई हो।

(3) अजनबी मर्द और औरत का बदन आपस में बग़ैर किसी आड़ के छू जाए, छूने वाले और छूया हुआ दोनों का वुजू टूट जाता है। लड़का और लड़की हृदे शहवत (जिस्मानी हवस की सीमा) को न पहुँचे हों तो उनसे वुजू न टूटेगा, बाल नाखून और दाँत को छूने से वुजू नहीं टूटेगा, और महरमियत (जिनसे निकाह हराम है), रिश्तए क़राबत (भाई-बहिन वग़ैरा), रज़ाअत (दूध शरीक भाई-बहिन) या मुसाहरत (सुसाली रिश्ते सास ससुर) की वजह से भी वुजू नहीं टूटता।

(4) आदमी की शर्मगाह और उसके पाख़ाने की जगह के हल्के को हाथ के अन्दरूनी हिस्से से छूए तो वुजू टूट जाता है और जिसको छुआ जाए उसका वुजू नहीं टूटता। और मय्यत की और बच्चे की शर्मगाह छूने से वुजू टूट जाएगा, मर्द की पेशाब की शर्मगाह में ज़कर (लिंग) का पूरा हिस्सा दाख़िल है और औरत की शर्मगाह में दोनों तरफ़ के आपस में मिलने वाले किनारे दाख़िल हैं, जानवर की शर्मगाह छूने से वुजू नहीं टूटता है। और ऊँगलियों के सिरे और बाहरी हिस्से और उसके दरम्यानी हिस्से से भी वुजू नहीं टूटता है।

## हृद्से असगर

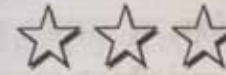
हृद्से असगर यानी बे वुजू होने की हालत में नमाज़ पढ़नी वगैरा, तवाफ़ करना, कुरआन शरीफ़ उठाना और छूना हराम है। कुरआन शरीफ़ उठाना, उसका छूना, जिल्द वर्क या हाशिया ही क्यों न हो, हराम है और उसके जुज़दान (थैली) को लटकाने की रस्सी और वो सन्दूक जिसमें कुरआन है। और कुरआन में हर वो चीज़ दाख़िल है जो कुरआन के तौर पर पढ़ने के लिये लिखी जाए अगरचे कपड़े के टुकड़े पर हो और कुरआन का सामान के साथ खासकर कुरआन को उठाने के इरादे के बगैर जाइज़ है। तफ़सीर की मिक्दार यकीनी तौर पर कुरआन से ज़्यादा हो तो उसका उठाना जाइज़ है और लकड़ी से उसके वर्क को पलटना जाइज़ है। लड़का या लड़की जो अच्छे बुरे की तमीज़ रखने वाली अक्ल की उम्र को पहुँचे हों पढ़ने या सीखने के लिये कुरआन को उठाने और छूने से मना नहीं किये जाएंगे। जिसे तहारत (पाकी) का यकीन हो और हृद्स (बे वुजू होने) के बारे में शक हो, या हृद्स के बारे में यकीन हो और पाकी के बारे में शक हो तो अपने अस्ल यकीन पर बरकरार रहेगा। अगर शक हो कि वुजू टूटा या नहीं तो अस्ल वुजू न टूटने की है। अगर शक हो कि वुजू किया या नहीं तो अस्ल वुजू न करने की है।

## सुन्नत वुजू

(जिन हालात में वुजू करना सुन्नत है)

फ़सद (पछना या सिंगी लगवाने), हज़ामत (बाल कटाने) नकसीर फूटने से वुजू करना मुस्तहब है और ऊँघने व जमके बैठकर सोने पर वुजू करना मुस्तहब है। कै और नमाज़ में कहकहे के साथ हँस दे तो वुजू करना सुन्नत है, और उस चीज़ के खाने पर जिसको आग ने छुआ है और ऊँट का गोशत खाने के बाद और हृद्स (बे वुजू होने) के बारे में शक हो तो वुजू करना सुन्नत है। गीबत, चुगलखोरी, झूठ, गाली गलोच, बुरी

बातें और गुस्से के वक़्त वुजू करना सुन्नत है। सोने के इरादे के वक़्त वुजू सुन्नत है, कुरआन के पढ़ने और हदीस शरीफ़ के बयान करने और ज़िक्र खुदा करने के वक़्त वुजू सुन्नत है। मस्जिद में बैठने और दाख़िल होने के लिये वुजू सुन्नत है। शरीअत का इल्म पढ़ने, पढ़ाने में और ज़्यारते क़ब्र के लिये वुजू करना सुन्नत है, और मय्यत के उठाने और छूने के वक़्त वुजू सुन्नत है।



## ज़रूरत से फ़ारिग़ होने के आदाब

पेशाब और पाख़ाने की ज़रूरत पूरी करने वाले के लिये बेहतर है कि नंगे पाँव न रहे। अपने जूते चप्पल पहन ले और सर को ढ़ाँक ले, और ढ़ेले से इस्तिंजा करने वाला ढ़ेला ले और बैतुल ख़ला (लेट्रीन) में दाख़िल होते वक़्त बायाँ पाँव पहले दाख़िल करे और निकलते वक़्त दाहिना पाँव बाहर निकाले और इसी तरह खुर्ली जगह में ज़रूरत से फ़ारिग़ होने की जगह पहुँचने पर किया जाएगा और किसी ऐसी चीज़ को अपने साथ बैतुल ख़ला में न ले जाए जिस पर अल्लाह का ज़िक्र लिखा हो और ज़रूरत से फ़ारिग़ होते वक़्त बाएँ पाँव का सहारा ले और दाहिने पाँव को खड़ा छोड़े, और अदाएँ हाजत के लिये लोगों से दूर रहना भी बेहतर है, और लोगों की नज़र बचाना भी अच्छा है। और ठहरे हुए पानी में पेशाब न करना चाहिये और न बहते हुए कम पानी में, और न सूराख़ में और न हवा चलने के रुख़ में और न रास्ते में और न फलदार पेड़ के नीचे कि जिसका फल खाया जाता हो और बग़ैर ज़रूरत के बात न करना चाहिये। जिस जगह पर पेशाब व पाख़ाना किया जाए उसी जगह पर पानी से पाकी न की जाए बल्कि जगह बदल दी जाए। और पेशाब से निजात चाहना सुन्नत है, और पेशाब कर लेने के बाद पेशाब से पाकी हासिल करना भी सुन्नत है। और बैतुल ख़ला वग़ैरा में दाख़िल होते वक़्त ये दुआ पढ़ ले:- “अल्लाहुम-म इन्नी अज़ु बि-क मितल ख़ुबुसि वल ख़बाइस” (ऐ खुदा मैं तेरी पनाह माँगता/माँगती हूँ शैतान मर्दों और औरतों के शर से) और फ़राग़त के बाद निकलते वक़्त ये दुआ पढ़े :- “गुफ़रान-क अलहुम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़ह-ब अन्निल अज़ा व अफ़ानी” (तेरी बख़्शाइश है तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है जिसने मेरी तकलीफ़ दूर की और मुझको अफ़ियत (संतुष्टि) दी।) और जब हाजत पूरी करने के लिये बैठे तो क़िब्ले की तरफ़ रुख़ न करे और न पीठ करे। और ये उस हालत में हराम है जब कि इसके और क़िब्ले के दरम्यान पर्दा (आड़) न हो या

छुपाने वाली चीज़ हो मगर बैठने वाले से तीन हाथ से ज़्यादा फ़ासले पर हो, या आड़ हो मगर दो तिहाई (एक फ़ुट) बुलन्द न हो, लेकिन जो जगहें सिर्फ़ इसी के लिये बनाई गई हैं उसमें क़िब्ले की तरफ़ मुँह या पीठ करके बैठना जाइज़ है।

पेशाब-पाख़ाने से फ़ारिग़ होने के आदाब में से है कि न सूरज और न चाँद की तरफ़ मुँह और पीठ करे और हाजत पूरी करते वक़्त एक दम अपने जिस्म से कपड़ा न हटाए जब तक कि बैठने के लिये ज़मीन के क़रीब न हो जाए, और सख़्त ज़मीन पर भी पेशाब नहीं करना चाहिये, और आसमान की तरफ़ न देखना न अपनी शर्मगाह देखना और न उस चीज़ को देखना जो बाहर (पाख़ाना पेशाब) होती है, और न अपने हाथ से बेकार काम करना चाहिये और हाजत पूरी करके उठने से पहले अपने कपड़े धीरे-धीरे छोड़कर बदन ढाकना अच्छा है।

मस्जिद में पेशाब करना अगरचे पेशाब करने के बर्तन में हो, हराम है। और किसी मोहतरम (क़ाबिले एहतेराम) क़ब्र पर पेशाब करना हराम है, और किसी मोहतरम क़ब्र के पास पेशाब करना मकरूह है। और खंडे होकर पाख़ाना पेशाब करना मकरूह है लेकिन किसी परेशानी की वजह से जाइज़ है। और उन जगहों पर जहाँ लोग जमा होते और बैठते हों, मकरूह है। बग़ैर ज़रूरत के बात करना मकरूह है और ज़रूरत पर मकरूह नहीं। अगर छींक आए तो दिल में खुदा की तारीफ़ करे और जुबान से न कहे।

## इस्तिंजा

पेशाब और पाख़ाने की ज़रूरत पूरी करने के बाद हर लिथड़ी हुई मुलाइम गन्दगी के निकलने पर दोनों शर्मगाहों में से एक शर्मगाह को पानी या ढ़ेले या उसके मिस्ल किसी खुशक पाक करने वाली चीज़ और ग़ैर मोहतरम यानी ऐसी चीज़ें जिनमें कोई एहतेराम न हो, से इस्तिंजा वाजिब है। पाकी में अगली और पिछली दोनों शर्मगाह को जमा करना सुन्नत है।

अगरचे कि किसी सूखी नापाक चीज़ से हो तीन बार से कम मर्तबा डेला इस्तेमाल किया गया हो और अगर पानी या डेलों में से किसी एक को लेना हो तो पानी अफ़ज़ल है और सुन्नत है कि बाएं हाथ से इस्तिंजा किया जाए।

**ढेले से इस्तिंजे की शर्तें ये हैं:-** कि निकली हुई नापाक चीज़ खुशक न हो जाए और निकली हुई जगह से दूसरी जगह न गई हो, बाहर की नजासत न लगी हो, नजासत मख़रज (निकलने की जगह) के आसपास फैली न हो और आबदस्त (इस्तिन्जा) के अलावा दूसरा कोई पानी उसको तर न कर दे, डेलों की तादाद तीन हो, डेलों की तादाद में एक ढेले के तीन किनारे भी शामिल हैं, अगर तीन डेलों से नजासत दूर न हो सके तो ज़्यादा डेलों का लेना भी वाजिब है। सुन्नत ये है कि नजासत (नापाकी) दूर करने के बाद भी तीन मर्तबा डेला इस्तेमाल किया जाए और सुन्नत है कि ढेले से पूरी जगह का मसह किया जाए। और सुन्नत है कि पाख़ाना अगर पानी से धोया जाए तो बीच की ऊँगली का सहारा लिया जाए और सुन्नत है कि पहले पेशाब की जगह धोई जाए उसके बाद पाख़ाने की जगह। हाजत से फ़ारिग होने के बाद हाथ मिट्टी वगैरा से धोना सुन्नत है और इसके बाद अपनी शर्मगाह और पांजामे पर पानी छिड़कना भी सुन्नत है और इस्तिंजे के बाद ये दुआ पढ़ना सुन्नत है:- “अल्लाहुम-म तहहिर कल्बी मिननिफ़ाकि व हस्सिन फ़रजी मिनल फ़वाहिश” (ऐ खुदा मेरे दिल को मुनाफ़िक होने की आदतों से پاک रख और मेरी शर्मगाह को हरामकारी से बचा।)

### गुस्ल वाजिब करने वाली चीज़ें

मौत, हैज़ (माहवारी), निफ़ास, बच्चा जनना (ज़च्चा होना) अगरचे अल्का (जमा हुआ खून) व मुद्ग़ा (कच्चा बच्चा) बग़ैर रतूबत के हो और नापाक मनी (वीर्य) का ख़ारिज होना और मनी की पहचान की निशानियाँ ये हैं “मनी कूदकर या जोश या लज़्ज़त के साथ ख़ारिज हो या

उसमें गूँदे हुए आटे की सी बू हो या खुशक मनी में अण्डे की सफ़ेदी की सी बू हो और मर्द का हश्फ़ा (सर लिंग सुपारी) या इस क़द्र लिंग का हिस्सा किसी फ़र्ज यानी शर्मगाह में दाख़िल करने से अगर पाख़ाने के मक़ाम या मय्यत के फ़र्ज (शर्मगाह) या जानवर के फ़र्ज में दाख़िल करे, और अपने कपड़े या बिस्तर पर मनी देखे जिस बिस्तर पर इसके अलावा कोई नहीं सोया था।”

बे वुजू की हालत में जो चीज़ें हराम हैं वो नापाकी (ज़रूरते गुस्ल की हालत में) की हालत में भी हराम हैं। और मस्जिद में ठहरना और मस्जिद में चलना-फिरना ठहरने के बराबर है सिवाए किसी ज़रूरत के, और क़ुरआन का पढ़ना तिलावत के लिहाज़ से हराम है।

### गुस्ल का तरीका

फ़र्ज गुस्ल की कम से कम नियत “नवैतु र फ इल जनाबति” या “नवैतु फ़ र द्विल गुस्ल” (मैं फ़र्ज गुस्ल की नियत करता / करती हूँ) और बदन की तमाम ज़ाहिरी खाल और बालों पर पानी पहुँचाना, और वाजिब है नियत का साथ होना फ़र्ज गुस्ल के शुरु करने के साथ जबकि बदन का ऊपरी या निचला हिस्सा जो सबसे पहले धोया जाए नियत की जाए, गुस्ल की शुरुआत के लिये बदन के ऊपरी हिस्से और निचले हिस्से में कोई फ़र्क़ नहीं है। जिस किसी हिस्से बदन के धोने से फ़र्ज गुस्ल शुरु किया जाए उसी वक़्त नियत की जाए।

### गुस्ल की सुन्नतें

किब्ले की तरफ़ रुख़ करना, जुबान से तस्मिया (बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम) कहना, दिल में नियत करना, दोनों हाथों को पहले धोना, नजासत (गन्दगी) साफ़ करना, वुजू करना, गोशे (कोने), शिकनें (सिलवटें) और झुर्रियाँ एहतेयात के साथ धोना, बालों की जड़ों में पानी पहुँचाने के लिये ख़िलाल (ऊँगलियाँ) करना, सर पहले धोना, फिर दाहनी जानिब धोना, उसी तरह बाई जानिब धोना और तीन-तीन मर्तबा

धोना भी सुन्नत है। और हर मर्तबा बदन पर हाथ फेरना, नियत का ख़याल दिल में कायम रहना नियत ख़त्म करने का इरादा न किया जाए। गुस्ल पर एक साअ (2480 ग्राम वज़न) से कम पानी खर्च न करना सुन्नत है और जो औरत शौहर की वफ़ात (मौत) की इद्दत नहीं गुज़ार रही हो हैज़ (एम.सी.) वगैरा के गुस्ल के बाद उसका शर्मगाह में मुश्क (खुशबू का फाया) रखना फिर अगर खुशबू मयस्सर न हो तो चिकनी मिट्टी से धोना और अगर ये भी न मिले तो पानी से धोना ही काफी है, और सुन्नत है कि पेशाब करने से पहले मनी निकलने का गुस्ल न करे, और गुस्ल से फ़ारिग होने के बाद सुन्नत हुआएं जो वुजू के बाद हैं पढ़ें और गुस्ल करने में दूसरे से मदद न ले।

### गुस्ल के मकरूहात

मकरूह है गुस्ल में ज़्यादा पानी बहाना, ठहरे हुए पानी में वुजू और गुस्ल करना, तीन से ज़्यादा मर्तबा धोना, कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाने को छोड़ना, नापाक के लिये शर्मगाह धोने से पहले और वुजू करने से पहले खाना, पीना, सोना और हमबिस्तरी करना। इसी तरह हैज़ (एम.सी.) और निफ़ास ख़त्म होने पर मकरूह है गुस्ल से पहले।

### नजासत (नापाकी)

शराब, नबीज़ यानी अंगूर या खजूरों को निचोड़कर बनाई हुई शराब कुत्ता और सुअर और इन दोनों में से किसी एक के मेल मिलाप से पैदा हुआ जानवर नापाक है। मरा हुआ जानवर पूरा नापाक है सिवाए आदमी, मछली, और टिट्ठी के जो मरने के बाद भी पाक हैं। खून, पीप, कै, लीद, पेशाब, मज़ी (सफ़ेद पतला मादा) वदी (पेशाब पाख़ाने के वक़्त निकलने वाला मादा) और सोने वाले के मुँह से जो पानी (राल) तब्दील होकर बहे (निकले) वे भी नजिस (नापाक) है। कुत्ते सुअर और इन दोनों में किसी एक के मेल मिलाप से पैदा हुए जानवर की मनी नापाक है और जिस जानवर का गोश्त खाया नहीं जाता उसका दूध भी नापाक है

सिवाए आदमी के और अलका (जमा हुआ खून), मुद्ग़ा (कच्चा बच्चा) और फ़र्ज (शर्मगाह) की रतूबत (तरी) सब पाक हैं, जिस्म का टुकड़ा जो ज़िन्दा जानवर से काटा जाए वो मुरदार है मगर खाए जाने वाले जानवर के बाल, पर ऊन और रुआँ सब पाक हैं।

नापाक चीज़ों में से कोई चीज़ बदल जाने से पाक नहीं होती सिवाए तीन चीज़ों के शराब जबकि वह खुद सिरका बन जाए तो अपने बर्तन के साथ पाक है और मौत से नापाक हुई खाल का ज़ाहिर व बातिन दबाग़त से पाक हो जाता है और जैसे कि मरा हुआ कीड़ा जानदार मरा हुआ (मुर्दा) हैवान (जानदार) हो जाए तो वो पाक है।

### नजासत (नापाकी) दूर करने का तरीका

नजासते मुग़ल्लज़ा का इज़ाला यानी गाढ़ी, भारी गन्दगी का पाक करना, बदन लिबास और बर्तन जो कुत्ते या उसके लुआब वगैरा की रतूबत (तरी) से नापाक हो जाएँ उसको सात बार पाक पानी से धोया जाए जिसमें एक बार पाक मिट्टी इस्तेमाल की जाए, बेहतर तो यह है कि पहली बार के धोने में मिट्टी का इस्तेमाल किया जाए वरना आख़री बार धोने से पहले मिट्टी इस्तेमाल की जाए। और सुअर कुत्ते के हुक्म में शामिल है और कमसिन (छोटे) लड़के के पेशाब से जो चीज़ नापाक हो जाए जो सिवाए दूध के खाता पीता न हो उस बच्चे के पेशाब पर पानी छिड़का जाए और इसके अलावा जो दूसरी गन्दगी से नापाक हो जाए अगर वो नजासते ऐनी (जो नजासत देखी जाए या जिसमें ज़ाइका, रंग, बू या दलदार हो) तो नजासते ऐनिया (एहसास वाली गन्दगी) को दो मर्तबा धोना वाजिब है। एक तो उस नजासत का साफ़ करना कि अस्ल दलदार ख़त्म हो और उसके ज़ाइके, रंग व बू के दूर करने की भी कोशिश करे। रंग व बू दोनों या तन्हा ज़ाइका बाकी रह जाए तो पाकी हासिल न होगी और अगर रंग व बू बाकी रह जाए तो पाकी हासिल न होगी और अगर रंग व बू बाकी रह जाए कि जिसका ख़त्म करना दुश्वार हो अगर कोशिश के

बावजूद बाकी रह जाएं तो हरज नहीं।

**इज़ालए नजासत हुक्मी और गुसाला यानी हल्की गन्दगी को दूर करने का तरीका :-** और अगर वो नजासत (गन्दगी) जो आँख से देखी न जाए कि नजासत का अस्ल जिस्म (दलदार) न हो तो उस पर पानी एक बार बहा देना काफी है। पानी थोड़ा हो तो उसको नापाकी पर डालने की शर्त है। गुसाला (नजासत की जगह के धोए हुए पानी को कहते हैं) गुसाला जो अलग थोड़ा और बदला हुआ न हो और उसका वज़न ज़ाहिर मैल (पाक मैल कुचैल) की वजह से ज़्यादा न हुआ हो और नजासत की जगह पाक हो गयी हो तो पाक है।



## तयम्मुम

मुहदिस (बे वुजू) और जुनुबी (जिस पर गुस्ल वाजिब हो) पानी न मिलने, उसके इस्तेमाल से सर्दी का अन्देशा और बीमारी का ख़तरा हो तो वुजू और गुस्ल के बदले तयम्मुम कर सकते हैं। अगर पानी न मिलने का यकीन हो जाए तो पानी की तलाश के बग़ैर तयम्मुम करे और अगर पानी मिलने का ज़रा भी वहम व गुमान हो या पानी मिलने न मिलने के बारे में शक हो तो पानी की तलाश की जाए। अपने ठहरने की जगह में और अपने साथियों के पास अगर तन्हा हो और खुला हुआ मैदान हो तो मैदान में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई जाए, बअज़ ने इसकी हद कमान से तीर निकलकर पहुँचने की बताई है, इस पर भी पानी न मिले तो तयम्मुम करे। और अगर पानी मिलने का यकीन हो तो पानी की तलाश वाजिब है। पानी के करीब होने की हद छै हज़ार क़दम (डेढ़ मील) है और अगर पानी का फ़ासला हृदे करीब से ज़्यादा हो तो तयम्मुम करे और अगर नमाज़ के आख़री वक़्त तक पानी के हासिल होने का यकीन हो तो नमाज़ की ताख़ीर (देर) बेहतर है।

दूरी की हद और करीब की हद तक पानी की तलाश करना वाजिब है बशर्ते कि जान व माल के लिये कोई ख़तरा न हो और साथियों के छूट जाने का अन्देशा न हो और नमाज़ का वक़्त निकल जाने का डर न हो वरना पानी तलाश करे और अगर पानी थोड़ी मिक्दार में हो कि तहारत (पाकी) के लिये काफी न हो तो उसका इस्तेमाल कुछ हिस्सों (अंगों) में वाजिब है फिर उसके इस्तेमाल के बाद बाकी हिस्से (अंग) के लिये तयम्मुम करेगा। नमाज़ का वक़्त दाख़िल होने के बाद पानी का (मुनासिब) कीमत मिस्ल से ख़रीदना उसको वाजिब होगा अगर वो क़र्ज़ में डूबा हुआ न हो या उसकी अपने सफ़र ख़र्च के लिये ज़रूरत हो या हैवान (जानवर) मोहतरम (वो हैवान जिसका क़त्ल करना जाइज़ न हो) के चारे पानी के ख़र्च के लिये ज़रूरी न हो (मोहतरम जानवर में खाया जाने वाला और न

खाया जाने वाला दोनों दाखिल हैं।)

वुजू के पानी को बतौर हिबा (दान) और डोल का ज़रूरत के तौर पर भी माँगना वाजिब होगा न कि उसकी कीमत बतौर हिबा (बख्शिश) क़बूल करना न कि पानी की कीमत या डोल की उजरत की कीमत का हिबा (दान) क़बूल करना ज़रूरी है। और अगर मोहतरम हैवान या सवारी के जानवर के लिये उस पानी की ज़रूरत हो तो पानी की मौजूदगी के बावजूद तयम्मूम किया जाएगा अगरचे कि आइन्दा पानी की ज़रूरत हो तो तयम्मूम वाजिब है।

पानी के इस्तेमाल से कोई मर्ज़ (बीमारी) पैदा हो, किसी मर्ज़ में ज़्यादाती हो, सेहतयाबी में देर हो या किसी ज़ाहिरी अंग में बदनुमा ऐब पैदा करे। और मामूली जाड़े की वजह से तयम्मूम नहीं किया जा सकता अलावा इसके कि अज़ा (अंगों) को गरमाने के लिये कोई चीज़ फ़ायदेमन्द न हो और उस पानी को गर्म करने के लिये कोई चीज़ बर्तन, ईंधन और आग हासिल होती हो और पानी के इस्तेमाल से किसी उज़्व (अंग) के बेकार हो जाने का ख़ौफ़ हो या किसी उज़्व (अंग) में बदनुमा ऐब पैदा करे। अगर बदन के बअज़ अंगों पर पानी के इस्तेमाल से तकलीफ़ का ख़ौफ़ हो तो सही अंगों का धोना और ज़ख़मी अंगों के बदले चेहरे और हाथों का तयम्मूम करना वाजिब है। और जनाबत (गुस्ल की ज़रूरत) की सूरत में इन दोनों (तयम्मूम व गुस्ल) के दरम्यान कोई तरतीब (क्रम) नहीं है जो चाहे पहले करे लेकिन हद्स (बे वुजू) की सूरत में तयम्मूम उस वक़्त करे जबकि बीमार ज़ख़मी अंग के धोने का वक़्त आए। और अगर उस उज़्व पर पट्टी, फाया रखा हो जिसके नीचे का सही हिस्सा धोना बग़ैर उसके निकाले दुश्वार हो तो उसका निकालना वाजिब है और अगर पट्टी या फाए का निकालना दुश्वार हो तो उसके आसपास की सही जगह को धोए और उस पर पानी का मसह करे और पट्टी के नीचे ज़ख़मी हिस्से के बदले तयम्मूम करे चेहरे और दोनों हाथ का। जब ग़ैर

पाकी में पट्टी बाँधी गई हो और निकालना आसान हो तो क़ज़ा वाजिब है और जब जाड़े की वजह से तयम्मूम किया तो उसकी भी क़ज़ा करेगा या जब मुकीम (निवास) हालत में पानी न मिलने पर तयम्मूम करे और मुसाफ़िर अपने सफ़र में तयम्मूम करके नमाज़ पढ़े तो उसकी क़ज़ा करना वाजिब है जब कि सफ़र गुनाह के लिये न हो।

### तयम्मूम की शर्तें

तयम्मूम की दस शर्तें हैं। पहली शर्त तयम्मूम मिट्टी से किया जाए। दूसरी शर्त मिट्टी पाक करने वाली हो। तीसरी शर्त वो इस्तेमाल की हुई न हो, उस मिट्टी से तयम्मूम सही नहीं जो गन्दगी दूर करने के लिये इस्तेमाल कर ली गई हो। चौथी शर्त तयम्मूम की मिट्टी में आटा वगैरा मिला हुआ न हो। पाँचवीं शर्त तयम्मूम के लिये मिट्टी लेने का इरादा करे, अगर हवा ने गर्द व गुबार उड़ाकर लाई और उसने नियते तयम्मूम से अपने चेहरे और हाथों पर मल लिया तो काफी न होगा। छठी शर्त तयम्मूम दो मर्तबा हाथ मारने से होता है, एक मर्तबा चेहरे के लिये और दूसरी मर्तबा हाथों के लिये। मसह के लिये दो मर्तबा मिट्टी पर हाथ मारना फ़र्ज़ है। सातवीं शर्त तयम्मूम से पहले नजासत साफ़ करना। आठवीं शर्त नमाज़ के लिये तयम्मूम से पहले क़िब्ला रुख़ का ग़ौर व फ़िक्र ज़रूरी है, क़िब्ला रुख़ के बारे में ग़ौर व फ़िक्र से पहले तयम्मूम किया गया तो बेहतर मज़हब पर सही न होगा। नवीं शर्त जिस नमाज़ के इरादे से तयम्मूम करना हो उस नमाज़ का वक़्त हो जाने पर किया जाएगा। दसवीं शर्त हर फ़र्ज़ नमाज़ के लिये अलग तयम्मूम किया जाए।

### तयम्मूम के रुक़्त (फ़र्ज़)

तयम्मूम में पाँच चीज़ें फ़र्ज़ हैं। पहला फ़र्ज़ नक़ल यानी मिट्टी को मसह के उज़्व (अंग) को एक जगह से दूसरी जगह (स्थांतरित) करना है। दूसरा फ़र्ज़ नमाज़ के मुबाह (जाइज़) होने की नियत और नियत को पहली मर्तबा हाथ मारते वक़्त ज़हन में रखना वाजिब है। और चेहरे के किसी हिस्से का मसह करते वक़्त नियत का कायम रखना भी वाजिब है।

फ़र्ज नमाज़ की नियत के साथ तयम्मुम किया जाए तो फ़र्ज और नफ़िल दोनों नमाज़ें पढ़ी जा सकती हैं। अगर नफ़िल नमाज़ की नियत के साथ तयम्मुम किया जाए या सिर्फ़ नमाज़ या नमाज़े जनाज़ा की नियत के साथ तयम्मुम किया जाए तो उससे फ़र्ज नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती। तीसरा फ़र्ज चेहरे के ज़ाहिर का मसह करना। चौथा फ़र्ज हाथों का कोहनियों समेत मसह करना। पाँचवाँ फ़र्ज दोनों मसह के दरम्यान तरतीब (अनुक्रम) का होना। पहले चेहरे का मसह और बाद में हाथों का मसह करना वाजिब है।

### तयम्मुम की सुन्नतें

तयम्मुम करते वक़्त बिस्मिल्लाह कहना सुन्नत है। दाहिने हाथ का मसह बाएं हाथ से पहले करना सुन्नत है। चेहरे के ऊपरी हिस्से का मसह निचले हिस्से से पहले करना भी सुन्नत है। मिट्टी का हथेलियों से झाड़कर कम करना सुन्नत है। पे दर पे यानी लगातार बिना अ़लाहदगी के मसह करना सुन्नत है। ऊँगलियों को मिट्टी पर हाथ मारते वक़्त खुली रखना सुन्नत है। अंगूठी को मिट्टी पर पहली मार के वक़्त निकाल देना सुन्नत है, लेकिन दूसरी मार के वक़्त अंगूठी का निकालना वाजिब है। एक इज़्ब (अंग) के मसह के दरम्यान हाथ को न उठाना सुन्नत है। हाथ के मसह करते वक़्त बाजू के कुछ हिस्से का मसह करना सुन्नत है और मसह में तक़रार (बार-बार करना) नहीं है, क़िब्ला रुख़ होकर तयम्मुम करना सुन्नत है। तसबीह और दुआ जो वुज़ू के बाद पढ़ी जाती हैं तयम्मुम के बाद भी सुन्नत हैं।

### फ़ाकिदुल्लुहुरैन यानी दौनों पाक चीज़ें न पाने वाला

जिस शख्स के पास तहारत (पाकी) के लिये न पानी हो और न मिट्टी ऐसे शख्स के लिये ये हुक्म है कि फ़र्ज नमाज़, हुर्मते वक़्त (वक़्त के ख़त्म होने के) के लिहाज़ से वक़्त में अदा करे और जब पानी या मिट्टी मिल जाए तो उस नमाज़ को दोहराए।

### हैज़ (माहवारी)

माहवारी (जो ख़ून औरत के आगे की शर्मगाह से निकले) की मुद्दत कम से कम एक दिन और एक रात और ज़्यादा से ज़्यादा पन्द्रह दिन और आमतौर पर छैः या सात दिन है। औरत को कम से कम नौ साल की उम्र में हैज़ (एम.सी.) आ सकता है। और दो हैज़ों के दरम्यान पाकी की मुद्दत कम से कम पन्द्रह दिन है। जनाबत (नापाकी) की हालत में जो चीज़ें हराम हो सकती हैं वो हैज़ की हालत में भी हराम हैं। इसके अ़लावा मस्जिद से गुज़रना अगर गन्दगी होने का ख़ौफ़ हो, रोज़ा, नमाज़, तलाक़ और औरत के बदन के उस हिस्से से लज़्ज़त हासिल करना जो नाफ़ और घुटने के दरम्यान है, हराम है। और औरत पर हैज़ की हालत में जो रोज़ा फ़ौत (क़ज़ा) हो जाता है उसका क़ज़ा करना वाजिब है मगर फ़ौत शुदा नमाज़ की क़ज़ा वाजिब नहीं।

### इस्तेहाज़ा (ख़राब ख़ून)

मुस्तहाज़ा यानी वो औरत जिसके आगे की शर्मगाह से हैज़ व निफ़ास (बच्चा पैदा होने के बाद आने वाले ख़ून) के अ़लावा ख़राब ख़ून निकले औरत अपनी शर्मगाह को धोए कपड़ा या रूई रखकर ढाटा बाँधे लेकिन अगर सोज़िश (जलन) हो या रोज़े से हो तो कपड़ा या रूई अन्दर न रखे बाहर कपड़ा या रूई रखकर ढाटा बाँधे। और वुज़ू करे या तयम्मुम करे और बग़ैर देर किये नमाज़ पढ़े और अगर बग़ैर मस्तेहत नमाज़ में देर को तो दोबारा नए सिरे से पाकी हासिल करना वाजिब होगा। और हर फ़र्ज नमाज़ के लिये कपड़े या रूई का बदलना ज़रूरी होगा। और साहिबे ज़रूरत यानी ऐसा शख्स जिसको हृद्स (बे वुज़ूई) का सिलसिला जारी रहता हो जैसे कि सुलसुल बोल (पेशाब के क़तरे आते रहना) और मज़ी तो ऐसे शख्स के लिये उसी औरत के मिस्ल करना होगा।

### निफ़ास (ज़च्चगी ख़ून)

निफ़ास (बच्चा पैदा होने के बाद औरत के आगे की शर्मगाह से जो ख़ून निकले) की मुद्दत कम से कम एक लम्हा और ज़्यादा से ज़्यादा साठ दिन और ज़्यादातर चालीस दिन है। जो चीज़ें हैज़ की हालत में हराम होती हैं वही निफ़ास की हालत में भी हराम होती हैं।

## नमाज़

**नमाज़ के वाजिब होने की शर्तें :-** नमाज़ वाजिब है हर मुसलमान, बालिग, अक्लमन्द, पाक पर, काफिर असली पर पहली नमाज़ों की क़ज़ा वाजिब नहीं, लेकिन मुर्तद यानी जो मुसलमान होने के बाद काफिर हो जाए उस पर छूटी नमाज़ें वाजिब हैं (अगर मुसलमान हो जाएं) और बच्चों पर नमाज़ वाजिब नहीं। और हैज़ व निफ़ास की हालत में औरत पर नमाज़ वाजिब नहीं है। हैज़ व निफ़ास की हालत में जो नमाज़ें नागा हों उनका क़ज़ा करना वाजिब नहीं है। और मजनून (पागल) पर नमाज़ वाजिब नहीं है और जिस शख्स पर बेहोशी तारी हो जाए या बेहोश हो जाए उस पर भी नमाज़ वाजिब नहीं है, लेकिन जिसने खुद से नशा किया हो वो अपने नशे की वजह से ज़्यादाती करने वाला है उस पर अपने नशे के ज़माने की छोड़ी हुई नमाज़ों की क़ज़ा करना वाजिब है।

बच्चे के वली (सरपरस्त) और गुलाम के आका पर वाजिब है कि समझ वाले बच्चे को सात साल की उम्र में नमाज़ का हुक्म दे और जब दस साल का हो जाए तो मारे और सख्ती करे अगर वह प्यार से नमाज़ न पढ़े। और बच्चा या बच्ची बालिग हो जाए या मजनून (पागल) हो जाए और बेहोशी तारी हुई फिर शिफा पाए, या काफिर इस्लाम लाए या हैज़ वाली औरत हैज़ से या ज़च्चा औरत निफ़ास से पाक हो जाए। नमाज़ का वक़्त निकल जाने से पहले अगरचे तकबीरे तहरीमा कहने की गुंजाइश का वक़्त रह गया हो तो उस वक़्त की नमाज़ का क़ज़ा करना वाजिब है बशर्ते कि नमाज़ के मना करने वाले सबब बाकी न रह गए हों और वक़्त में इतनी गुंजाइश हो कि तहारत (गुस्ल-वुज़ू) कर सकें और नमाज़ अदा करें, और उस नमाज़ की क़ज़ा भी वाजिब है जो उसके पहले की है अगर उसको उसके साथ जमा की गई हो मसलन ज़ोहर अस्म के साथ और मगरिब इशा के साथ बशर्ते कि नमाज़ के रोकने वाले सबब बाकी न रह गए हों और वक़्त में गुंजाइश हो कि दो फ़र्ज़ नमाज़ (क़स और जमा) अदा कर सकें

और पाकी कर सके। और अगर बालिग दीवाना हो गया या औरत को माहवारी आ गई, या किसी पर बेहोशी तारी हो गई नमाज़ के अव्वल वक़्त में (या नमाज़ के दरम्यान वक़्त में) तो उस वक़्त के नमाज़ की क़ज़ा वाजिब है, अगर नमाज़ के वक़्त से इतनी गुंजाइश थी कि पाकी हासिल करके फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ सकता है अगरचे कि उस पाकी को पहले करना मुम्किन न था (जैसा कि तयम्मुम और सुलसुल बोल की पाकी) इसलिये कि उस नमाज़ के इतने वक़्त को पाया है जिसमें उसको अदा करना मुम्किन है।

## नमाज़ के वक़्त

जुहर का अव्वल वक़्त सूरज के ज़वाल के बाद शुरू होता है और उसका आख़री वक़्त जब कि हर चीज़ का साया, असली साए के अलावा मिस्ल (उसी तरह) के साए के बराबर हो जाए जुहर का वक़्त ख़त्म हो जाता है। जुहर का वक़ते फ़ज़ीलत (बेहतर) उसका अव्वल वक़्त है, फिर उसका आख़िर वक़्त वक़ते इख़्तियारी है।

अस्म का अव्वल वक़्त, जुहर का वक़्त ख़त्म होते ही अस्म का वक़्त शुरू होता है। अस्म की नमाज़ के चार वक़्त हैं। वक़ते फ़ज़ीलत (बेहतरीन) अव्वल वक़्त है। वक़ते इख़्तियारी दो मिस्ल (डबल) साए तक है फिर वक़ते जाइज़ सूरज में ज़र्दी (पीलापन) आने तक है। फिर वक़ते मकरूह (जाइज़ होने के साथ) उस वक़्त शुरू होता है जब कि सूरज में ज़र्दी आए और ये वक़्त सूरज के गुरुब के करीब आने तक रहता है।

मगरिब का अव्वल वक़्त सूरज के गुरुब (सूर्य अस्त) के बाद है और शफ़क़ (आसमान के किनारे) की सुर्खी ग़ायब होने तक मगरिब का वक़्त रहता है।

इशा का अव्वल वक़्त शफ़क़ की सुर्खी के ग़ायब होने के बाद शुरू होता है, इशा के तीन वक़्त हैं। वक़ते फ़ज़ीलत (बेहतरीन) अव्वल वक़्त ही है। वक़ते इख़्तियारी एक तिहाई रात गुज़रने तक है। वक़ते जाइज़

बिला कराहत सुबह काजिब (शुरु सहर) तक है। वक़्त जाइज ब-कराहत सुबह काजिब के साथ शुरु होता है और उस वक़्त तक रहता है जबकि नमाज़ पढ़ने की गुंजाइश रहे (यानी ख़त्म सहर तक) और वक़्त हराम वो तंग वक़्त है जबकि नमाज़ की गुंजाइश न रहे सुबह सादिक (वक़्त फ़ज़्र) के तुलूअ यानी आने तक है।

सुबह सादिक (फ़ज़्र सादिक) उस वक़्त को कहते हैं जबकि सुबह काजिब (वक़्त सहर) की स्याही के बाद रौशनी मशरिकी उफ़क़ (आसमान के पूर्वी किनारे) से अर्ज (चौड़ाई) में शिमाल (उत्तर) और जुनूब (दक्षिण) दोनों तरफ़ फैलती है और वही सुबह का अव्वल वक़्त है। सुबह की नमाज़ के चार वक़्त हैं। वक़्त फ़ज़ीलत अव्वल वक़्त है। वक़्त इख़्तियारी वक़्त अव्वल से शुरु होता है और सुबह की रौशनी निकलने तक जारी रहता है। वक़्त जाइज, वक़्त अव्वल से शुरु होता है मगर सूरज के निकलने से पहले सुर्खी के नमूदार होने तक जारी रहता है। वक़्त जवाज़ ब-कराहत सुर्खी के नमूदार होने पर शुरु होता है और सूरज के तुलूअ (उदय) होने के करीब तक जारी रहता है।

मग़रिब की नमाज़ का नाम इशा और इशा की नमाज़ का नाम अत्मा रखना मकरूह है। इशा की नमाज़ से पहले सोना और इशा के बाद बेकार और फ़ाल्तू गुफ़्तगू करना मकरूह है। अलबत्ता नेक बातों की और ज़रूरत के मुताबिक़ गुफ़्तगू की इजाज़त है।

हर एक नमाज़ का अव्वल वक़्त में पढ़ना अफ़ज़ल (बेहतर) है बशर्ते कि वक़्त होने के बारे में यकीन हो अगर नमाज़ से पहले ज़रूरियाते नमाज़ की तकमील (पूर्ती) में वक़्त खर्च किया जाए तो भी फ़ज़ीलत (बरकत) हासिल होगी। गर्म मुल्कों में गर्मी के मौसम में जुहर की नमाज़ मस्जिद में देर करके पढ़ना मुस्तहब (बेहतर) है ताकि दीवारों के नीचे साया पैदा हो और जमाअत की नमाज़ के लिये मस्जिद आने वालों को

साए में चलने की सुहूलत हासिल हो उसको इबराद कहते हैं। जुमे में इबराद (ठंडा करना) नहीं है और अ़री (नंगे) के लिये नमाज़ के आख़री वक़्त तक सतर (कपड़ा) पाने के बारे में यकीन हो तो नमाज़ में देर करना सुन्नत है कि लिबास पहनकर आख़री वक़्त नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल (बेहतर) है। और उस शख्स के लिये नमाज़ में देर करना सुन्नत है जिसको आख़िर वक़्त जमाअत से नमाज़ पढ़ने के बारे में यकीन हो और य़ही अगर उसे गुमान हो कि ज़्यादा ताख़ीर (देर) न करके भी जमाअत पाएगा तो ताख़ीर (देर) करना सुन्नत है वरना पहले पढ़ना अफ़ज़ल है। पानी, सतर (कपड़ा) या जमाअत के इन्तेज़ार में नमाज़ में देर करना सुन्नत है और बदली की वजह से नमाज़ में ताख़ीर करना सुन्नत है बशर्ते कि वक़्त के दाख़िल होने का यकीन हो जाए या नमाज़ के क़ज़ा हो जाने का ख़ौफ़ हो, अगर वक़्त के अन्दर एक रकअत अदा हो जाए तो पूरी नमाज़ अदा हो जाएगी वरना क़ज़ा होगी। नमाज़ को इस क़द्र ताख़ीर (देर) से पढ़ना कि नमाज़ का बअज़ रुक्न (फ़र्ज) नमाज़ के वक़्त से बाहर अदा हो हराम है।

### इजतेहादे वक़्त (वक़्त के लिये ग़ौर-फ़िक्र करना)

अगर अब्र (बदली) की वजह से या किसी अंधेरे मकान (कमरे) में क़ैद किया गया जिसकी वजह से वक़्त का तमीज़ करना दुश्वार हो तो अपने ज़ाती इल्म (निजी ज्ञान) पर अमल करे या भरोसे के काबिल शख्स के बयान पर अमल करे, खुद इजतेहाद (कोशिश) करे या दूसरे शख्स के इजतेहाद (ग़ौर-फ़िक्र) की पैरवी करे। काबिले ऐतमाद ख़बर में मुअज़्ज़िन की वो अज़ान भी दाख़िल है जो ग़ैर अब्र आलूद यानी साफ़ आसमान की हालत में दी जाए या मुर्गे की वो बाँग़ कि वो अज़ान के वक़्त ही बाँग़ देता हो और अगर ज़िक्र की गई बातों में से कोई बात न पाए

तो इजतेहाद (गौर-फिक्र) करके वक्त दरयाप्त किया जाए, और नाबीना (अंधा) शख्स को मुअत्बर शख्स की पैरवी और इजतेहाद (गौर-फिक्र) में इख्तियार दिया गया है। इजतेहाद करके नमाज़ पढ़ने के बाद मालूम हुआ कि नमाज़ वक्त से पहले पढ़ी गई तो उस नमाज़ की कज़ा करे।

फ़ौत शुदा (क़ज़ा) नमाज़ के पढ़ने में जल्दी सुन्नत है। फ़ौत शुदा नमाज़ को मौजूदा (फ़िलहाल अदा नमाज़) से पहले पढ़ना भी सुन्नत है बशर्ते कि हाज़िर नमाज़ के लिये वक्त बाकी रहे, अगरचे कि हाज़िर नमाज़ की जमाअत छूट जाने का अन्देशा हो। फ़ौत शुदा नमाज़ के पढ़ने में जल्दी वाजिब है अगर किसी इज़ के बग़ैर क़ज़ा हो जाए।

### मकरूह वक्त

मक्का शरीफ़ के हरम के अलावा इन वक्तों में नमाज़ पढ़ना हराम (मकरूहे तहरीमी) है। सूरज तुलूअ (सूर्य उदय) होते वक्त, पूरे तौर पर तुलूअ होने के बाद यहाँ तक कि सूरज एक नेज़े के बराबर बुलन्द हो जाए, वक्ते इस्तवा यानी आसमान के बीच में सूरज के होने के वक्त सिवाए जुमे के रोज़ यहाँ तक कि सूरज आसमान के बीच से मगरिब (पश्चिम) की तरफ़ ढल जाए और सूरज का वक्त ज़र्दी आ जाने से सूरज के गुरुब तक, और नमाज़े सुबह के बाद से सूरज के तुलूअ होने तक और नमाज़े अस्त्र के बाद से सूरज के गुरुब (अस्त) होने तक नमाज़ पढ़ना मकरूह तहरीमी है। और वो नमाज़ पढ़ना हराम (मकरूहे तहरीमी) नहीं है जिसका सबब इससे ग़ैर मुतअख़ि़र (पहले या मिला हुआ) हो जैसा कि छोड़ी जाने वाली या छूटी हुई नमाज़, नमाज़े सूरज गृहण, सुन्नते वुज़ू, तहिय्यतुल मस्जिद, सज्दए तिलावत और सज्दए शुक्र मगर इन तमाम चीज़ों में कराहत इसी सूरत में नहीं है जबकि ख़ासतौर पर वक्त मकरूह पर अदा करने के इरादे से मुलतवी (टालना) न कर रखा हो, और हराम (मकरूहे तहरीमी) है वो नमाज़ जिसका सबब उससे मुतअख़ि़र (बाद में) हो जैसा कि इस्तिख़ारे की नमाज़ और एहराम की नमाज़ और वो नमाज़

जबकि ख़तीब मिम्बर पर चढ़ जाए सिवाए तहिय्यतुल मस्जिद के बशर्ते कि उससे तकबीर तहरीमा छूट जाए तो तहिय्यतुल मस्जिद भी मकरूह है।

### अज़ान

मुस्तहब (सुन्नत) है फ़र्ज नमाज़ों के लिये अज़ान व इक़ामत (तकबीर) कहना जबकि मर्द फ़ौत शुदा (क़ज़ा) नमाज़ न पढ़ रहा हो, अगरचे कि तन्हा पढ़ रहा हो और अगरचे कि अज़ान सुना हो और जमाअते सानिया (दूसरी जमाअत) और फ़ौत शुदा (क़ज़ा) नमाज़ के लिये भी अज़ान व इक़ामत कहना मुस्तहब (बेहतर) है। अगर चन्द नमाज़ें क़ज़ा हो गई हों या जमा तकदीम करे या जमा ताख़ीर करे तो सिर्फ़ पहली नमाज़ के लिये अज़ान दे, और औरत के लिये मुस्तहब ये है कि सिर्फ़ इक़ामत (तकबीर) कहे, वो नमाज़ें जिनकी जमाअत मुस्तहब (बेहतर) है (तरावीह वगैरा) उसमें अज़ान व इक़ामत (तकबीर) न कहे बल्कि “अस्सलातुल ज़ामिअह” कहना मुस्तहब (बेहतर) है।

(1) जमा तकदीम:- ज़ोहर के वक्त में ज़ोहर और अस्त्र की नमाज़ पढ़ना। या मगरिब के वक्त में मगरिब और इशा की नमाज़ पढ़ना।

(2) जमा ताख़ीर:- अस्त्र के वक्त ज़ोहर और अस्त्र का अदा करना या इशा के वक्त में मगरिब और इशा का पढ़ना।

### अज़ान की शर्तें

पहली शर्त: वक्त है, सिवाए फ़ज़ के कि आधी रात के बाद अज़ान देना जाइज़ है। और सिवाए जुमे के दिन कि पहली अज़ान ज़वाल से पहले भी जाइज़ है। (ये कौल मतरूक यानी छोड़ा हुआ है सही ये है कि ज़वाल के बाद अज़ान दे।) दूसरी शर्त: तरतीब (अज़ान के कलमों का नम्बरवार होना) है। तीसरी शर्त: मवालात (पे दर पे यानी लगातार होना) है। चौथी शर्त: पूरी अज़ान एक ही आदमी का देना। पाँचवीं शर्त: अज़ान का अरबी जुबान में देना जबकि कोई उम्दा आवाज़ वाला हो तो अज़ान वही दे। और मुअज़्ज़िन पर अज़ान के अलफ़ाज़ की अदाएगी

का सीखना ताकीदी (अहम) सुन्नत है।

**अज्ञान व इकामत (तकबीर) की शर्तें :-** अज्ञान व इकामत की आवाज़ का बअज़ जमाअत (कुछ मुक्तदियों) तक पहुँचना और अगर मुफ़रिद (तन्हा) हो तो खुद सुन लेना।

**मुअज़्ज़िन की शर्तें :-** इस्लाम (मुसलमान होना) तमीज़ (समझवाला) होना और मुज़क्कर (यानी मर्द) होना।

### अज्ञान के मकरूहात

मकरूह है अज्ञान व इकामत में अलफ़ाज़ का घटाना, अज्ञान में कलाम (गुफ़्तगू करना) तर्क इजाबत (अज्ञान का जवाब न देना) बैठने या सवारी की हालत में अज्ञान देना, सिवाए सवार मुसाफ़िर के, फ़ासिक् (बदकार, दाढ़ी मुंडे) का अज्ञान देना, ना समझ बच्चे का अज्ञान देना, जुनुबी (नापाक) का अज्ञान देना, मुहदिस् (बे वुजू) का अज्ञान देना मगर जब कि दरम्यान अज्ञान में बे वुजू हो गया तो उस अज्ञान को पूरा कर दे, और क़िब्ले से रुख़ फेरकर अज्ञान देना।

### अज्ञान की सुन्नतें

सुन्नत है अज्ञान में तरतील करना यानी ठहरकर उम्दा आवाज़ से पढ़ना, तरजीअ यानी शहादतैन को दो बार आहिस्ता और दोबार जोर से कहना, और फ़ज़ की अज्ञान में तस्वीब यानी अस्सलातु ख़ैरुम मिनन नौम कहना अगरचे कि अज्ञान अदा हो या क़ज़ा और हय-य अलस्सलाह पर दाहिनी जानिब और हय-य अलल फ़लाह पर बाई जानिब सिर्फ़ चेहरे का फेरना, कान के दोनों सूराखों में शहादत की ऊँगलियाँ सिर्फ़ अज्ञान में डालना न कि इकामत (तकबीर) में। सुन्नत है मुअज़्ज़िन का काबिले ऐतबार, परहेज़गार, बुलन्द आवाज़ वाला और उम्दा आवाज़ वाला होना, और मुअज़्ज़िन का बुलन्द जगह पर होना और मस्जिद के क़रीब होना और हर दो तकबीरों का एक ही साँस में जमा करना और अल्लाहु अकबर की रा को मफ़तूह (रा पर ज़बर) पढ़ना और दूसरी रा को वक्फ़ (साकिन) पढ़ना सुन्नत है। और “अला सल्लू फिरिहाल” कहना बारिश की रात

में, या तेज़ औंधी में या सख़्त अंधेरे में अज्ञान के बाद हय-य अलस्सलाह, हय-य अलल फ़लाह कहना, और सुबह फ़ज़ की अज्ञान दो बार कहना और दोनों में तस्वीब (अस्सलातु ख़ैरुम मिनन नौम) कहना और सलाम का जवाब न देना, और अज्ञान के दरम्यान में न चलना और मुअज़्ज़िन व मुक़ीम (इकामत या तकबीर कहने वाला) के कहे हुए अलफ़ाज़ को सुनने वाले का दोहराना सिवाए हय-य अलस्सलाह हय-य अलल फ़लाह के कि उसके बाद ला हौ-ल वला क़ुब्-त इल्ला बिल्लाह कहे और ये अज्ञान में दोनों हय-य अला के बाद चार मर्तबा कहेगा और सिवाए तस्वीब (ख़ैरुम मिनन नौम) के कि उसके बाद “सदक्-त व बर-त” कहे और सिवाए इकामत के कि उसके बाद “अक़ामहल्लाहु व अदामहा” कहे, और सुन्नत है अज्ञान के जवाब के लिये तिलावत बन्द करना, और अज्ञान का जवाब हमबिस्तरी और ख़ला (पेशाब पाख़ाना) और नमाज़ के बाद देना जबकि लम्बा वक़्त न गुज़रा हो और अज्ञान व इकामत (तकबीर) के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद पढ़ना फिर ये दुआ पढ़ना “अल्लाहुम-म रब-ब हाज़िहिद् दअवतित ताम्मति वस्सलातिल काइमति आति मुहम म द निल वसी ल त वल फ़द्दी ल त वद द-र-ज-तर रफ़ी अ त वबअस्हु मक़ामम महमू-द निल्लज़ी व अल्लहू वस्ज़ुकुना शफ़ाअतहू यौमल क़ियामह इन्-क ला तुख़लिफूल मीआद ” और अज्ञान के बाद दुआ करना और अज्ञान व इकामत (तकबीर) के दरम्यान दुआ करना। और अज्ञान इकामत के साथ सिर्फ़ इमामत से अफ़ज़ल है। और दोनों का जमा करना सुन्नत है।

**मुक़ीम (इकामत कहने वाले) की शर्तें:-** इस्लाम यानी मुसलमान होना और तमीज़ यानी समझवाला होना और मुस्तहब (बेहतर) है कि इकामत अज्ञान की जगह के अलावा जगह पे कही जाए और अज्ञान से हल्की आवाज़ में कही जाए। और हय-य अलस्सलाह, हय-य अलल फ़लाह में इल्तिफ़ात यानी दाएं बाएं रुख़ फेरना मुस्तहब (बेहतर) है और अगर जमाअत यानी चन्द लोगों ने अज्ञान दिया तो इकामत (तकबीर)

मुअज़्ज़िन रातिब (मुक़र्रर किया हुआ मुअज़्ज़िन) कहेगा फिर जिसने पहले अज़ान दिया वह कहेगा, फिर कूरआ अन्दाज़ी की जाएगी और इक़ामत का वक़्त इमाम की राय पर मुन्हसिर (निर्भर) है।

### नमाज़ की सिफ़त (तरीका व उसूल)

नमाज़ के अरकान (ज़रूरी चीज़ें) तेरह हैं।

**पहला रुकन:-** दिल से नियत करना, और सिर्फ़ नफ़िल जैसे तहिय्यतुल मस्जिद और सुन्नते वुजू में सिर्फ़ नमाज़ के अमल की नियत करना काफी है। और ख़ास वक़्त के नफ़िल में और उसमें जिसके लिये कोई सबब हो, नमाज़ के अमल और तअय्युन यानी ख़ास नमाज़ की नियत करना चाहिये जैसे सुन्नते जुहर या ईदुल फ़ितर या ईदुल अज़हा वग़ैरा। और फ़र्ज़ नमाज़ों में नमाज़ के अमल की नियत करना और ख़ास करना कि सुबह की नमाज़ है या उसके अलावा की, और बालिग़ को फ़र्ज़ होने की नियत करनी चाहिये, और मुस्तहब (बेहतर) है रकअत की तादाद का ज़िक्र करना, और नमाज़ की निस्बत अल्लाह की तरफ़ करना, और अदा व क़ज़ा का ज़िक्र करना, और नियत का तकबीरे तहरीमा यानी अल्लाहु अकबर से मिला हुआ होना वाजिब है।

**दूसरा रुकन :-** अल्लाहु अकबर हालते क़्याम (खड़े होने की हालत) में कहना और नुक़सान नहीं अल्लाह के लिये तारीफ़ बयान करने में (मसलन अल्लाह अज़-ज़ वजल अकबर) मुख़्तसर तख़ल्लुल यानी वक़्फ़ा, फ़ासला या थोड़ी ख़ामोशी। और अज़िज़ (जो अरबी न जाने) जिस जुबान में चाहे तर्जमा करे और अरबी सीखना वाजिब है उसके लिये अगरचे कि सफ़र करना पड़े और उसके सीखने के लिये नमाज़ अव्वल वक़्त से देर में अदा करेगा और तकबीर की शर्त ये है कि इतनी आवाज़ में हो कि खुद सुन सके और ऐसे ही क़िराअत और तमाम अरकान (तस्बीह,

दुरूद, दुआ वग़ैरा) हैं।

**तीसरा रुकन :-** क़ादिर (कूदरत वाले) शख़्स का फ़र्ज़ नमाज़ में क़्याम (खड़ा होना) करना और पीठ की हड्डियों के सीधा रखने की शर्त है अगर पीठ सीधी रखने पर कूदरत न हो तो झुकी रखे और अगर इस पर भी क़ादिर न हो तो बैठ जाए और रुकूअ में अपनी पेशानी को अपने दोनों घुटनों के आगे सामने करे और अफ़ज़ल ये है कि पेशानी मौज़-ए सुजूद (सजदा करने की जगह) के (मुक़ाबिल व सामने) करे और वो दोनों महाज़ात में क़ाइम यानी खड़ा होने वाले के रुकूअ के मिस्ल हैं। और अगर बैठने पर क़ादिर न हो तो पहलू पर लेट जाए और अफ़ज़ल (बेहतर) दाहिना पहलू है। और अगर उस पहलू के बल लेटने पर ताक़त न रखता हो तो चित गुद्दी के बल लेट जाए और किसी चीज़ से अपने सर को बुलन्द करले और रुकूअ व सजदे के लिये सर से इशारा करेगा और सजदे का इशारा मुम्किन हद तक ज़्यादा देर तक करे, फिर अगर इस पर कूदरत न हो तो तमाम अरकान का ख़याल दिल में लाकर नमाज़ अदा करे, और क़ादिर यानी कूदरत वाले का नमाज़ नफ़िल बैठकर और पहलू के बल लेटकर पढ़ना जाइज़ है न कि चित लेटकर। और रुकूअ और सजदे के लिये बैठेगा। और बैठकर क़ादिर यानी कूदरत वाले का अज़्र (सवाब) क़्याम वाले यानी खड़े नमाज़ी के अज़्र का आधा है और लेटे हुए का अज़्र बैठे के अज़्र का आधा है।

**चौथा रुकन :-** सूरए फ़ातिहा पढ़ना, मगर मअज़ूर के लिये इमाम के साबिक् (आगे या अव्वल) होने के सबब और उसके अलावा किसी वजह से, और बिस्मिल्लाह पढ़ना और तश्दीदात (तश्दीद वाले हुरूफ़) जो सूरए फ़ातिहा में हैं उसके जुज़ (अंग) हैं। और 'द्वाद' को 'ज़ोए' से बदलकर पढ़ना सही नहीं है और अदमे लहन यानी ऐसी ग़ल्ती का न होना जो मअना में ख़राबी पैदा करने वाली हो शर्त है, और मवालात (पे दरपे-लगातार) की शर्त है तो लम्बी ख़ामोशी या ठहराव से सूरए फ़ातिहा

का क़तअ़ यानी काटना हो जाएगा क़सदन किया हो या थोड़ा सुकूत (वक्फ़ा) किया और क़िराअत के काटने का क़सद किया और ज़िक्र (तस्बीह वगैरा) के अलफ़ाज़ से फ़ातिहा का काटना लाज़िम आएगा मगर जबकि भूलकर किया और सिवाए इसके जबकि नमाज़ में वो सुन्नत हो जैसा कि आमीन कहना और अऊज़ु बिल्लाह कहना (पनाह माँगना) और रहमत का सवाल करना और इमाम की क़िराअत पे तिलावत का सजदा करना और रद करना यानी लुक़्मा देना।

**पाँचवाँ रुक़न :-** रुकूअ़ और रुकूअ़ में कम से कम इतना झुकना कि उसकी दोनों हथेलियाँ दोनों घुटनों तक पहुँच जाएं और इत्मीनान (सुकून) की शर्त है। इस तरह के अज़ा (अंगों) में ठहराव पैदा हो जाए और ये कि रुकूअ़ के अ़लावा का इरादा न हो, पस अगर सजदए तिलावत को झुका फिर उसे ही रुकूअ़ क़रार दिया तो काफी न होगा।

**छटा रुक़न :-** ऐतिदाल, ऐतिदाल ये है कि रुकूअ़ के बाद अपनी उसी हालत पर जिस पर पहले वो था लौटे। ऐतिदाल की शर्त इत्मीनान है और इसके अ़लावा का क़स्द न हो पस अगर किसी चीज़ से ख़ौफ़ज़दा होकर सर उठाया तो काफी न होगा।

**सातवाँ रुक़न :-** दो बार सजदा करना और सजदे में कम से कम ज़ाहिरी पेशानी का बअज़ हिस्सा जाए नमाज़ पर रखे और सजदे की शर्त इत्मीनान व सुकून है और अपने दोनों घुटनों का बअज़ हिस्सा और दोनों हथेलियों के पेट का बअज़ हिस्सा ज़मीन (मुसल्ले) पे रखना और दोनों क़दमों की ऊँगलियों का ज़मीन (जाए नमाज़) पे रखना। और पेशानी का सजदे की जगह पे टिकाना और सजदे के अ़लावा का क़स्द न होना। पस अगर कोई चेहरे के बल गिर गया तो ऐतिदाल यानी बीच की हद की तरफ़ पलटना वाजिब है और सजदे की शर्तों में से है असाफ़िल (नीचे का हिस्सा सुरीन) का ऊपरी हिस्से से बुलन्द होना, और नमाज़ी की हरकत से हरकत करने वाली चीज़ पर सजदे का न होना पस अगर कोई ज़ख़्म के

सबब अपनी तमाम पेशानी पर पट्टी बाँधे हो और पट्टी के उभरने का ख़ौफ़ हो तो उसी पे सजदा करे और उसकी क़ज़ा नहीं।

**आठवाँ रुक़न :-** जुलूस यानी दो सजदों के दरम्यान बैठना।

**जुलूस की शर्त :** इत्मीनान होना और तवील (लम्बा) न होना और ऐतिदाल (दरम्यानी हालत) का न होना, उठने में उसके अ़लावा का क़स्द न होना, अब अगर किसी चीज़ से ख़ौफ़ खाकर उठा तो काफी न होगा।

**नवाँ रुक़न :-** आख़री तशहहुद यानी आख़री अत्तहिyyात उसकी कम से कम मिक्दार “अत्तहिyyातु लिल्लाहि सलामुन अलै-क अय्युहन्बिय्यु वरहमतुल्लाहि व-ब रकातुहू सलामुन अलैना व अ़ला इबादिल्लाहिसस्वालिहीन अशहदु अल लाइला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन न मुहम्मदुर्सूलुल्लाह।” तशहहुद की शर्त मवालात (पे दरपे) होना और उसका अरबी में होना।

**दसवाँ रुक़न :-** आख़री तशहहुद यानी दूसरे क़अदे में बैठना।

**ग्यारहवाँ रुक़न :-** नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पे दुरूद पढ़ना तशहहुद (अत्तहिyyात) के बाद बैठकर, और दुरूद का कम से कम अल्लाहुम म स्वल्ले अ़ला मुहम्मदिन है। या अल्लाहुम म स्वल्ले अ़ला रसूलिही। या अल्लाहुम म स्वल्ले अ़लन्बी है।

**बारहवाँ रुक़न :-** सलाम और उसका कम से कम अस्सलामु अलैकुम है।

**तेरहवाँ रुक़न :-** तरतीब (क्रम) यानी हर रुक़न का अपने मक़ाम पे होना अब अगर किसी ने तरतीब (क्रम) छोड़ने का इरादा किया इस तरह कि रुकूअ़ से पहले सजदा कर लिया तो नमाज़ बातिल (ख़राब) हो गई, और अगर कोई रुक़न भूल गया तो छूटे हुए रुक़न के बाद वाले अरकान बेकार हैं। फिर अगर दूसरा रुक़न अदा करने से पहले छूटा हुआ रुक़न याद आया तो उसे अदा करे वरना (भूले रहने की सूरात में) रकअ़त पूरी हो गई

और बाकी को पूरा करे और अगर अपनी नमाज़ के आखिर में आख़री रकअत के सजदा छूटने का यकीन हो तो सजदा करे और तशहहुद (अत्तहिय्यात) को लौटाए, या आख़िर रकअत के अलावा किसी रकअत का सजदा छूटने का यकीन हो या सजदा छूटने का शक हो तो एक रकअत और पढ़े और अगर दूसरी रकअत के लिये खड़ा होना चाहा हालाँकि पहली रकअत का सजदा छूट गया था तो अगर वह जुलूस (बैठने की हालत) में हो अगरचे कि आराम के लिये हो तो सजदा करे और अगर खड़ा हो गया तो इत्मीनान के साथ जुलूस करे (बैठे) फिर सजदा करे, और अगर सलाम के बाद किसी रुकन का छूटना याद आया तो अगर वह रुकन नियत हो या तकबीरे तहरीमा तो नमाज़ बातिल (ख़राब) हो गई और अगर इन दोनों के अलावा हो तो अपनी नमाज़ पे बिना करे जबकि फ़स्ल (जुदा होना) क़रीब हो और गन्दगी न छुई हो, और क़िब्ले के रुख़ से फिर जाना नुक़सानदे नहीं और न कलाम (गुफ़्तगू) नुक़सानदे है और अगर फ़ास्ला लम्बा हो गया तो फिर से नमाज़ पढ़े।

### नमाज़ की सुन्नतें

तकबीर से पहले नियत के अलफ़ाज़ का कहना, और इस्तिस्हाब यानी अज़ अव्वल ता आख़िर नमाज़ के ख़िलाफ़ नियत का न पाया जाना और रफ़ू यदैन् (दोनों हाथों का कांधों तक उठाना) तकबीरे तहरीमा के साथ होना और हथेली का खुला हुआ कअबे की सिम्त में होना, ऊँगलियों का खुला हुआ होना, दोनों अंगूठों का कान की लौ के सामने होना, आख़री तकबीर तक रफ़ू यदैन् न किये रहना, रुकूअ के वक़्त रफ़ू यदैन् करना और ऐतिदाल यानी रुकूअ से उठते वक़्त और पहली तशहहुद से क़याम (खड़ा होने) के वक़्त तहरीमा (अल्लाहु अकबर) से फ़ारिग़ होते ही हाथ सीने के नीचे रखना, दाहिनी हथेली से बाई हाथ का गट्टा और कलाई के अगले हिस्से का पकड़ना, सजदे की जगह पे नज़र रखना सिवाए कअबे के कि हालते नमाज़ में कअबे की तरफ़ नज़र करना सुन्नत है। और

सिवाए तशहहुद (अत्तहिय्यात) में इल्लल्लाह कहने के वक़्त के कि शहादत की ऊँगली का देखना सुन्नत है और सुन्नत है तकबीरे तहरीमा के बाद दुआए इस्तिफ़ताह पढ़ना। एक दुआ ये है “अल्लाहु अकबर कबीरं व लहम्दु लिल्लाहि कसीरं व सुद्धानल्लाहि बुक़स्तं व असीला” और दुआए इस्तिफ़ताह अज़ु बिल्लाह आख़िर तक पढ़ लेने और मसबूक़ (वह शख्स जो एक या कई रकअतें छूट जाने के बाद जमाअत में शरीक हो) का अपने इमाम के साथ बैठ जाने से छूट जाती है न कि अपने इमाम के साथ आमीन कह देने से। और सुन्नत है क़िराअत से पहले तअव्वुज़ (अज़ु बिल्लाह) का आहिस्ता पढ़ना, और तअव्वुज़ का हर रकअत में पढ़ना सूरए फ़ातिहा से फ़ारिग़ होने के बाद आमीन कहना, जहरी (बुलन्द आवाज़ वाली) नमाज़ में जहर (ज़ोर) से कहना। फ़ातिहा के आख़िर और आमीन के दरम्यान वक्फ़ा (ठहराव) करना। और आमीन और दूसरी सूरत के दरम्यान वक्फ़ा करना और जहरी नमाज़ में इमाम आमीन के बाद सूरए फ़ातिहा पढ़ने के बराबर वक्फ़ा (ठहराव) करें और सुन्नत है सूरत से फ़ारिग़ होने के बाद वक्फ़ा करना। और सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए फ़ातिहा के अलावा चन्द आयतों की तिलावत करना। और फ़ज़्र में और हर नमाज़ में पहली दो रकअतों में सूरत पढ़ना, सिवाए मुक़्तदी के जो इमाम से सुने। और पूरी सूरत पढ़ना लम्बी सूरत की कुछ आयतें पढ़ने से अफ़ज़ल है। और सुन्नत हैं पहली रकअत की क़िराअत का लम्बा होना और जुमा और फ़ज़्र की दोनों रकअतों में और मग़रिब की पहली दो रकअतों में और इशा की पहली दो रकअतों में औरत के अलावा अजनबियों की मौजूदगी में भी जहर करना (ज़ोर से पढ़ना) यहाँ तक कि इमाम के सलाम फेरने के बाद मसबूक़ की रकअत में भी। ईदैन् की नमाज़ और इस्तिस्का (बारिश) की नमाज़ और चन्द्र गृहण की नमाज़ और तरावीह की नमाज़ और तरावीह के बाद वित्र की नमाज़ जहर (बुलन्द आवाज़) से पढ़ना। ज़िक्र की गई नमाज़ों के अलावा का आहिस्ता पढ़ना, सिर्फ़ नफ़िल रात की नमाज़ बुलन्द व आहिस्ता के दरम्यान पढ़ना, मग़रिब

में किसारे मुफ़स्सल (सूरए वद्वदुहा से वन्नास तक) पढ़ना, फ़ज़ में मुनफ़रिद (तन्हा) और वो इमाम जिससे मुक्तदी राज़ी हों, का तिवाले मुफ़स्सल (सूरए हुजुरात से अम म) तक पढ़ना जुहर में तिवाल से करीब सूरतों का पढ़ना, अम्र व इशा में औसात मुफ़स्सल (अम म से वद्वदुहा तक) पढ़ना जैसे वशशमिस और इसी के मिस्ल, और जुमे के दिन फ़ज़ की पहली रकअत में “अलिफ़ लाम मीम तन्ज़ीलुल” और दूसरी रकअत में “हल अता अलल इन्सानि” पढ़ना, आयते रहमत पे सवाले रहमत करना, आयते अज़ाब पर पनाह माँगना, आयते तस्बीह पर तस्बीह पढ़ना। सूरए वत्तीन की आख़री आयत पर और सूरए क़यामह की आख़री आयत पर “बला व अना अला ज़ालि क मिनश्शाहिदीन” कहना और सूरए मुरसलात की आख़री आयत पर आमन्ना बिल्लाहि कहना, इसे इमाम व मुक्तदी दोनों कहेंगे और जहरी नमाज़ में जहर करेंगे। और सुन्नत है इन्तेक़ाले रुक्न (रुक्न बदलने) के लिये तकबीर कहना और तकबीर के बाद वाले रुक्न तक लम्बा होना सिवाए ऐतिदाल (रुकूअ से खड़े होने) के कि उसमें समिअल्लाहु लिमन हमि-द कहे।

### रुकूअ की सुन्नतें

सुन्नत है रुकूअ में पीठ और गर्दन का सीधा रखना, पिण्डली और रान का गाड़े रखना, दोनों घुटनों का दोनों हाथ से पकड़ना, ऊँगलियों का जुदा रखना, ऊँगलियों के किब्ले की तरफ़ सिरे रखना, सुब्हा न रब्बियल अज़ीम वबि हम्दिही कहना अफ़ज़ल (बेहतर) तीन बार है। और मुनफ़रिद (तन्हा) और इमाम भी जबकि मुक्तदी राज़ी हों ये ज़्यादा करे अल्लाहुम म ल क रकअतु वबि क आमन्तु व ल क असलम्तु ख़शि अ ल क सम ई व बसरी व मुख़ज़ी व अज़मी व अ स बी वमस तकल्लु बिही कदमी लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

### ऐतिदाल (रुकूअ से उठने) की सुन्नतें

सुन्नत है जब ऐतिदाल के लिये अपना सर उठाए तो समिअल्लाहु लिमन हमि-द कहना, जब सीधा खड़ा हो जाए तो रब्बना लक़ल हम्द

मिलअस्स म वाति व मिलअल अरद्वि व मिलअ मिन शयइमबअदहू कहना। और मुनफ़रिद (तन्हा) और इमाम भी जबकि ज़्यादाती से मुक्तदी राज़ी हों ये ज़्यादा करे “अहलुस्सनाइ वल मजदि अहक्कु मा क़ालल अब्दु व क़ुल्लना ल-क अब्द ला मानि-अ लिमा अअतै-त वला मुअती लिमा मनअ-त वला यनफ़ुज़ ज़लजदि मिनक़ल जद” और सुन्नत है फ़ज़ की दूसरी रकअत के ऐतिदाल में दुआए कुनूत पढ़ना और अफ़ज़ल कुनूत ये है:- “अल्लाहुम्महिदीनी फ़ीमन हदै-त व आफ़िनी फ़ीमन आफ़ै-त व तवल्लनी फ़ीमन तवल्लै-त व बारिकली फ़ीमा अअतै-त व किनी शर-र मा क़दै-त फ़ इन्न-क तकद्वी वला युक्द्वी अलै-क व इन्नहु ला यज़िल्लु मन्वालै-त वला यइज़्जु मन आदै-त तबारक-त रब्बना व तआला फ़ लक़ल हम्दु अला मा क़दै-त अस्तग़फ़िरु-क व अतूबु इलैक”

और इमाम दुआ में जमा का सीगा (बहुवचन) लाए और सुन्नत है कुनूत के आख़िर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूदो सलाम पढ़ना, कुनूत के लिये दोनों हाथ खुले उठाए, रफ़ए यदैन करना, इमाम का दुआए कुनूत जहर (ज़ोर) से पढ़ना, दुआ के लिये मुक्तदियों का आमीन कहना, और सना (फ़ इन्न क तकद्वी आख़िर तक) में मुक्तदी इमाम के शरीक होंगे, और कुनूत में भी जबकि मुक्तदी अपने इमाम का कुनूत न सुनता हो और मुसीबत नाज़िल होने के वक़्त सारे फ़र्ज़ नमाज़ों में कुनूत पढ़ना मुस्तहब (बेहतर) है।

### सजदे की सुन्नतें

सुन्नत है सजदे में पहले अपने घुटनों का रखना फिर दोनों हथेलियों का रखना और फिर पेशानी और नाक एक साथ खुली हुई रखना, और मर्द के लिये सुन्नत है कोहनियों को पहलू से और पेट को अपनी रानों से जुदा रखना और रुकूअ में भी ऐसे ही जुदा रखे। और औरत जिस्म के बअज़ हिस्से को बअज़ से मिलाकर रखे और सुन्नत है “सुब्हा-न रब्बियल अज़ला वबि हम्दिही” कहना और तीन बार अफ़ज़ल

है। और मुफ़रिद (तन्हा) और इमाम भी जब कि मुक़तदी राज़ी हों ये ज़्यादा पढ़ें “सुबूहुन कुहुसुन रब्बुल मलाइकति वरूह अल्लाहुम म ल क सजदतु वबि क आमन्तु व ल-क असलमन्तु स-ज-द वजहि य लिल्लज़ी ख-ल-कहू व सच्चरू वशक-क सम अहु व ब-स-रहु बिहौलिही व कुव्वतिही फ़ तबास्कल्लाहु अहसनुल ख़ालिकीन” और सुन्नत है मुफ़रिद का दुआ में कोशिश करना सजदे में, और दोनों क़दमों के दरम्यान एक बालिशत का फ़ासला रखना, दोनों घुटनों के दरम्यान फ़ासला रखना, और दोनों रानों के दरम्यान फ़ासला रखना सुन्नत है और सजदे में दोनों हथेलियों का मुँहों के सामने रखना, हाथ की ऊँगलियों का मिली हुई रखना, और ऊँगलियों के सिरे कअबे की तरफ़ रखना, ऊँगलियों को खुला रखना सुन्नत है। और दोनों क़दमों का खड़े रखना, क़दमों का खुला रखना, और कपड़े से उनका ज़ाहिर रखना, ऊँगलियों का रुख़ किब्ले की तरफ़ होना और क़दमों की ऊँगलियों के पेट पे सहारा लेना सुन्नत है।

### जुलूस (बैठने) की सुन्नतें

सुन्नत है दो सजदों के दरम्यान जुलूस (बैठने) में इफ़तिराश, और दोनों हाथों, (हथेलियों) का घुटनों से करीब रखना और ऊँगलियों का खुली रखना और मिली रखना, ये कहते हुए “रब्बिग़फ़िरली वरहमनी वजबुरनी व-रफ़अनी वरज़ुकनी वहदिनी व अफ़िनी वअफ़ु अनी” और सुन्नत है दो सजदों के दरम्यान जुलूस (बैठने) के बराबर आराम के लिये हलका जल्सा (बैठना) हर उस सजदे के बाद जिससे क़याम करना हो सिवाए सजदे तिलावत के, और क़याम के वक़्त अपने दोनों हाथों से ज़मीन पर सहारा लेना सुन्नत है।

### तशहहुद की सुन्नतें

सुन्नत है आख़री तशहहुद में तवरूक करना, तवरूक ये है कि नमाज़ी अपने पैर (क़दम) को दाहिनी तरफ़ से निकाल दे और अपनी सुरीन (चूतड़) ज़मीन से मिला दे सिवाए उस शख़्स के जिस पर सजदे

सहव हो या मसबूक हो वो इफ़तिराश करे, (इफ़तिराश बाएं क़दम के टख़ने पर बैठना और दाहिना क़दम खड़ा रखना ऊँगलियों के पेट का ज़मीन से लगाना और सिरे किब्ले रुख़ होना) और मन्दूब (बेहतर) है तशहहुद या उसके अलावा जुलूस में अपने बाएं हाथ का बाई रान पर रखना, ऊँगलियाँ बिछी हुई मिली हुई हों और उनके सिरे घुटने की तरफ़ (किनारे) के बराबर हों। और सुन्नत है दाहिने हाथ का दाहिने घुटने की तरफ़ (किनारे) पर रखना, दोनों तशहहुद में दाहिने हाथ की तमाम ऊँगलियों का बंद कर लेना सिवाए शहादत की ऊँगली के उसे छोड़े रखे और अंगूठे को उसके नीचे रखे जैसे तिरेपन का अ़दद (संख्या)। और सुन्नत है इल्लल्लाह पर शहादत की ऊँगली का उठाना बग़ैर हरकत के और मुकम्मल तशहहुद ये है “अल्लहि्य्यातुल मुबारकातुस्स-ल वातुत तथ्यिबातु लिल्लाहि अस्सलामु अलै-क अय्युहन्बिथ्यु वरहमतुल्लाहि व-ब रकातुहू अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस स्वालिहीन अशहदु अल लाइला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन न मुहम्मदररसूलुल्लाह” और मुकम्मल दुरूद नबी पर ये है “अल्लाहुम म स्वल्ले अला मुहम्मदिन अब्दि-क व रसूलिकन्बिथ्यिल उम्मिथ्यि व अला आलि मुहम्मदिंव व अज़वाजिही व ज़ुर्रिय्यातिही कमा स्वल्लै-त अला इब्राही-म व अला आले इब्राही-म वबारिक अला मुहम्मदिन तबिथ्यिल उम्मिथ्यि व अला आले मुहम्मदिंव व अज़वाजिही व ज़ुर्रिय्यातिही कमा बारक-त अला इब्राही-म व अला आले इब्राही-म फ़िल आलमी-न इन्-क हमीदुम मजीद” और आख़िर तशहहुद के बाद हस्ब मंशा दुआ करना सुन्नत है और अफ़ज़ल दुआ ये है “अल्लाहुम म इन्नी अज़ज़ु बि-क मिन अज़ाबि जहन्न-म वमिन अज़ाबिल क़बरि वमिन फ़ितनतिल महया वल ममाति वमिन शरि फ़ितनतिल मसीहिद दज्जाल” चाहे तो ये दुआ पढ़े “अल्लाहुम म इन्नी अज़ज़ु बि-क मिनल मगरमि वल मआसिम” एक दुआ ये है “अल्लाहुम्मग़ फ़िरली माक़दन्तु वमा अरख़्रस्तु वमा असरस्तु वमा अज़लन्तु वमा असरफ़्तु वमा अन-त अज़लमु बिही मिन्नी अन्तल मुक़दमु व अन्तल मुअरिख़्र

इल्ला अन्-त” और मकरूह है नमाज़ में तशहहुद का जोर से पढ़ना और दुरूद का जहर (बुलन्द आवाज़ से पढ़ना) और दुआ का जहर और तस्बीह का जहर से पढ़ना।

### सलाम की सुन्नतें

और पूरा सलाम “अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह” है। और दूसरा सलाम सुन्नत है। और सुन्नत है सलाम की शुरुआत किब्ला रुख से करना और दोनों सलामों में चेहरा फेरना इस तरह कि पहले सलाम में दाहिना रुख़सार (गाल) और दूसरे सलाम में बायाँ रुख़सार (गाल) नज़र आ जाए। इस हाल में कि पहले सलाम में नमाज़ से निकलने की नियत करे और सुन्नत है कि नमाज़ी सलाम की नियत करे उन पर जो उसके दाहिनी तरफ़ हों फ़रिश्ते, मुसलमान जिन्नात और इन्सान। और बेहतर है कि मुक़्तदी दूसरे सलाम से अपने इमाम से रद (निकलने) की नियत करे और अगर मुक़्तदी इमाम के सामने हो तो इख़्तियार है। और पहले सलाम में रद (निकलने) की नियत करना पसन्दीदा है। और इमाम मुक़्तदियों पर रद की नियत करे।

### नमाज़ के बाद की सुन्नतें

मन्दूब (बेहतर) है नमाज़ के बाद ज़िक्र (विर्द) करना, और ज़िक्र आहिस्ता करना सिवाए इमाम के जबकि हाज़िरीन को तालीम देना चाहे तो जहर (बुलन्द) करे ताकि हाज़िरीन सीख जाएं और मन्दूब है कि इमाम मुक़्तदियों की तरफ़ रुख़ करे अपने जिस्म के बाएँ हिस्से को मेहराब की तरफ़ करके और ज़िक्र में और हर दुआ में रफ़ू यद्देन मन्दूब (बेहतर) है यानी हाथ उठाकर दुआ करना मन्दूब है। फिर दोनों हाथों से चेहरे का मसह करना मन्दूब है। और दुआए मासूरा (ज़िक्र की गई दुआएं) पढ़ना और अव्वल व आख़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद पढ़ना मन्दूब (मुस्तहब) है। और सलाम के बाद इमाम का फिर जाना मन्दूब है जबकि वहाँ औरतें न हों, और जब तक इमाम न उठे मुक़्तदियों का न उठना

और इमाम का हाज़त की तरफ़ फिर जाना और अगर कोई हाज़त न हो तो दाहिनी जानिब में फिरना अफ़ज़ल है और मन्दूब है सुन्नत और फ़र्ज़ नमाज़ के दरम्यान कलाम (गुफ़्तगू) से फ़र्क़ करना, या इन्तेक़ाले (तब्दील) मकान करना और मकान यानी जगह बदलना अफ़ज़ल है और वो नफ़िल नमाज़ जिसमें जमाअत सुन्नत नहीं उसका घर में पढ़ना अफ़ज़ल है।

नमाज़ की सुन्नतों में से है। खुशूअ व ख़ुजूअ (आजेज़ी इन्क़िसारी) और क़िराअत तरतील (ठहर-ठहरकर) के साथ करना और क़िराअत में तदब्बुर करना और ज़िक्र में तदब्बुर (ग़ौर-फ़िक्र) करना और खुशदिली व दिली सुकून के साथ नमाज़ में दाख़िल होना।

### नमाज़ की शर्तें

नमाज़ सही होने की चन्द शर्तें हैं। इस्लाम (मुसलमान होना) तमीज़, (समझवाला होना) और वक़्त का दाख़िल होना, नमाज़ की फ़र्ज़ियत का इल्म होना, नमाज़ के फ़राइज़ में से किसी फ़र्ज़ के सुन्नत होने का अक़ीदा न रखना, हृद्से अक़बर (नापाकी) और हृद्से असग़र (बे वुजू) से पाक होना, पस अगर हृद्स उससे पहले हो तो नमाज़ ख़राब हो जाएगी और कपड़ा और बदन और मकान का ग़ैर माफ़ नजासत से पाक होना, और अगर कपड़े के बअज़ हिस्से पर या बदन के बअज़ हिस्से पर ग़ैर माफ़ होने वाली नजासत (गन्दगी) लग गई हो और मालूम न हो कि नजासत कहाँ लगी तो पूरा कपड़ा और पूरे बदन का धुलना वाजिब है और ग़ौर-फ़िक्र नहीं किया जाएगा (क्योंकि इजतेहाद तहरीर यानी ग़ौर फ़िक्र की शर्त तअहुदे महल कई जगहों का होना है) और अगर पूरी नापाक चीज़ का आधा धुला फिर आधे बाकी को धुला तो पूरी चीज़ पाक हो गई जबकि उसके क़रीब धुला हो, और जब तक आधा न धुला जाए तो आधी चीज़ नापाक रहेगी। और नमाज़ सही नहीं है उस शख्स की जिसके बदन या कपड़े पर नापाकी (रोकने वाली मिक्दार में) लगी हो और अगरचे कि

कपड़ा नमाज़ी की हरकत से हरकत न करे, और नापाक रस्सी का एक किनारा पाक हो उसे पकड़ने वाले की नमाज़ सही नहीं है अगरचे कि नमाज़ी की हरकत से नापाक रस्सी हरकत न करे। और रुकूअ या उसके अलावा में सिर्फ नजासत की महाज़ात यानी मुक़ाबिल (सामने होना) नुक़सानदे नहीं जब तक कि लगे ना और गुदाई (जिस्म का सूई से काला करने) का असर साफ़ करना वाजिब है जबकि तयम्मूम के मना करने वाली चीज़ों में से किसी मना करने वाली चीज़ का ख़ौफ़ हो, और क़ज़ाए हाज़त (पेशाब-पाख़ाने) की जगह और सड़क की गर्द व गुबार जिनके नापाक होने का यकीन हो और उनसे बचना दुश्वार हो तो माफ़ है। (और जिन नजासतों से ग़ालिबन वचना दुश्वार हो वो बिल्कुल माफ़ नहीं मुसनिफ़ (लेखक) ने आगे तफ़्सील से बयान किया) और ये माफ़ी ज़माने और कपड़े और बदन के मक़ाम के ऐतबार से बदलती रहती है। और लेकिन फुंसी का खून और फोड़े का खून और ज़ख़्म का खून, और पीप और ख़ालिस पीप, और पिस्सू का खून और जूँ का खून और मच्छर का खून और खटमल का खून और मौज़ए हज़ामत (पछना या सिंगी की जगह) और मक्खी की बीट और चमगादड़ का पेशाब और इस्तेहाज़ा का खून और आब्ले का पानी और फोड़े का पानी जिसकी बू बदल गई हो, इन तमाम ज़िक्र करदा नजासतों का क़लील (थोड़ा) व कसीर (ज़्यादा) माफ़ है मगर जब कि उस नापाक कपड़े को फ़र्श बनाया या बग़ैर हाज़त के उठाया तो क़लील (थोड़ा) माफ़ है न कि कसीर (ज़्यादा माफ़ नहीं) और कुत्ते और खिन्ज़ीर के अलावा ग़ैर का क़लील खून माफ़ है। और जब फुंसी या फोड़े को निचोड़ दिया या पिस्सू को क़त्ल कर दिया यानी मसल दिया तो सिर्फ़ क़लील माफ़ है। और पिस्सू और उसके अलावा की खाल (क़त्ल करने के बाद उसकी खाल बदन या कपड़े पर रहने दे तो) माफ़ नहीं। और अगर नजासत के साथ (बावजूद नापाक होने के) भूलकर या ना जानकारी की बुनियाद पर नमाज़ पढ़ लिया फिर उसे नजासत

(नापाकी) का यकीन हो गया तो नमाज़ फिर से अदा करे।

सतरे औरत (बदन का छुपाना) है, मर्द और बाँदी की सतरे औरत (जिस्म का वह हिस्सा जिसका छुपाना फ़र्ज़ है) नाफ़ से घुटने तक है और आज़ाद औरत की सतरे औरत नमाज़ में और ग़ैर मेहरम (अजनबी) के सामने पूरा बदन है सिवाए चेहरे और दोनों हथेलियों के। और औरत की सतरे औरत मेहरमों (जिनसे निकाह हराम है) के सामने नाफ़ और घुटनों के दरम्यान है, वो शरूब देख सकता है जिसके लिये शहवत (जिस्मानी हवस) और फ़िल्ने का अन्देशा न हो। और सातिर यानी जिस्म छुपाने के क़ाबिल कपड़े की शर्त ये है कि जिल्द यानी जिस्म की रंगत न छलके अगरचे कि गदला पानी से ही, न कि तंग ख़ेमा (तन्बु) और न कि अंधेरी। और वाजिब नहीं है नीचे से सतर (छुपाना) करना। और जाइज़ है बअज़ अज़ाए औरत यानी ज़रूरी छुपाए जाने वाले अंगों का अपने हाथ से सतर करना (छुपाना) तो अगर इतना कपड़ा मयस्सर हो जो दोनों शर्मगाहों के लिये काफ़ी हो तो उसी के लिये मुतअय्यन व मख़सूस हो जाएगा। या इतना कपड़ा हो जो एक के लिये काफ़ी हो तो (छुपाने में) आगे के मक़ाम को अव्वल किया जाएगा, और वाजिब है कुर्ते की घुंड़ी (बटन) लगा देना या उसका बीच बाँध देना जबकि उज़्व औरत (छुपने वाला अंग) रुकूअ या उसके अलावा में ज़ाहिर होता हो।

इस्तिक्बाले किब्ला यानी किब्ले की तरफ़ मुँह करना, सिवाए सख़्त ख़ौफ़ की नमाज़ के, और सिवाए सफ़र जाइज़ की नफ़िल नमाज़ के, तो अगर मरक़द यानी सोने या आराम की जगह (मसलन ऊँट का कजावह) में हो या कशती में हो तो वाजिब है रुकूअ और सजदे कामिल करे और वाजिब है मुम्किन हद तक इस्तिक्बाले किब्ला, और अगर ऊँट के कजावे या कशती में न हो तो अगर वो सवार हो तो सिर्फ़ तहरीमा (अल्लाहु अकबर) के वक़्त इस्तिक्बाले किब्ला (किब्ले की तरफ़ रुख़) करे जबकि इस्तिक्बाल मुम्किन हो और बाक़ी नमाज़ में उसका

किब्ला रास्ता है। और सवार शख्स अपने रुकूअ का इशारा करे और सजदे का इशारा रुकूअ से लम्बा करे और अगर माशी (पैदल चलने वाला) हो तो एहराम (पहली अल्लाहु अकबर) में इस्तिक़बाल करे और रुकूअ में इस्तिक़बाल करे और सजदे में इस्तिक़बाल (किब्ले की तरफ़ रुख़) करे और दो सजदों के दरम्यान जुलूस (बैठने) में इस्तिक़बाल करे। और जो कअबे में नमाज़ पढ़ा और कअबे की बुनियाद से तीन हाथ के मिक़दार किसी खड़े होने वाले शख्स या सुतरे का इस्तिक़बाल किया तो नमाज़ सही होगी। और वो शख्स जो कअबे का मुशाहदा कर सके तो वो किसी की पैरवी (इस्तिक़बाल के सिलसिले में) न करे तो अगर कअबे के देखने से आजिज़ हो तो उस मोअतबर शख्स की पैरवी करे जो इल्म से ख़बर दे। फिर अगर मोअतबर शख्स न हो तो वाजिब है कि दलाइल से ग़ौर-फ़िक्र करे फिर अगर नाबीनाई के सबब या बसीरत (रौशनी) खो जाने के सबब आजिज़ हो जाए तो जानकार क़ाबिले भरोसे की पैरवी करे और अगर हैरत में पड़ जाए (रुख़ किब्ला पोशीदा हो जाए) जिस तरफ़ चाहे नमाज़ पढ़े और उसकी क़ज़ा वाजिब है। और हर फ़र्ज़ नमाज़ के लिये अलग ग़ौर-फ़िक्र करे फिर अगर नमाज़ के दरम्यान ख़ता का यक़ीन हो जाए या नमाज़ के बाद ख़ता का यक़ीन हो जाए तो फिर से नमाज़ पढ़े और अगर ग़ौर-फ़िक्र (किब्ले के रुख़ सिलसिले में) बदलती रहे तो किब्ले के दूसरे रुख़ के ग़ौर फ़िक्र पर अमल करना वाजिब है और अव्वल की क़ज़ा नहीं।

तर्क कलाम (बात न करना) इसलिये कि नमाज़ बातिल हो जाएगी। दो हर्फ़ बोलने से या एक हर्फ़ मअना दार बोलने से या हर्फ़ मद्दूद बोलने से (यानी मद वाला हर्फ़) अगरचे कि खंकारने से निकले या मजबूरी में निकले और अगरचे कि हँसने या रोने से, और कराहने से और मुँह से फूँकने या नाक से फूँकने में दो हर्फ़ निकले तो नमाज़ बातिल (ख़त्म) हो जाएगी। और मअज़ूर समझा जाएगा थोड़ा

कलाम कर लेने से जबकि हँसी की ज़्यादाती से निकल गया या किसी और वजह से। और मअज़ूर नहीं जाना जाएगा इन उज़रों के सबब जैसे ज़्यादा कलाम, थोड़ा कलाम। ज़बान चलने के सबब कर लिया हो, या भूलकर किया हो या तहरीम (बात के हराम होने से नमाज़ में) से जाहिल हो, जाहिल वो है जो नौ मुस्लिम हो या उलमा-ए किराम से दूर जंगल में पला हो (जंगल में रहे) और थोड़ा कलाम करने से मअज़ूर जाना जाएगा इन उज़रों यानी ज़िक्र किये गए उज़रों के सबब जैसे कसीर (ज़्यादा) कलाम, और मअज़ूर जाना जाएगा वाजिब कुरआन की क़िराअत के दुशवार होते वक़्त खंकारने से। और अगर समझाने की गर्ज़ से नज़्म कुरआन का तलफ़्फ़ूज़ (उच्चारण) किया या बग़ैर मक़सद बोला तो नमाज़ बातिल हो गई। और नमाज़ बातिल न होगी ज़िक्र से और बिला ख़िताब (संबोधन) पुकारने से और नमाज़ बातिल न होगी कुरबत के अलफ़ाज़ जैसे इत्क (आज़ादी) और नज़र के बोलने से, और नमाज़ बातिल न होगी तवील सुकूत (लम्बी ख़ामोशी) से अगरचे कि बिला उज़्र हो। और सुन्नत है जिसे कोई मामला पेश आए तो वो तस्बीह पढ़े जबकि मर्द हो और औरत तस्फ़ीक़ करे यानी एक हथेली का पेट दूसरी हथेली की पीठ पर मारे।

कसीर फ़ेअलों का तर्क (यानी एक से ज़्यादा काम का छोड़ना) तो अगर एक रुकूअ ज़्यादा कर दिया या नमाज़ के अरकान में से कोई रुकन ज़्यादा कर दिया तो नमाज़ ख़राब हो गई जबकि क़सदन किया हो या तीन काम पे दरपे किया मसलन तीन क़दम चला या बग़ैर खुजली के तीन बार खुजलाया, या एक बार ग़लत तरीक़े पर कूदा या ज़ोरदार एक तमांचा मारा तो इन सूरतों में नमाज़ बातिल हो गई चाहे क़सदन करे या भूलकर करे। और नुक़सानदे नहीं फ़ेअल क़लील (थोड़ा काम) और हरकत ख़फ़ीफ़ (हलकी हरकत) अगरचे कि कसीर (ज़्यादा) करे जैसा कि

ऊँगलियाँ हिलाना।

खाना पीना छोड़ना, तो अगर भूलकर थोड़ा खा लिया या तहरीम (हराम होने) से जहालत के सबब खा लिया तो नमाज़ बातिल न हुई।

न गुज़रे एक रुकन कौली (बोला जाने वाला) या एक रुकन फ़ेअली (किया जाने वाला) नियत तहरीमा में शक के साथ (यानी तकबीरे तहरीमा पहली अल्लाहु अकबर और नियत के दरम्यान शक व गुमान न हो) या शक का ज़माना लम्बा हो जाए।

नमाज़ तोड़ने की नियत न करे या नमाज़ टूटने के बारे में शक न करे।

क़तअ नमाज़ (तोड़ने) का किसी चीज़ पर न लटकाना।

### नमाज़ के मकरूहात

मकरूह है नमाज़ में इल्तिफ़ात यानी इधर-उधर रुख़ फेरना सिवाए हाजत के (बिला ज़रूरत) और निगाह आसमान की तरफ़ करना, और अपने बाल या कपड़े लपेटना (मोड़ना), और अपना हाथ मुँह पर बिला ज़रूरत रखना और अपनी पेशानी का गुबार (गर्द) पोंछना (झाड़ना) और सजदे की जगह की कंकरी का बराबर करना, और एक क़दम पर खड़ा होना, और एक क़दम को (दूसरे क़दम से) आगे रखना, एक क़दम को दूसरे क़दम से मिलाकर (सटा) रखना। और मकरूह है नमाज़ पढ़ना पेशाब की हालत में (पेशाब रोक कर) और ख़ला की हालत में (पाख़ाना रोक कर) या बाई की हालत में (हवा रोक कर) जबकि वक़्त में गुन्जाइश हो (वक़्त तंग न हो) और मकरूह है वक़्त होने के बावजूद भूखा नमाज़ पढ़ना, और मस्जिद के अलावा दाहिने या सामने थूकना मकरूह है और हराम है मस्जिद में थूकना। और मकरूह है कमर पर हाथ रखना और रुकूअ में अपना सर झुका लेना। (और ऊपर ज़्यादा बुलन्द रखना भी मकरूह है) और मकरूह है तीसरी और चौथी रकअत में

सूरत की क़िराअत करना सिवाए उस शख्स के जिसकी पहली और दूसरी रकअत छूट गई तो वह आख़री दो रकअतों में क़िराअत करे, और मकरूह है टेक लगाना ऐसी चीज़ पर कि उसके गिरने से टेक लगाने वाला नमाज़ी गिर जाए। और जलस-ए इस्तिराहत (आराम के लिये बैठने) में दो सजदों के दरम्यान जुलूस (बैठने) की मिक्दार ज़्यादा करना, और पहली तशहहुद का लम्बा करना और तशहहुद अव्वल में दुआ करना, और मकरूह है तशहहुद आख़िर में दुआ का छोड़ देना। और नमाज़ के अमल या रुकन में इमाम के मकारिन (साथ-साथ) होना और आहिस्ता पढ़ने की जगह में ज़ोर से पढ़ना, और ज़ोर की जगह आहिस्ता पढ़ना, और इमाम के पीछे बुलन्द आवाज़ से पढ़ना, और हराम है ज़ोर से नमाज़ पढ़ना (मुन्फ़रिद का) जबकि दूसरों को उससे तकलीफ़ हो, और मकरूह है ऊँट के बाड़े में नमाज़ पढ़ना, और ज़िबह करने की जगह में नमाज़ पढ़ना, और रास्ते में (सड़क पे) नमाज़ पढ़ना और बीच वादी (घाटी) में नमाज़ पढ़ना इसके बावजूद कि सैलाब आ रहा हो, और मकरूह है यहूदियों के इबादत ख़ाने में नमाज़ पढ़ना और ईसाइयों के इबादत ख़ाने में नमाज़ पढ़ना और मक़बरे में नमाज़ पढ़ना और गुस्ल ख़ाने में नमाज़ पढ़ना और ऊँटों के अ़तल (जहाँ पानी पीने के बाद खड़े हों) में नमाज़ पढ़ना, और मकरूह है कअबे की छत पर नमाज़ पढ़ना और तस्वीर वाले कपड़े में नमाज़ पढ़ना, या जिससे दिल बटे उसमें नमाज़ पढ़ना मकरूह है ढाटा करके (नाक और मुँह छुपाकर) नमाज़ पढ़ना और नकाब लगाकर नमाज़ पढ़ना, और नौद के गुलबे के वक़्त नमाज़ पढ़ना मकरूह है।

### मुसल्ली का सुतुरा (नमाज़ी की आड़)

और मुस्तहब (बेहतर) है कि नमाज़ी दीवार की आड़ (हाइल) में नमाज़ पढ़े, वरना मुस्तहब ये है कि तिहाई हाथ के बराबर (लम्बे) सुतुरे यानी लकड़ी या कोई चीज़ जिसे नमाज़ी अपने सामने रख लेता है, के सामने नमाज़ पढ़े, सुतुरे और नमाज़ी के दरम्यान तीन हाथ का फ़ासला

या कुछ कम रहे, फिर अगर सुत्रा न पाए तो जाएनमाज़ बिछाए और जानिबे किब्ला में लकीर (खत) खींच दे और मन्दूब (बेहतर) है उस वक़्त (जबकि सुत्रा कर दे और कोई सुत्रा और नमाज़ी के दरम्यान से गुज़रे) गुज़रने वाले को रोकना, और उस वक़्त (सुत्रा और नमाज़ी के दरम्यान से) गुज़रना हराम है, मगर जब कि आम सड़क के बीच नमाज़ पढ़े और जबकि अगली सफ़ में ख़ाली जगह हो तो गुज़रना जाइज़ है।

### सजदए सहव (भूल का सजदा)

सुन्नत हैं सहव (भूल) के दो सजदे तीन सबबों (कारण) में किसी एक के सबब से।

**पहला सबब :-** सजदए सहव सुन्नत है तशहहुद अव्वल (पहली अल्तहियात) का कोई कलमा छोड़ देने से, या फ़ज़ की नमाज़ में दुआए क़नूत छोड़ देने से या रमज़ान के निस्फ़ आख़िर की वित्र में क़नूत छोड़ देने से या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद छोड़ देने से तशहहुद अव्वल में या क़नूत में और बाद वाले तशहहुद में (नबी की) आल पर दुरूद तर्क कर देने से सजदए सहव सुन्नत है।

**दूसरा सबब :-** ऐसा काम जिसके सहव (भूल से) नमाज़ बातिल (ख़राब) न हो और बिल्क़ुद करने से नमाज़ बातिल हो, करने से सजदए सहव सुन्नत है, जैसा कि भूलकर थोड़ा कलाम करने से या भूलकर रुकन अमल ज़्यादा करने से जैसे कि रुकूअ और सजदा सहव नहीं करे उस अमल के सबब जिसका सहव व अमद (भूलकर और क़सदन) नमाज़ बातिल न करे जैसा कि इल्तिफ़ात करना (चेहरा फेरना), और एक क़दम दो क़दम चलना, मगर जब कि क़िराअत की जगह के अलावा में क़िराअत कर दे जैसे रुकूअ में, या तशहहुद की जगह के अलावा में तशहहुद पढ़ दे या दुरूद की जगह के अलावा में दुरूद पढ़ दे तो सजदा सहव करे चाहे वो भूलकर पढ़ा हो या जानबूझ कर पढ़ा हो। और अगर तशहहुद अव्वल भूल गया फिर बाद क़याम (खड़े होने) तशहहुद का

ख़याल आया तो तशहहुद की तरफ़ रुकूअ न करे (न लौटे) पस अगर उस (तशहहुद की तरफ़ लौटने) के हराम होने का इल्म होते हुए अमदन (क़सदन) लौटा तो नमाज़ बातिल हो गई और अगर भूलकर लौटा या जहालत के सबब लौटा तो सजदा सहव न करे। और वाजिब है लौटना अपने इमाम की मुताबअत (पैरवी) में और अगर तशहहुद का ख़याल क़याम (खड़े होने) से पहले आया तो लौट आए और अगर तशहहुद क़सदन छोड़ दिया फिर लौटा तो नमाज़ बातिल (ख़त्म) हो जाएगी जब कि क़याम के करीब हो। और अगर क़नूत पढ़ना भूल गया फिर अपने पेशानी रखने (सजदे) के बाद ख़याल आया तो न लौटे, या पेशानी रखने से पहले ख़याल आया तो लौट जाए और सहव (भूलने) का सजदा करे जब कि रुकूअ की हद को पहुँच गया हो।

**तीसरा सबब :-** रुकन फ़ेअली (नमाज़ के रुकन) का वाक़ेअ यानी अदा करना उसमें तरहुद (शक) के बावजूद, तो अगर रुकूअ में शक हुआ या सजदे में शक हुआ या रकअत में शक हुआ तो वाजिब है कि उसे अदा (ज़िक्र किया गया शक वाला रुकन) करे और सजदा सहव करे अगरचे कि सलाम से पहले शक दूर हो गया था, सिवाए उसके कि जब कि मुहतमिल के (शक़ी) ज़्यादात के अदा करने से पहले शक ख़त्म हो जाए। तो अगर शक हुआ कि क्या तीन रकअत पढ़ा है या चार रकअत? तो लाज़िम है कि कम पर बिना (यक़ीन) करे और जब शक आख़री रकअत के अलावा में दूर हो जाए तो सजदा सहव न करे। या शक आख़री रकअत में दूर हुआ तो सजदा सहव करे और शक नुक़सान नहीं देगा सलाम के बाद किसी रुकन के तर्क (छूटने) में सिवाए नियत और तकबीरे तहरीमा (अल्लाहु अकबर) और तहारत (पाकी) के छोड़ने के, और मुक़तदी सजदा सहव करेगा अपने इमाम पाक के सहव की वजह से और इमाम के इमाम की सहव की वजह से अगरचे कि इमाम ने सजदा छोड़ दिया हो या नमाज़ के पूरा करने से पहले मुहदिस (बे वुजू) ही क्यों न

हो गया हो, मगर जब कि मुक्तदी अपने इमाम की ख़ता पे बाख़बर हो जाए तो इमाम की मुताबेअत (पैरवी) न करे और मुक्तदी सजदा नहीं करेगा अपनी ख़ता के सबब इमाम के पीछे, और अगर मामूम (मुक्तदी) को इमाम के सलाम फेरने का गुमान हुआ तो मुक्तदी ने सलाम फेर दिया फिर उसके खिलाफ़ ज़ाहिर हुआ तो अपने इमाम के साथ सलाम दोबारा अदा करे और सजदा सहव नहीं, और अगर मुक्तदी को तशहहुद में किसी रुकन का छूटना याद आया सिवाए नियत के और तकबीरे तहरीमा के तो इमाम के सलाम के बाद एक रकअत और पढ़े और सजदा सहव न करे या किसी रुकन के छूटने का शक हुआ तो एक रकअत और पढ़े और मुस्तहब है कि सजदा सहव करे। और जब इमाम ने सजदए सहव किया तो मुक्तदियों पर इमाम की मुताबअत लाज़िम है तो अगर मुक्तदी मसबूक (जिसकी एक या ज़्यादा रकअतें शुरू की छूट गई) हो तो उस पर वाजिब है इमाम के साथ सजदा करना जब इमाम करे, और मुस्तहब है कि मसबूक अपनी आख़री रकअत में उस सजदे को दोबारा करे। और सहव एक हो या ज़्यादा सहव के सजदे सिर्फ़ दो हैं जैसा कि नमाज़ के सजदे। और सजदए सहव का महल (जगह) तशहहुद यानी अत्तहिय्यात और सलाम के दरम्यान है, और सजदए सहव ख़त्म हो जाएगा सलाम से जबकि क़सदन किया हो और भूलकर कहने से भी यही हुक्म है जबकि लम्बा फ़ास्ला हो जाए अगर भूलकर सलाम फेर दिया और देर ज़्यादा न हुई तो सजदए सहव कर ले। या वित्र को आख़री रात तक देर से अदा करे जब कि बेदार हो जाता हो और जाइज़ है वित्र को एक तशहहुद से मिलाना, या दो तशहहुद से दो आख़िर रकअतों में और जब वित्र तीन रकअत पढ़े तो पहली रकअत में सूरए अज़ला पढ़े और दूसरी रकअत में सूरए काफ़िरून और तीसरी रकअत में मुअव्वज़ात पढ़े (कूल हुवल्लाह, कूल अऊज़ू बिरब्बिनास, कूल अऊज़ू बिरब्बिल फ़लक़) फिर अफ़ज़लियत में वित्र से मुत्तसिल (क़रीब) फ़ज़्र की दो रकअत हैं यानी सुन्नते फ़ज़्र वित्र के बाद अफ़ज़ल

हैं। फिर सुन्नते फ़ज़्र के बाद अफ़ज़ल ज़ोहर से पहले की दो रकअत या जुमे से पहले की दो रकअत है और ज़ोहर और जुमे के बाद की दो रकअत और मग़रिब के बाद की दो रकअत और इशा के बाद की दो रकअत (ज़ोहर से इशा तक ज़िक्र की गई सुन्नत नमाज़ें अफ़ज़लियत में बराबर दरजे की हैं) फिर उनके बाद अफ़ज़ल तरावीह की नमाज़ है और ये तरावीह बीस रकअत है। हर दो रकअत पर सलाम फेरे, तरावीह का वक़्त इशा और तुलूए (उदय) फ़ज़्र के दरम्यान है, फिर अफ़ज़ल चाशत की नमाज़ है। उसकी कम से कम दो रकअत है और ज़्यादा से ज़्यादा आठ रकअत। नमाज़े चाशत का वक़्त सूरज के एक नेज़ा बुलन्द होने से शुरू होता है और ज़वाल से पहले तक बाक़ी रहता है और अफ़ज़ल है नमाज़े चाशत का चौथाई दिन तक देर से अदा करना। फिर चाशत के बाद अफ़ज़ल एहराम की नमाज़ है। और तवाफ़ की दो रकअत और तहिय्यतुल मस्जिद की दो रकअत (तवाफ़ की दो रकअत और तहिय्यत की दो रकअत में अफ़ज़ल एहराम की दो रकअत है।) फिर इन तीनों के बाद अफ़ज़ल सुन्नते वुजू की नमाज़ है। और तहिय्यतुल मस्जिद का सवाब हासिल फ़र्ज़ पढ़ने से या नफ़िल पढ़ने से भी हो जाता है। दो रकअत पढ़े या ज़्यादा तहिय्यत की नियत की हो या नहीं की हो। और मस्जिद में दोबारा दाख़िल होने से नमाज़े तहिय्यत मुकरर (दोबारा) हो जाती है और नमाज़े तहिय्यत क़सदन जुलूस (बैठने) से फ़ौत (ख़त्म) हो जाती है या भूलकर बैठ जाने से भी फ़ौत हो जाएगी जब कि वक़्त लम्बा हो जाए। और मुस्तहब (बेहतर) है ज़्यादा करना ज़ोहर से पहले दो रकअत और जुमे से पहले दो रकअत, और ज़ोहर के बाद दो रकअत और जुमे के बाद दो रकअत और मुस्तहब है ज़्यादा करना अ़स्र से पहले चार रकअत और मग़रिब से पहले दो रकअत और इशा से पहले दो रकअत और मुस्तहब है सफ़र जाते वक़्त दो रकअत पढ़ना घर (क़याम गाह) में और सफ़र से वापसी के बाद दो रकअत मस्जिद में। और मुस्तहब है दो रकअत नमाज़

इस्तिखारा और दो रकअत नमाज़े हाजत और चार रकअत नमाज़े तस्बीह।

और वो शख्स जिसकी मुवक़्त यानी खास वक़्त वाली (अगरचे कि फ़र्ज़ न हो जैसे नज़र वगैरा) नमाज़ फ़ौत हो जाए तो उसकी क़ज़ा करे। और मुतलक़ (कोई) नफ़िल और बगैर सबब (जिसके लिये सबब न हो जैसे तहिय्यत मस्जिद, कुसूफ़ (चाँद) वगैरा) के नमाज़ की क़ज़ा न करे, और नफ़िल मुतलक़ (आम) महसूर नहीं यानी ग़ैर महदूद नहीं। अब अगर (नफ़िल की) एक रकअत से ज़्यादा की नियत बाँधी तो जाइज़ है कि हर दो रकअत पर तशहहुद करे।

### सजदए तिलावत

सुन्नत है तिलावत का सजदा क़ारी (पढ़ने वाले) को और मुस्तमेअ (ब-क़सद सुनने वाले) को और सामेअ (सुनने वाले) को आयते सजदा की क़िराअत के वक़्त, सिवाए सोने वाले की क़िराअत के और बे गुस्ल की क़िराअत के और शराबी की क़िराअत के और साही (भूलने वाले) की क़िराअत के, (इनकी क़िराअत से सजदए तिलावत सुन्नत नहीं) और ताकीदी (ज़रूरी) सुन्नत है मुस्तमेअ (ब-क़सद सुनने वाले) का सजदा करना जब कि क़ारी सजदा करे, और नमाज़ी खुद पढ़े बगैर सजदा न करे सिवाए मुक़्तदी के कि वो सजदा करे जबकि उसका इमाम सजदा करे, वरना (यानी इमाम सजदा किया और मुक़्तदी सजदा नहीं किया) मुक़्तदी की नमाज़ बातिल (ख़त्म) हो जाएगी। और सजदा मुकरर (दोबारा) हो जाएगा क़िराअत (आयते सजदा की) की तक़रार (दोहराने) से अगरचे कि एक ही मजलिस में और एक ही रकअत में तक़रार हो, मगर जब कि आयते सजदा की क़िराअत वक़्ते मकरूह में किया या उसकी क़िराअत नमाज़ में सजदे के इरादे से किया तो सजदा न करे अब अगर क़सदन सजदा किया तो नमाज़ बातिल हो गई।

### सजदए शुक्र

सुन्नत है सजदए शुक्र नेअमतेँ हासिल होने के वक़्त (छोटी

नेअमतेँ के मिलने पर भी सजदए शुक्र सुन्नत है) और मुसीबत दूर होने के वक़्त, और फ़ासिक़ (मशहूर बदकार) के देखने के वक़्त और ये सजदा ज़ाहिर फ़ासिक़ को दिखाने के लिये करना चाहिये। और सजदए शुक्र सुन्नत है मुसीबत ज़दा को देखने के वक़्त और मुस्तहब है कि ये सजदा छुपाकर करे (ताकि मुसीबत ज़दा को तकलीफ़ न हो) और मुस्तहब है सूरए स्वाद की आयते सजदा पर सजदा शुक्र करना नमाज़ के अलावा (क़िराअत करने से) तो अगर सूरए 'स्वाद' की आयत पर नमाज़ में क़सदन सजदए शुक्र किया हालाँकि उसकी तहरीम (हराम) का जानकार था तो नमाज़ बातिल हो गई।

### नफ़िल नमाज़

सुन्नत नमाज़ में सबसे अफ़ज़ल ईदैन (ईद, बक़रईद की) की नमाज़ है, फिर सूरज गृहण की, फिर चाँद गृहण की, फिर इस्तिस्का (बारिश) की, फिर वित्र की नमाज़ और वित्र की कम से कम एक रकअत है। और वित्र की अक़सर (ज़्यादा से ज़्यादा) ग़्यारह रकअतेँ हैं ताक़ अ़दद (बे जोड़ संख्या) के साथ और वित्र का वक़्त इशा और शुरु वक़्त फ़ज़्र के दरम्यान है और अफ़ज़ल है वित्र को देर से अदा करना सलातुल्लैल (तहज्जुद वगैरा) से या हर तीसरी रकअत पर तशहहुद पढ़े या चौथी रकअत पे तशहहुद पढ़े, और जाइज़ नहीं है हर रकअत में तशहहुद पढ़ना। और जाइज़ है (नफ़िल में) ज़्यादा करना अपनी नियत पर (मसलन दो रकअत की नियत की और चार रकअत पढ़ना चाहे) और अपनी नियत से कम करना बशर्ते कि ज़्यादती और कमी से पहले नियत बदल गई हो।

और अफ़ज़ल है (नफ़िल नमाज़ में) हर दो रकअत पर सलाम फेरना, और क़याम लम्बा करना और लम्बा क़याम (खड़ा होना) अफ़ज़ल है रकअतेँ की तादाद से। और मुतलक़ (कोई भी) रात की नफ़िल नमाज़ अफ़ज़ल है दिन की नफ़िल नमाज़ से। और आधी रात के

आखिर में नफ़िल पढ़ना अफ़ज़ल है और रात के दरम्यानी वक़्त की तिहाई में नफ़िल पढ़ना अफ़ज़ल है। और मकरूह है पूरी रात मुसलसल क़याम करना और जुमे की रात को क़याम (नमाज़ नफ़िल) के लिये ख़ास करना और तहज्जुद मुअताद (बतौर आदत पढ़ी जाने वाली) का छोड़ना। और जब तहज्जुद को बेदार हो तो चेहरे का मसह करे और आसमान की तरफ़ देखे (नज़र करे) और ये आयत पढ़े “इन न फ़ी ख़ल्किस्समावाति वल अरद्वि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वल्हारि लआयातिल लि उलिल अलबाब ” आख़री सरूत तक (आले इमरान रुकूअ 4) और अपनी नमाज़े तहज्जुद दो ख़फ़ीफ़ (हल्की) रकअत से शुरू करे, और बहुत ही अहम है रात में और आधी आख़ीर में और रात की आख़री तिहाई में दुआ और इस्तिग़फ़ार (अस्तग़फ़िरुल्लाह) की कसरत करना।

### नमाज़े जमाअत

अदा की जाने वाली फ़र्ज़ नमाज़ों में आज़ाद, और मर्द, और मुक़ीम (निवासी) की जमाअत फ़र्ज़े किफ़ायत है (सिवाए जुमे के कि जुमे की जमाअत फ़र्ज़े ऐन है) ताकि शआइरे (निशानी) इस्लाम का इज़हार हो और तरावीह की जमाअत और तरावीह के बाद वित्र (रमज़ान में) की जमाअत सुन्नत है। और ताकीदी (सबसे ज़रूरी व अहम) जमाअत सुबह की जमाअत है, फिर इशा की जमाअत, फिर अ़स की जमाअत है और अफ़ज़ल है मर्दों का मस्जिद में जमाअत करना, मगर जबकि घर में मस्जिद से बड़ी जमाअत हो (तो घर की बड़ी जमाअत अफ़ज़ल है) और अफ़ज़ल है हर बड़ी जमाअत मगर जबकि बड़ी जमाअत का इमाम हनफ़ी हो (यानी इमामत की रिआयत न करने वाला हनफ़ी) या बड़ी जमाअत का इमाम फ़ासिक़ (बदकार) हो, या बड़ी जमाअत का इमाम बिदअती हो या बड़ी जमाअत में शिरकत से क़रीब की मस्जिद मुअत्तल (ख़ाली) हो जाएगी तो जमाअते क़लीला (छोटी) अफ़ज़ल है, तो अगर जमाअत न पाए मगर ऐसी जिसका इमाम बिदअती

हो या उसके अ़लावा तो मुन्फ़रिद (तन्हा) पढ़ने से जमाअत अफ़ज़ल है और जमाअत की फ़ज़ीलत हासिल हो जाएगी जब तक इमाम अस्सलामु अलैकुम (अलैकुम का मीम) न कहा हो और एहराम (तकबीर तहरीमा) की फ़ज़ीलत इमाम की तहरीमा (अल्लाहु अकबर) के वक़्त हाज़िर होने और फ़ौरन उसकी पैरवी करने से हासिल होगी। और मुस्तहब है कि इमाम रुकूअ और तशहहुद (अत्तहिय्यात) आख़िर में दाख़िल होने वाले का इन्तिज़ार करे बशर्ते कि इन्तिज़ार लम्बा न हो, और बशर्ते कि वो नमाज़ में शामिल होने वालों के दरम्यान फ़र्क़ न करता हो, और मकरूह है कि इमाम इन दो रुकों (रुकूअ और तशहहुद आख़िर) के अ़लावा में इन्तिज़ार करे और नमाज़ कुसूफ़ (चाँद) की दूसरे रुकूअ में इन्तिज़ार न करे। और सुन्नत है फ़र्ज़ नमाज़ का लौटाना ब नियत फ़र्ज़ मुन्फ़रिद (तन्हा) के साथ या जमाअत के साथ अगरचे कि वो नमाज़ जमाअत से पढ़ चुका हो और लौटाने वाले की फ़र्ज़ नमाज़ पहली नमाज़ है, और मुस्तहब नहीं नमाज़े जनाज़ा का लौटाना।

### जुमा और जमाअत के उज़्र

जुमा और जमाअत इन उज़्रों से छोड़ सकता है। बारिश से जबकि कपड़ा भीगने भर हो और उससे बचने का सामान मौजूद न हो, और मर्ज़ से जबकि मर्ज़ की मशक्कत (तकलीफ़) बारिश की मशक्कत (परेशानी) की तरह हो और ऐसे मरीज़ (बीमार) से जिसकी अ़यादत (देखभाल) करने वाला कोई न हो और रिश्तेदार के क़रीबुल मौत होने से, और वो शख़्स जिससे मय्यित (मरने वाला) उन्सियत (सुकून) हासिल करे और क़रीबी रिश्तेदार की तरह हैं। बीबी और रिश्ते दामादी और ममलूक (गुलाम-नौकर) और सिद्दीक़ (दोस्त) और आज़ाद करने वाला और आज़ाद किया हुआ और मुअल्लिम यानी उस्ताद (इनके क़रीबुल मौत होने से भी जुमा और जमाअत छोड़ सकता है और ऐसे ही जबकि ये मरते वक़्त उसकी उन्सियत यानी मुहब्बत हासिल करें) और जुमा और

जमाअत के उजर ये भी हैं अपनी जान के खौफ से, या अपनी इज्जत के खौफ से, या अपने माल लुट जाने के खौफ से, और अपने कर्ज ख्वाह के डर से इस हालत में कि करजदार परेशान हाल हो, काबिले तकलीफ सजा माफ होने की उम्मीद से जुमा और जमाअत छोड़ सकता है और वक्त में गुन्जाइश होने के साथ हृदस की मुदाफअत (पेशाब या पाखाने की फरागत) से और काबिले सतर कपड़ा मुहय्या न होने से, और नौद का गुल्बा होने से और रात में सख्त (तेज) आँधी से और सख्त भूख और सख्त प्यास से, और सख्त ठण्डक से, और सख्त कीचड़ और जौहर के वक्त सख्त गर्मी से, और जाइज सफर में साथियों के छूटने के खौफ से और बदबूदार चीजें खा लेने से जबकि बदबू का दूर करना मुम्किन न हो और बाजारों की छतों के टपकने से (बारिश से टपकने से) और जलजले से।

### मुक्तदी होने की शर्तें

इक्तिदा (इमाम की पैरवी) सही होने की शर्त ये है कि मुक्तदी अपने इमाम की नमाज का बातिल (ग़लत) होना, बे वुजू होना या इसके अलावा का सबब न जानता हो, और ये कि मुक्तदी अपने इमाम की नमाज के बातिल होने का अक्दीदा न रखे जैसा कि दो गौर-फिक्र वाले क़िल्बे में मुख़्तलिफ़ हो जाएं, या दो बर्तन के पानी के बारे में मुख़्तलिफ़ हो जाएं, या दो कपड़ों के बारे में मुख़्तलिफ़ हो जाएं (एक गौर-फिक्र दूसरे के मुख़्तलिफ़ हो तो एक दूसरे की इक्तिदा सही नहीं) और जैसा कि हनफी जबकि शाफ़ई को इल्म हो गया कि हनफी इमाम ने अज़रूए इमाम शाफ़ई किसी फ़र्ज को छोड़ दिया तो इक्तिदा सही नहीं। ज़ाहिर कौल ये है कि इमाम इख़्तिलाफ़ की रिआयत करे और अपने मज़हब के लिहाज़ से मुकम्मल तौर पर नमाज अदा करे तो इक्तिदा सही है। और ये कि मुक्तदी इस नमाज की क़ज़ा के वाजिब होने का अक्दीदा न रखे, जैसा कि मुक़ीम (निवासी) तयम्मुम करे और ये कि (मुक्तदी ने जिसे इमाम समझा है)

इमाम मुक्तदी न हो, और ये कि इमाम अपनी इमामत के बारे में शक में न हो और ये कि इमाम उम्मी न हो। उम्मी वो है जो सूरए फ़ातिहा उम्दा तौर पर न पढ़ सके अगरचे कि एक हर्फ़ भी मगर जबकि मुक्तदी इमाम ही के मिस्ल हो तो उसकी इक्तिदा (पैरवी) सही है और ये कि मर्द औरत की इक्तिदा न किया हो। और अगर किसी के पीछे नमाज पढ़ा फिर मालूम हुआ कि इमाम काफ़िर था या इमाम पागल था, या इमाम औरत थी, या वो इमाम नहीं मुक्तदी था, या इमाम उम्मी था तो नमाज को लौटाए। मगर जब कि ज़ाहिर हुआ इमाम का बे वुजू होना या बे गुस्ल होना, या इमाम के बदन या कपड़े पर नजासते ज़ाहिरा (दिखाई देने वाली गन्दगी) का होना, या ज़ाहिर हुआ इमाम का रकअते ज़ाइद के लिये खड़ा होना (तो न लौटाए) और अगर मालूम था फिर इमाम का बे वुजू होना भूल गया बाद में ख़याल आया तो फिर से अदा करे।

### सेहतें जमाअत (जमाअत का सही होना)

जमाअत सही होने की सात शर्तें हैं।

पहली शर्त :- (अगर खड़ा होकर नमाज पढ़ रहा हो) मुक्तदी की ऐड़ी अपने इमाम की ऐड़ी से आगे न हो या मुक्तदी की सुरीन (चूतड़) इमाम से ऊँची न हो जबकि बैठकर नमाज पढ़ रहा हो, या मुक्तदी का पहलू इमाम से आगे न हो जबकि लेटकर नमाज पढ़ रहा हो, तो अगर इमाम व मुक्तदी बराबर हों (क़याम यानी खड़े होने में दोनों का क़दम और बैठने की हालत में दोनों की सुरीन और लेटने की हालत में दोनों का पहलू) तो मकरूह है। और मुस्तहब है मुक्तदी का अपने इमाम से क़लील तख़ल्लुफ़ (थोड़ा पीछे रहना) करना और मुक्तदी (जबकि एक मर्द मुक्तदी हो) इमाम के दाहिनी जानिब खड़ा हो फिर इमाम आगे बढ़ जाए या दोनों (मुक्तदी) पीछे हट आएँ और अफ़ज़ल ये है कि मुक्तदी पीछे हो जाएँ। और अगर दो मुज़क्कर (मर्द) हों तो इमाम के पीछे सफ़ लगाएँ और ऐसे ही एक औरत हो या चन्द औरतें हों तो इमाम के पीछे सफ़

लगाएं। और मुस्तहब है कि इमाम के पीछे पहले मर्द खड़े हों, फिर बच्चे खड़े हों (दूसरी सफ़ में) जबकि पहली सफ़ की तरफ़ बच्चे पहल न किये हों तो अगर बच्चे पहली सफ़ की तरफ़ सबक़्त किये हों यानी पहले ही पहली सफ़ में बैठ गए हों तो वो ज़्यादा हक़दार हैं, बच्चों के बाद फिर औरतों की सफ़ होगी। और मुस्तहब है कि औरतों की औरत इमाम बीच में खड़ी हो और आरी ग़ैर मस्तूर (नंगों) का इमाम उनके बीच में खड़ा हो, और मकरूह है कि मुक्तदी सफ़ से मुन्फ़रिद (तनहा) खड़ा हो, तो अगर सफ़ में जगह न पाए तो इमाम के साथ इहराम (तकबीर तहरीमा) बाँध ले फिर मुस्तहब है कि क़याम की हालत में सफ़ से एक शख्स को खींच ले और मुस्तहब है खींचा हुआ खींचने वाले की फ़रमांबरदारी करे।

**दूसरी शर्त :-** मुक्तदी अपने इमाम के इन्तिक़ालात (नमाज़ के रुकों की अदाएगी) जाने देखकर या सुनकर अगरचे कि मुबल्लिग़ (मुकब्बिर) से सुने।

**तीसरी शर्त :-** इमाम व मुक्तदी एक ही मस्जिद में जमा हों अगरचे कि फ़ासला ज़्यादा हो (फ़ासले की दूरी तीन सौ हाथ मिक्दार के बराबर) और बुनियादें बीच में हों और अगरचे कि दरवाज़ा बंद कर दिया गया हो बशर्ते कि गुज़रने का इमकान (उम्मीद) हो फिर अगर इमाम व मुक्तदी मस्जिद के अलावा (मैदान वगैरा) में हों तो ये शर्त है कि इमाम व मुक्तदी के दरम्यान और हर दो सफ़ के दरम्यान तीन सौ हाथ से ज़्यादा का फ़ासला न हो, और तीन सौ हाथ पे तीन हाथ इज़ाफ़ा भी हरज नहीं, और ये शर्त है कि इमाम व मुक्तदी के दरम्यान दीवार न हो या बंद दरवाज़ा न हो या बाब मरदूद यानी भेड़ा हुआ न हो या बंद खिड़की न हो और हरज नहीं है इमाम व मुक्तदी के दरम्यान सड़क का ख़लल अन्दाज़ होना, (उनके दरम्यान मौजूद होना) और न ही बड़ी नहर का बीच में होना और न ही दो कश्तियों के दरम्यान (समुंद्र का) ख़लल अन्दाज़ होना, और जब इमाम व मुक्तदी में से एक नीचे खड़ा हुआ और दूसरा ऊपर खड़ा हुआ तो मस्जिद

और आकाम (टीला, छोटी पहाड़ी) के अलावा में एक दूसरे के मुक़ाबिल होने की शर्त है। (मुहाज़ात मुक़ाबिल) का मतलब, नीचे वाले का सर और ऊपर वाले का क़दम मुक़ाबिल होना। और अगर इमाम मस्जिद में हो और मुक्तदी मस्जिद के बाहर हों तो मस्जिद के आखिर से तीन सौ हाथ का हिसाब है। हाँ जबकि मुक्तदी अपने घर की छत से मस्जिद के इमाम के नमाज़ की इक़्तिदा (पैरवी) किया तो इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि इक़्तिदा सही न हुई। और मकरूह है बिला हाज़त इमाम व मुक्तदी में से एक का दूसरे से बुलन्द होना।

**चौथी शर्त :-** इक़्तिदा या जमाअत की नियत, तो अगर बग़ैर नियत के इक़्तिदा की या नियत में शक के साथ इक़्तिदा की तो मुक्तदी की नमाज़ बातिल हो गई जब कि शक का इन्तेज़ार लम्बा हो गया हो।

**पाँचवीं शर्त :-** इमाम व मुक्तदी की नमाज़ के अफ़आले ज़ाहिरा (ज़ाहिरा इबादत) का मुवाफ़िक् होना, तो अगर अफ़आले ज़ाहिरा में इख़्तिलाफ़ हुआ मसलन फ़र्ज़ नमाज़ और सूरज गृहण की नमाज़ (इमाम फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ाए और मुक्तदी सूरज गृहण नमाज़ पढ़े या उसके बर अक्स) या फ़र्ज़ नमाज़ और जनाज़ा (इमाम नमाज़े जनाज़ा पढ़ाए और मुक्तदी फ़र्ज़ नमाज़ पढ़े या बर अक्स) तो इक़्तिदा सही न होगी। और सही है ज़ौहर की नमाज़ अ़स्र पढ़ाने वाले और मग़रिब पढ़ाने वाले की इक़्तिदा में और क़ज़ा नमाज़ सही है अदा पढ़ाने वाले के पीछे और उसके बर अक्स भी सही है, और फ़र्ज़ नमाज़ सही है नफ़िल पढ़ाने वाले के पीछे और उसके बर ख़िलाफ़ भी सही होगी। (नफ़िल नमाज़ सही होगी फ़र्ज़ पढ़ाने वाले के पीछे)।

**छठी शर्त :-** इमाम की मुवाफ़क़त (पैरवी) करना इमाम के फ़हश ग़ल्ती (बड़ी ग़ल्ती) सुन्नत में करने के बावजूद तो अगर इमाम सजदए तिलावत छोड़ दिया और मुक्तदी ने सजदा किया या बर अक्स किया (इमाम ने सजदए तिलावत किया और मुक्तदी ने छोड़ दिया) या

इमाम ने तशहहुद (अल्तहिय्यात) अव्वल फौत कर दिया और मुक्तदी तशहहुद अव्वल में बैठा (तशहहुद पढ़ा) तो मुक्तदी की नमाज़ बातिल (ख़राब) हो गई, और अगर इमाम तशहहुद में बैठा और मुक्तदी क़याम किया इस हाल में कि क़याम क़सदन था तो नमाज़ बातिल न हुई (इस सूरत में अगर भूल से खड़ा हो गया तो लौटाना लाज़िम वरना नमाज़ बातिल हो जाएगी) और मुस्तहब है कि मुक्तदी लौटाए।

**सातवीं शर्त :-** इमाम की मुताबअत (मुताबअत का मतलब: मुक्तदी का फ़ेअल (काम) व कौल (पढ़ना) इमाम की शुरुआत से बाद में हो) तो अगर मुक्तदी तकबीरे तहरीमा में इमाम के बराबर हो गया तो नमाज़ बातिल हो गई। और ऐसे ही मुक्तदी की नमाज़ बातिल हो जाएगी और दो फ़ेअली रुकन (जैसे सजदे) में मुक्तदी अपने इमाम पर आगे हो जाए या मुक्तदी बग़ैर उज़्र के दो फ़ेअली रुकन से इमाम से मुअख़्ख़र (पीछे) हो जाए। और अगर मुक्तदी इहराम (तहरीमा) के अलावा में इमाम के मक़ारिन (साथ) हुआ या मुक्तदी इमाम पर एक रुकने फ़ेअली से मुक़द्दम (आगे) हुआ या मुक्तदी इमाम से एक रुकने फ़ेअली से पीछे हुआ तो कोई हरज नहीं। और हराम है मुक्तदी का इमाम पर एक रुकने फ़ेअली (अदा किया जाने वाला रुकन जैसे रुकूअ, सजदा वगैरा) से मुक़द्दम (आगे) होना (और मुअख़्ख़र यानी पीछे होना मकरूह है) और अगर मुक्तदी ने तख़ल्लुफ़ (पीछे होना) किया किसी उज़्र के सबब तो उसके लिये तीन बड़े रुकन तक उज़्र मोअतबर है, मसलन क़िराअते वाजिबा की सुस्त रफ़्तारी के सबब बिला वसवसा तख़ल्लुफ़ किया यानी पीछे हुआ, या मुवाफ़िक् दुआए इस्तिफ़ताह में मशगूल होने के सबब तख़ल्लुफ़ किया, या उसका इमाम रुकूअ किया फिर मुक्तदी फ़ातिहा में शक के सबब तख़ल्लुफ़ किया, या फ़ातिहा का छूटना याद आने के सबब तख़ल्लुफ़ किया, या इमाम का जल्द क़िराअत करने के सबब तख़ल्लुफ़ किया इन तमाम सूरतों में तीन लम्बे रुकन तक तख़ल्लुफ़ (इमाम से पीछे

रह जाना) का उज़्र मोअतबर है। तो अगर तख़ल्लुफ़ ज़्यादा हो गया (बई तौर कि मुक्तदी फ़ातिहा पढ़ता हो और इमाम दूसरा क़याम कर ले) तो मुक्तदी मुफ़ारेक़त (अलाहदा होने) की नियत कर ले (अगर मुफ़ारेक़त की नियत का इरादा हो) और अगर चाहे तो (रुकन छोड़कर) इमाम की मुवाफ़िक्त (पैरवी) करे और सलाम के बाद एक रकअत और पढ़े (छूटी रकअत के बदले) ये हुक्म मुवाफ़िक् का है। मुवाफ़िक् वो है जो इमाम के साथ ब-क़द्र फ़ातिहा पा ले (चाहे पहली रकअत में या उसके अलावा में) और लेकिन मसबूक् (मसबूक् वो है जो इमाम के साथ इतना वक़्त न पाए जिसमें फ़ातिहा पढ़ने की गुंजाइश हो) तो जब इमाम रुकूअ किया हालाँकि मसबूक् सूरए फ़ातिहा मुकम्मल न पढ़ पाया था तो अगर मसबूक् फ़ातिहा से पहले किसी सुन्नत में मशगूल हुआ था मसलन दुआ, इफ़िताह या तअव्वुज (अऊजु बिल्लाह) में, तो वाजिब है कि सुन्नत के हुरूफ़ के मिक्दार (बराबर) सूरए फ़ातिहा से पढ़े, फिर (छूटा हुआ मुकम्मल करने के बाद) अगर इमाम को रुकूअ में पा लिया तो रकअत मिल गई वरना रकअत फौत हो गई। और अब वाजिब है कि (ऐतिदाल यानी इल्मीनान और अरकान) कि इमाम की मुवाफ़िक्त (पैरवी) करे और सलाम के बाद एक रकअत और पढ़े, और अगर मसबूक् (तकबीर तहरीमा के बाद) किसी सुन्नत में मशगूल न हुआ था (बल्कि फ़ातिहा पढ़ने में मशगूल था) तो क़िराअत फ़ातिहा क़तअ (ख़त्म कर दे) और इमाम के साथ रुकूअ करे ये रकअत पूरी शुमार होगी।

### मसबूक् की रकअत

और जिस शख्स ने पाक इमाम को रुकूअ की हालत में पाया (और सूरए फ़ातिहा मुकम्मल पढ़ना मुम्किन न था) और वो इमाम के साथ (हालते रुकूअ में) मुत्मइन हो गया। इमाम के सर उठाने से पहले तो रकअत पा गया, और अगर इमाम को रुकूए ज़ाईद में पाया या कुसूफ़ैन (सूरज गृहण की नमाज़, चाँद गृहण की नमाज़) की दूसरी रकअत में

पाया तो रकअत न मिली।

### इमामत की सिफ़तें (विशेषताएँ)

इमामत का मुस्तहिक (हक़दार) वाली (बादशाह, हाकिम) है। तो वाली इमामत के लिये खुद आगे बढ़ जाए या दूसरे को आगे बढ़ा दे अगरचे कि नमाज़ वाली (हाकिम) की मिल्कियत के अलावा (दूसरे की ज़मीन और मिल्कियत) में पढ़ी जाए और (वाली के बाद) इमामत का हक़दार साकिन (ज़मीन से फ़ायदा उठाने वाला) है वो साकिन फ़ायदे का हक़दार चाहे मिल्क से हो या अरियत (माँगे) से हो या मन्फ़अत (लाभ) का हक़दार किराए से हो या हक़दार वक्फ़ से हो, या हक़दार वसियत से हो या उसके अलावा (यानी ज़मीन जिसके इस्तेमाल में हो) वो खुद इमामत करे, या दूसरे को बढ़ाए सिवाए चन्द मसाइल में कि अरियत (माँगे में) देने वाला मुस्तईर (माँगे में लेने वाले) से ज़्यादा हक़दार है और सैय्यद (आका) इमामत का अपने गुलाम से ज़्यादा हक़दार है मकातिब (गुलाम) के अलावा और इमाम रातिब (मुकर्रर) इमामत का ज़्यादा हक़दार है वाली (हाकिम) के अलावा (अफ़राद से), इमाम मुकर्रर खुद पढ़ाए, या किसी को नाइब (जानशीन) बनाए। फिर अगर ज़िक्र किये गए ऐतबार में सब बराबर हों तो इमामत का हक़दार ज़्यादा शरीअत (दीनी मसाइल) जानने वाला है फिर क़ारी (ज़्यादा क़िराअत जानने वाला) इमामत का हक़दार है, फिर परहेज़गार इमामत का हक़दार है, फिर साबिक़ बिल हिजरत (जो पहले हिजरत (धर्म-प्रवास) किया हो या जिसके बाप दादा हिजरत में अव्वल हों) इमामत का हक़दार है, फिर साबिक़ बिल इस्लाम (इस्लाम क़बूल करने में पहल करने वाला) इमामत का हक़दार है। फिर उमदा हसब व नसब (नस्ल व ख़ानदान) वाला इमामत का हक़दार है, फिर नेक नाम इमामत का हक़दार है, फिर उम्दा साफ़ सुथरा कपड़ा पहनने वाला इमामत का हक़दार है। फिर पाकीज़ा बदन इमामत का हक़दार है और पाक सनअत (पेशा) व तिजारत वाला

इमामत का हक़दार है, फिर अच्छी आवाज़ वाला इमामत का हक़दार है। फिर ख़ूबसूरत (हसीन) इमामत का हक़दार है। अगर पेश की गई ख़ूबियों में सब बराबर हों तो कुरआ अन्दाज़ी में (पर्ची डालने में) जिसका नाम निकले वो इमामत का हक़दार है। और आदिल (इन्साफ़ वाला) इमामत का फ़ासिक़ (बदकार) से ज़्यादा हक़दार है अगरचे कि फ़ासिक़ फ़कीह तर (ज़्यादा मसाइल जानने वाला) और क़ारी हो, और बालिग़ इमामत का बच्चे से ज़्यादा हक़दार है अगरचे कि बच्चा फ़कीह (आलिम) व क़ारी हो। और आज़ाद इमामत का ज़्यादा हक़दार है गुलाम से, और आज़ाद ग़ैर फ़कीह और गुलाम फ़कीह बराबर हैं और मुक़ीम (निवासी) की इमामत मुसाफ़िर से अफ़ज़ल है। और हलाल बच्चा (आदमी) की इमामत वलदुज्ज़िना (ज़िना से पैदा शुदा) से अफ़ज़ल है, और बे अंख़यारा (नाबीना) बीना (अंख़यारे) की तरह है।

### जमाअत से मुतअल्लिक़ सुन्तें

मुस्तहब है जमाअत का, इक़ामत के (तकबीर के) अलफ़ाज़ ख़त्म होने के बाद खड़े होना, और सफ़ सीधी करना, और सफ़ सीधी करने का हुक्म करना और सफ़ सीधी करने का काम इमाम ताकीद से करे, और सबसे अफ़ज़ल पहली सफ़ है तो अव्वल सफ़ मर्द (मुज़क्कर) की है। और मकरूह है फ़ासिक़ (दाढ़ी मुंडे या बदकार) की इमामत, और मकरूह है बग़ैर ख़ल्ता किये हुए की इमामत, और मकरूह है बिदअती की इमामत, और मकरूह है तुल्ली ज़बान वाले की इमामत और थीथा फ़ाफ़ा करके बोलने वाले की इमामत, और वा वा बोलने वाले की इमामत मकरूह है। और ऐसे ही मकरूह है जमाअत करना मस्जिद में जिसमें इमाम मुकर्रर हो और ग़ैर मतरूक़ मस्जिद हो (ग़ैर मतरूक़, सड़क और स्टेशन की मस्जिद न हो) मगर जब कि इमाम मुकर्रर ग़ायब हो और अव्वल वक़्त की फ़ज़ीलत छूट जाने का ख़तरा हो और फ़ितना फैलने का

अन्देशा न हो तो सुन्नत है जमाअत करना। और मुस्तहब है कि इमाम तकबीर जोर से कहे और समिअल्लाहु लिमन हमि-द जोर से कहे, और सलाम जोर से कहे और मुस्तहब है कि मसबूक तमाम जिक्र वाली चीजों में इमाम की पैरवी करे।

### मुसाफिर की नमाज़

जाइज़ है लम्बे जाइज़ सफ़र के मुसाफिर के लिये कि जौहर और अ़स और इशा में दो दो रकअत की क़स करे (चार रकअत की जगह दो रकअत पढ़े) चाहे वो नमाज़ अदा हो या सफ़र की छूटी हुई क़ज़ा हो। न कि हज़र (घर वाली) की क़ज़ा नमाज़ (क्योंकि हज़र की फौत शुदा सफ़र में भी पूरी पढ़ना लाज़िम है) और न मश्कूक नमाज़ जिसमें शक हो कि सफ़र की क़ज़ा है या हज़र की? (तो शक वाली क़ज़ा नमाज़ मुकम्मल पढ़ी जाएगी) और लम्बा सफ़र दो दिन दो रात दरम्यानी पैदल चाल की दूरी के बराबर है। मील के हिसाब से इसकी मिक्दार 48 मील है और एक मील छैः हजार गज़ के बराबर और गज़ चौबीस उंगुल की होती है। और जब तीन मन्ज़िल से कम का फ़ासला या सफ़र हो तो क़स से मुकम्मल अफ़ज़ल है, और उसके लिये तमाम पढ़ना अफ़ज़ल है जिसके दिल में क़स की कराहियत पाई जाए। (आज के 80 किलोमीटर + 640 मीटर यानी 48 मील)

### सफ़र का सुबूत

और सफ़र की इब्तिदा शहर पनाह वाले शहर में शहर पनाह (क़िला या चार दीवारी या हद बन्दी) से निकल जाने से होती है। और जिसमें शहर पनाह न हो तो सफ़र की इब्तिदा आबादी से निकल जाने से होती है। और समुद्र से मिले शहर में सफ़र की इब्तिदा शहर से निकलने और कश्ती पर सवार होने से शुरु होती है। और हवाई अड्डे पर पहुँचने पर हवाई सफ़र की इब्तिदा हो जाती है। और जिसमें शहर पनाह न हो और वो ख़ेमे या तन्बु में रहता हो तो सफ़र की इब्तिदा मुहल्ला पार कर जाने से होती है। और सफ़र की इन्तिहा ख़त्म हो जाती है, वतन के शहर पनाह तक मुसाफिर के पहुँचने से, या सफ़र ख़त्म हो जाएगा मुसाफिर के शहर की

आबादी में दाख़िल हो जाने से जबकि शहर ग़ैर मुसव्वर (बग़ैर चार दीवारी वाला) हो, और सफ़र की इन्तिहा हो जाती है अपने वतन लौटने की नियत करने से और सफ़र की इन्तिहा हो जाती है ऐसी जगह पहुँचने से जहाँ मुस्तक़िल इक़ामत (ठहरने) की नियत किया हो, या जहाँ मुकम्मल चार दिन चार रात ठहरने की नियत किया हो (दो दिन दाख़िल होने व ख़ारिज होने के अलावा) (तो वो मुसाफिर न रहा बल्कि मुक़ीम (निवासी) हो गया) या क़याम किया हो किसी ऐसी हाजत की वजह से कि वो हाजत ज़िक्र की गई मुद्त ही में पूरी होगी अगरचे कि हर हर लम्हा हाजत पूरी होने की उम्मीद लगी हो तो उसे अठारवें दिन तक क़स की रुख़सत है। (दो दिन दाख़िल व ख़ारिज होने के अलावा) (और मुसाफिर होने के लिये इराद-ए ख़ास शर्त है) तो जाइज़ नहीं कि हाइम (हैरान शख़्स जिसे मालूम न हो कि कहाँ जाना है?) क़स करे, और जाइज़ नहीं कि क़र्ज ख़्वाह (ऐसा आदमी जिसकी क़र्ज अदा करने की नियत न हो) क़स करे, और जाइज़ नहीं कि भगौड़ा गुलाम क़स करे, और क़स न करें वो बीवी और गुलाम जिन्हें मक़सदे सफ़र मालूम न हो (मगर जब क़स की दूरी तय हो जाए तो बीवी और गुलाम दोनों क़स करें।)

### बअज़ क़स की शर्तें

क़स की चन्द शर्तें हैं (1) क़स जाइज़ होने का इल्म होना (2) और मुक़ीम (मुकम्मल (पूरी) नमाज़ पढ़ने वाला) और मश्कूकुस्सफ़र (जिसे मुसाफिर होने का शक हो) का मुक्तदी न होना (3) तहरीमा (पहली तकबीर) के वक़्त क़स की नियत होना (और सलाम फेरने तक नियते क़स के ख़िलाफ़ काम का न पाया जाना) (4) शुरु से आख़िर तक नमाज़े सफ़र पर साबित व बरक़रार रहना।

### जमा बैनुस्सलातैन (दो नमाज़ों का जमा करना)

जाइज़ है सफ़र क़स में और बारिश के दिनों में जौहर अ़स का एक साथ जमा करना, और जाइज़ है मग़रिब और इशा को एक साथ जमा करना मुक़द्दम व मुअख़्ख़र (आगे-पीछे) करके (इनमें हर नमाज़ अदा

शुमार की जाएगी) और जमा न करना अफ़ज़ल है, सिवाए उस शख्स के जो अपने दिल में जमा सलातैन (दो नमाज़ जमा करने) की कराहत पाए और सिवाए उस शख्स के जो दो नमाज़ों के जमा होने में शक करे (तो जमा करना अफ़ज़ल है) और सिवाए उस शख्स के जो मुन्फ़रिद (तन्हा) पढ़ेगा जबकि जमा सलातैन न की जाए (और जमा सलातैन की जाए तो जमाअत के साथ पढ़ेगा) तो जमा सलातैन अफ़ज़ल है।

और जमा तक्दीम (अव्वल या पहले वाली के साथ जमा करने) की चार शर्तें हैं। (1) पहली नमाज़ से इब्तिदा करना। (2) पहली नमाज़ में जमा की नियत करना अगरचे कि सलाम के साथ (पहली नमाज़ के सलाम के साथ) (3) दोनों नमाज़ों के दरम्यान मवालात (पे दरपे लगातार अदा होना) (अगर दोनों नमाज़ों के दरम्यान दो रकअत नमाज़ का फ़ासला हो जाए तो हरज नहीं।) (4) पहली नमाज़ की तकबीर तहरीमा के वक़्त से दूसरी नमाज़ की तकबीर तक सफ़र का बरक़रार रहना।

और जमा ताख़ीर (बाद वाली के साथ जमा करने) में दो शर्तें हैं।

(1) पहली नमाज़ का वक़्त निकलने से पहले जमा ताख़ीर की नियत करना अगरचे कि एक रकअत नमाज़ पढ़ने के बराबर वक़्त हो। (2) दूसरी नमाज़ के पूरा होने तक सफ़र का बरक़रार रहना (जब ये शर्तें पाई जाएं तो पहली नमाज़ अदा होगी वरना क़ज़ा होगी)। वरना ज़ोहर और मगरिब क़ज़ा हो जाएंगी।

और बारिश के दिनों में सिर्फ़ जमा तक्दीम (अव्वल के साथ) जाइज़ है उन लोगों के लिये जो जमाअत से नमाज़ पढ़ने का इरादा करें ऐसी मस्जिद या मकान में जो उनसे दूर हो और रास्ते में बारिश से तकलीफ़ होती हो।

### नमाज़े जुमा

वाजिब है जुमे की नमाज़ हर मुकल्लफ़ (एहल), आज़ाद, मुज़व्वर (मर्द), मुक़ीम (निवासी), ग़ैर मरीज़ और ज़िक्र किये गए उज़्र

वालों के अलावा पर और नमाज़े जुमा वाजिब है मरीज़ पर और माज़ूर पर भी जबकि जुमे की इक़ामत (तकबीर) के वक़्त वो वहाँ मौजूद हो तो उस पर जुमा वाजिब है। और वाजिब है जुमे की नमाज़ उन लोगों पर जिन्हें जुमे की जगह के किनारे से खड़े होकर बुलन्द आवाज़ के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दे जबकि माहोल पुरसुकून हो और शोर शराबा न हो रहा हो। और जुमे की नमाज़ वाजिब नहीं है उस शख्स पर जो जाइज़ लम्बे सफ़र या जाइज़ थोड़े सफ़र पे हो, और हराम है जुमे के दिन फ़ज़्र के बाद सफ़र करना मगर ये कि रास्ते में जुमा पाना मुम्किन हो। या जिसको रफ़ीकों (साथियों) से तख़ल्लुफ़ (साथ छूट जाने) के सबब वहशत होगी (तो जाइज़ है जुमे के दिन सफ़र करना) और सुन्नत है माज़ूरों के लिये जुमे के दिन कि ज़ोहर की जमाअत करें और जमाअत छुपकर पढ़ें (जमाअत का इज़हार न करें) जबकि उनका उज़्र पोशीदा हो। और जिसकी ज़ोहर की नमाज़ सही हो उसकी नमाज़े जुमा सही होगी। और जिस पर जुमा वाजिब हो तो उसका ज़ोहर का तहरीमा (पहली तकबीर यानी नियत) बाँधना इमामे जुमा के सलाम फेरने से पहले सही नहीं है, और मुस्तहब है उस माज़ूर के लिये जिसे उज़्र ख़त्म होने की उम्मीद हो कि वो अपनी ज़ोहर की नमाज़ देर से अदा करे जुमे से मायूस होने तक।

### जुमा सही होने की शर्तें

जुमा सही होने की कुछ ज़ाइद शर्तें हैं।

**पहली शर्त :** वक़्त ज़ोहर हो तो जुमे की क़ज़ा नहीं, अगर ज़ोहर का वक़्त बिल्कुल तंग हो गया (जिसमें दो ख़ुत्बों की गुंजाइश न हो) तो जुमे की बजाए ज़ोहर का तहरीमा (नियत, अल्लाहु अकबर) बाँधे।

**दूसरी शर्त :** शहर के इलाक़े या आबाद बस्ती में जुमा कायम करना।

**तीसरी शर्त :** उस जुमे से पहले या उसके मक़ारिन (मुत्तसिल-क़रीब) जुमे का उसी शहर या उसी बस्ती में न होना मगर एक मस्जिद में नमाज़ियों की तंगी के वक़्त।

**चौथी शर्त :** जमाअत और जमाअत के लिये शर्त चालीस मुसलमान मुजवकर (मर्द), मुकल्लफ (एहल), आज़ाद, मुतवत्तिन (वतन वाले निवासी) हैं। और मुतवत्तिन वो शख्स है जो हाजत के अलावा बक़िया वक्तों में वहाँ क़्याम करे (यानी ज़्यादातर वहाँ रहता हो) तो अगर जुमे की जमाअत में चालीस लोगों से कम हो गए तो वो नमाज़ जोहर की हो गई, और जाइज़ है कि जुमे का इमाम गुलाम हो, या मुसाफ़िर हो या बच्चा (तमीज़ वाला) हो जबकि चालीस अफ़राद (लोग) पर तादाद बढ़ गई हो।

**पाँचवीं शर्त :** दो ख़ुत्वों का नमाज़ से पहले होना, और दोनों ख़ुत्वों में पाँच फ़र्ज़ हैं।

**ख़ुत्बे के रुक्न :-** (1) अल्लाह की हम्द बयान करना (2) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजना (3) तक्वे (परहेज़गारी) की वसियत करना, ये तीन अरकान दोनों ख़ुत्वों में वाजिब हैं। (4) एक आयत मअना दार की क़िराअत किसी एक ख़ुत्बे में करना। (5) मोमिनों के लिये दुआ करना दूसरे ख़ुत्बे में। और दोनों ख़ुत्वों की शर्त है, क़्याम करना क़ुदरत वाले शख्स के लिये। और दोनों ख़ुत्वों का अरबी में होना, और दोनों ख़ुत्वों का ज़वाल के बाद होना, और दोनों ख़ुत्वों के दरम्यान जुलूस (बैठना) इत्मीनान के साथ करना, और ख़ुत्बा सुनाना इतनी तादाद को, जिनसे जुमे की जमाअत मुनअकिद (काइम) होती है (यानी चालीस अफ़राद को), और दोनों ख़ुत्वों के दरम्यान पे दरपे (लगातार) होना, और दोनों ख़ुत्वों और नमाज़ के दरम्यान पे दरपे होना। और हृद्से असग़र (छोटी नापाकी) और हृद्से अकबर (बड़ी नापाकी) से पाक होना और नजासत (नापाकी) से पाक होना और सतरे औरत (ज़रूरी जिस्म) छुपाने के लाइक़ कपड़ा होना।

### ख़ुत्बे की सुन्नतें

सुन्नत है ख़ुत्बे का मिम्बर पर देना, तो अगर मिम्बर न हो तो

बुलन्द जगह पर खड़े होकर देना। और सुन्नत है कि इमाम सलाम करे मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त और मिम्बर पर चढ़ते वक़्त और सुन्नत है कि सलाम करे लोगों से मुतवज्जेह होते वक़्त। और सुन्नत है इमाम का अज़ान के वक़्त बैठना, और लोगों की तरफ़ रुख़ करना, और सुन्नत है कि इमाम असा (लाठी) पर टेक ले बाएं हाथ से और दाहिना हाथ मिम्बर पर रखे, और इमाम मिम्बर से उतरने में जल्दी करे और मकरूह है इमाम का इल्तिफ़ात करना (रुख़ इधर उधर फेरना), और हाथ से इशारा करना और मिम्बर का खटखटाना। और मुस्तहब है कि इमाम पहली रकअत में "सब्बिहिस म" पढ़े और दूसरी रकअत में "सूरए गाशिया" पढ़े और ब आवाज़ बुलन्द पढ़े।

### जुमे की सुन्नतें

सुन्नत है जुमे में हाज़िर होने वाले के लिये गुस्ल करना और गुस्ल का वक़्त जुमे के दिन फ़ज़्र से है। और सुन्नत है गुस्ल का नमाज़े जुमा को जाने के वक़्त तक देर से करना और सुन्नत है सुबह सवेरे मस्जिद में जाना इमाम के अलावा, और सफ़ेद कपड़े पहनना और नज़ाफ़त, पाकी व सफ़ाई हासिल करना, बाल वगैरा साफ़ करना, और खुशबू लगाना और सुकून व वकार (इज़्ज़त) के साथ मस्जिद जाना, और क़िराअते कुरआन या ज़िक्र में मशगूल रहना रास्ते में, और क़िराअत या ज़िक्र में मशगूल रहना मस्जिद में। और ख़ामोश रहना ख़ुत्बे के वक़्त क़िराअत व ज़िक्र छोड़कर के। और सुनने वाले की तरफ़ निस्बत करते हुए कलाम व ज़िक्र का छोड़ना, और सुनने वाले के अलावा के लिये कलाम का छोड़ना न कि ज़िक्र को। और मकरूह है ख़ुत्बे में हाज़िरीन का इहतेबा करना (चादर में लिपटकर ख़ुत्बा सुनना) और मकरूह है ख़ुत्बे के वक़्त मस्जिद में दाख़िल होने वाले का सलाम करना लेकिन जवाब देना वाजिब है। और मुस्तहब है छींकने वाले की तश्मियत करना यानी जबकि छींकने वाला अलहम्दु लिल्लाह कहे तो यरहमुकल्लाह कहना मुस्तहब है। और मुस्तहब है जुमे के दिन और जुमे की रात सूरए कहफ़ पढ़ना। और जुमे के दिन और जुमे की रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कसरत

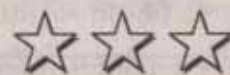
(ज्यादती) से दुरूद पढ़ना। और दुआ कबूल होने की घड़ी इमाम का खुत्बे के लिये जुलूस (बैठने) और उसके सलाम के दरम्यान की घड़ी है। और मकरूह है कदम फलाँगकर आगे जाना, और इमाम का कदम फलाँगकर आगे जाना मकरूह नहीं, और उस शख्स के लिये जिसके आगे की सफ में खाली जगह हो। और अजीम (महान) शख्स का कदम फलाँगकर आगे जाना मकरूह नहीं जबकि वो ख़ास जगह से उन्सियत (लगाव) रखता हो। और हराम है दूसरी अज़ान के बाद कारोबार वगैरा में मशगूल रहना। और मकरूह है ज़वाल के बाद जुमे से बे परवाह रहना और कारोबार वगैरा में मशगूल रहना। और जुमा नहीं हासिल होगा मगर मुकम्मल एक रकअत पा लेने से। तो अगर इमाम को दूसरी रकअत के रुकूअ के बाद पाया तो जुमे की नियत करे और वो जोहर पढ़े। और जब इमाम को जुमे की नमाज़ में हदस लाहिक हो गया (बे वुजू हो गया) या जुमे के अलावा किसी भी जमाअत वाली नमाज़ में हदस लाहिक हो गया तो किसी मुक्तदी को अपना ख़लीफ़ा (नाइब) बना दे बशर्ते कि वो मुक्तदी इमाम की नमाज़ का मुवाफ़िक़ (साथी) हो, और रिआयत करेगा ख़लीफ़ा मसबूक़ अपने इमाम की नमाज़ के तरतीब (सिलसिले) की (क्योंकि ख़लीफ़ा मसबूक़ इमाम के कायम मक़ाम हो गया) और इसी वजह से तो वाजिब नहीं है मुक्तदियों पर इक़्तिदा की जदीद (नए इमाम के पीछे नई) नियत करना।

### नमाज़े ख़ौफ़

जब घमासान का जाइज़ क़िताल (जंग) जारी हुआ, या क़ैद से जाइज़ भागना भागा, या दुश्मन से जाइज़ भागना भागा, या दरिन्दे से भागा, या अपने माल व आबरू या ग़ैर के माल व आबरू का ज़ालिम से बचाव किया, वो माज़ूर है, क़िल्बा छोड़ने में या फ़ेअले कसीर (ज्यादा अमल) करने में, और सवार होने में और रुकूअ और सुजूद में हलका इशारा करने में (यानी इन उज़रों के सबब नमाज़ बातिल न होगी) और माज़ूर न जाना जाएगा चीख़ने चिल्लाने में। नोट:- सजदे का इशारा रुकूअ के इशारे से ज्यादा झुककर करे।

### लिबास

हराम है रेशम और क़ज़ का इस्तेमाल मुज़व्वर (मर्द) बालिग़ के लिये सिवाए हाज़त व ज़रूरत के मसलन ख़ारिश (खुजली) की वजह से और सोज़िश (जलन) की वजह से और चेचड़ी (बदन का कीड़ा जूँ की तरह) की वजह से (इनका इस्तेमाल जाइज़ है) और हलाल है रेशम और ग़ैर रेशम से तैयार कपड़े का इस्तेमाल जबकि दोनों (रेशम और ग़ैर रेशम) वज़न में बराबर हों। और हलाल है बच्चे को रेशम का लिबास पहनाना और सोने चाँदी के ज़ेवर पहनाना, और हलाल है कअबे पर रेशम का ग़िलाफ़ चढ़ाना और आदतन (लोगों में जितना इस्तेमाल हो) रेशम का किनारा (गोट) लगाना और बेल बूटे लगाना, और हलाल है चार उंगुल के मिक्दार रेशम का पैवन्द लगाना, और रेशम के धागे से रफू करना और रेशम के धागे से सिलना। और हलाल है रेशम के धागे में तस्बीह के दानों का पिरोना, और रेशम के कपड़े पर बैठना जबकि उस पर कोई कपड़ा पड़ा हो, और हराम है मर्द के लिये ज़अफ़रानी रंग और केसरी रंग का इस्तेमाल करना। और सुन्नत है मर्द के लिये एक मिस्क़ाल से कम वज़न की अंगूठी पहनना खुन्सुर (कन उंगली) में और दाहिनी कन उंगली में पहना अफ़ज़ल है। और मकरूह है मर्द के लिये कपड़े और इज़ार (पाजामे) का टख़्नों से नीचे लटकते रहना, और हराम है टख़्नों से नीचे फ़ख़्र व तकब्बुर से पहनना, और मकरूह है बग़ैर किसी शरई ग़र्ज़ के मोटा झूटा लिबास पहनना।



## नमाज़े ईदैन

ईदैन (ईदुल फ़ित्र, ईद कुरबानी) की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा है। और ईदैन का वक़्त सूरज तुलूअ होने से लेकर ज़वाल तक है। और सुन्नत है ईदैन की नमाज़ का एक नेज़ा बुलन्द होने तक ताख़ीर (देर) करना। और ईदैन की नमाज़ का मस्जिद में अदा करना मगर जबकि मस्जिद तंग पड़े, और सुन्नत है ईदैन की रातों को इबादत के ज़रिये ज़िन्दा रखना (शब बेदारी करना) और सुन्नत है आधी रात से गुस्ल करना (फ़ज़्र के बाद गुस्ल करना अफ़ज़ल है) और सुन्नत है ईदैन के दिन खुशबू लगाना और बनाव सिंगार करना, यहाँ तक कि ईदैन में हाज़िर होने से माज़ूर (मजबूर) भी ये करे, और ईदगाह जाने वाला, और बच्चे और बूढ़े भी, और सुन्नत है बूढ़ियों का काम काज के लिबास में खुशबू इस्तेमाल किये बग़ैर ईदगाह नमाज़ के लिये जाना, और सुन्नत है ईदगाह सवेरे जाना सिवाए इमाम के, और सुन्नत है ईदगाह पैदल जाना, और दूसरे क़सीर (छोटे) रास्ते से वापस आना जैसा कि तमाम इबादतों में है। और सुन्नत है इमाम के लिये ईद कुरबानी में ईदगाह जल्दी जाना और ईदुल फ़ित्र में थोड़ी देर करना। और सुन्नत है ईदुल फ़ित्र में नमाज़े ईद से पहले खाना-पीना। और सुन्नत है खज़ूर खाना और ताक़ अदद (बे जोड़) खाना, और मुस्तहब है कि इमाम व मुन्फ़रिद (तन्हा) पहली रकअत में क़िराअत फ़ातिहा से पहले सात तकबीरें कहें सिवाए तकबीरे तहरीमा (पहली तकबीर) के। हर तकबीर में रफ़ू यदैन (दौनों हाथ काँधों तक उठाने) के साथ, दुआए इस्तिफ़्ताह और तअव्वुज़ के दरम्यान, और दूसरी रकअत में पाँच तकबीरें कहें (रफ़ू यदैन के साथ पहली रकअत की तरह) और मसबूक़ (देर से शामिल होने वाला) तकबीर न कहेगा मगर जितना पाया (उतना ही कहे) और सुन्नत है कि पहली रकअत में सूरए काफ़ या सूरए अअ़ला पढ़े और दूसरी रकअत में “इक्तरबतिस्साअतु” या सूरए “गाशिया” पढ़े (सूरए काफ़ के साथ इक्तरबतिस्साअतु और सूरए अअ़ला के साथ सूरए

गाशिया) और बेहतर है हर दो तकबीरों के दरम्यान बाक़ियात सालिहात पढ़ना वो ये है “सुब्क़ानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि वला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक़बर” और सुन्नत है कि बाक़ियात सालिहात आहिस्ता कहे और हर दो तकबीरों के दरम्यान दाहिने हाथ को बाएं हाथ पर सीने के नीचे रखते हुए, फिर नमाज़ के बाद मन्दूब (बेहतर) है कि इमाम दो खुत्बे दे, दोनों खुत्बों से पहले ख़फ़ीफ़ जलसा करे (थोड़ी देर बैठे) और दोनों खुत्बों में मुनासिब हाल (माहौल के मुताबिक़) ख़िताब (नसीहत) करे, और मुस्तहब है पहला खुत्बा शुरु करने से पहले नौ बार तकबीर कहना, और दूसरे खुत्बे में सात बार तकबीर कहना, तकबीर पे दरपे (लगातार) कहे।

## तवाबेअ ईदैन

### (दौनों ईद की वह चीज़ें जिनकी पैरवी ज़रूरी)

तकबीर कहे बुलन्द आवाज़ से हाजी के अ़लावा ईदैन की रातों में सूरज गुरुब होने के वक़्त से जबकि मर्द हो। तकबीर रास्तों में और ऐसे ही मस्जिदों और घरों में (और चलते फिरते बल्कि हर हाल में) कहे और मुअक्कद (ज़रूरी) है इजदहाम (भीड़) के साथ पे दरपे तीन तकबीर कहना, इसके बाद इतना ज़्यादा करना “लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक़बर वलिल्लाहिल हम्द” मन्दूब है। और मन्दूब (बेहतर) है “अल्लाहु अक़बर कबीरंव वलहम्दु लिल्लाहि कसीरंव व सुब्क़ानल्लाहि बुक़रतंव व असीला” का इज़ाफ़ा करना और तकबीर का विर्द इमाम के तहरीमा (नमाज़ के लिये अल्लाहु अक़बर कहने) तक बाक़ी रखना। और हाजी तकबीर कहे, यौमे नहर (कुरबानी के दिन) के जौहर से आख़िर तशरीक़ की सुबह तक और हाजी के अ़लावा (तमाम लोग) तकबीर कहें यौमे अरफ़ा की सुबह से आख़िर तशरीक़ की अ़स तक, और हाजी और ग़ैर हाजी ये तकबीर कहेगा हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद या नफ़िल नमाज़ के बाद चाहे नमाज़ अदा पढ़े या क़ज़ा पढ़े। और ये तकबीर नमाज़े जनाज़ा के बाद

(और नज़र वाली नमाज़ के बाद भी) कहेगा, और अगर नमाज़ के बाद तकबीर कहना भूल जाए तो जब याद आए तकबीर कहे और मन्दूब (बेहतर) है तकबीर कहना कुरबानी का जानवर देखने के वक़्त मअलूम दिन में, और वो दस ज़िलहिज्जा है। और जब लोग ज़वाल से पहले पिछली रात रूयते हिलाल (चाँद देखने) की गवाही दें तो इफ़्तार करें और नमाज़े ईद अदा करें। और अगर ज़वाल के बाद (या ज़वाल से पहले जबकि नमाज़े ईद की गुंजाइश नहीं थी) गवाही मिली और लोगों ने इस शहादत (गवाही) को सूरज डूबने से पहले क़बूल कर लिया तो इफ़्तार करें, नमाज़ ईद छूट गई और अब उसकी क़ज़ा की जाएगी और अगर बाद सूरज ग़रूब रूयते हिलाल की ख़बर मिली तो आइन्दा कल नमाज़े ईद पढ़ी जाएगी।

### सूरज गृहण और चाँद गृहण की नमाज़

सूरज गृहण की नमाज़ और चाँद गृहण की नमाज़, सुन्नते मुअक्कदा है कुसूफ़ (सूरज गृहण) की नमाज़ और खुसूफ़ (चाँद गृहण) की नमाज़ और उनकी कम से कम दो रकअत है। और मुस्तहब (बेहतर) है दो रुकूअ और दो क़याम का इज़ाफ़ा करना (या ये कि हर रकअत में रुकूअ के बाद क़याम करे और क़याम (खड़े होने) के बाद रुकूअ करे) और सुन्नत है लम्बा क़याम करना (पहली रकअत में फ़ातिहा के बाद सूरए बक्रा पढ़े, और दूसरी रकअत में आले इमरान) और सुन्नत है लम्बी रकअत करना और लम्बा सजदा करना और सुन्नत है चाँद गृहण में क़िराअत जहरी (ज़ोर से) करना, और सूरज गृहण में आहिस्ता क़िराअत करना, फिर नमाज़ के बाद इमाम दो ख़ुत्बे दे, या एक ख़ुत्बा (एक ख़ुत्बे का कौल छोड़ा हुआ है) दोनों ख़ुत्बों में लोगों को भलाई पर उभारे। और ख़त्म हो जाएगी सूरज गृहण की नमाज़ गृहण छूट जाने से और सूरज के ग़रूब (अस्त) हो जाने से और चाँद गृहण की नमाज़ फ़ौत (ख़त्म) हो जाएगी गृहण छूट जाने से और सूरज के तुलूअ (उदय) हो जाने से। और

फ़ौत नहीं होगी चाँद गृहण की नमाज़ फ़ज़ के तुलूअ हो जाने से और न ही चाँद के ग़रूब हो जाने से (जब तक सूरज तुलूअ न हो) और जब चन्द नमाज़ें जमा हो जाएं और फ़ौत (क़ज़ा) होने का ख़ौफ़ हो (वक़्त न होने के सबब) तो पहले फ़ज़ नमाज़ अदा की जाएगी और फिर नमाज़े जनाज़ा अदा की जाएगी, फिर नमाज़े ईदैन अदा की जाएगी, फिर कुसूफ़ (सूरज गृहण) की नमाज़ अदा की जाएगी। और अगर वक़्त में वुसअत (गुंजाइश हो, नमाज़ों के फ़ौत होने का ख़ौफ़ न हो) तो पहले जनाज़े की नमाज़ अदा की जाएगी, फिर कुसूफ़ की। और मन्दूब (बेहतर) है कि लोग ज़लज़ले और सख़्त आँधी के वक़्त दो रकअत नमाज़ मुन्फ़रिद (तन्हा-तन्हा) पढ़ें।

### नमाज़े इस्तिस्का

#### पानी तलब करने की नमाज़

इस्तिस्का की तीन किस्में हैं। (1) तन्हा-तन्हा दुआ करना (2) जमाअत के साथ किसी वक़्त भी दुआ करना। (3) नमाज़ के बाद दुआ करना (मुतर्जिम-अनुवादक)।

और सुन्नत है नमाज़ के बाद इस्तिस्का (बारिश) की दुआ करना अगरचे कि जुमे के ख़ुत्बे में करे और अफ़ज़ल ये है कि इमाम तमाम लोगों को नेकी (भलाई) का हुक्म दे और तीन दिन रोज़ा रखने का हुक्म दे, और चौथे दिन तमाम लोग रोज़े की हालत में गुस्स करे और नज़ाफ़त (पाकी-सफ़ाई) बाल वगैरा से हासिल करने के बाद काम काज के लिबास में, दिल में खुदा का ख़ौफ़ लिये अपने साथ बूढ़ों बच्चों और जानवरों को लिये जंगल (मैदान) की तरफ़ जाएं, दो रकअत नमाज़ ईद की तरह बारह तकबीरों के साथ पढ़ें और इमाम ईद की तरह दो ख़ुत्बे दे, या एक ख़ुत्बा दे और अफ़ज़ल है कि ख़ुत्बा नमाज़ के बाद दे, और ख़ुत्बे से पहले तकबीर के बजाए अस्तग़फ़िरुल्लाह पढ़ें (पहले में सात और दूसरे में पाँच बार) और ख़तीब दूसरे ख़ुत्बे की तिहाई के बाद क़िबले की

तरफ़ मुँह करे (जबकि पहले खुत्बे में न किया हो) और उलट दे इमाम अपने कपड़े और मुक्तदी अपने कपड़े (जुलूस यानी बैठने की हालत में) इस्तिस्का बाले किब्ला (किब्ले की तरफ़ मुँह) के वक़्त। (तहवील उलटना यानी कपड़े का दायाँ हिस्सा बाईं सिम्ट कर दे और इसके बर अक्स, कपड़े का ऊपरी हिस्सा नीचे कर दे और इसके बर अक्स) और मुबालगा (ज्यादती) करना चाहिये खुत्बाए सानिया की दुआ में, दुआ सिरी (आहिस्ता) हो या जहरी (बुलन्द) फिर दुआ से फ़रागत के बाद लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए (और लोगों को ताअत (तक़्वा) पर उभारे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूदो सलाम पढ़े और एक आयत या दो आयत की क़िराअत करे ओर मोमिनो व मोमिनात के लिये दुआ करे और खुत्बा अस्तग़फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम से ख़त्म करे, उल्टा कपड़ा पहने घर लौटे।)

### तवाबेए इस्तिस्का (नमाज़े इस्तिस्का की ज़रूरी बातें)

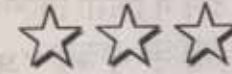
और सुन्नत है हर शख़्स के लिये कि साल की पहली बारिश के वक़्त अपने आज़ाए सतरे औरत (छुपाए जाने वाले ज़रूरी अंग) के अलावा बदन का हिस्सा खोल दे (कपड़ा निकाल दे) और गुस्ल करे और सैल यानी बाढ़ के पानी के बहाव में वुजू करे, तो अगर दोनों जमा न कर सका तो सिर्फ़ गुस्ल करे और अगर गुस्ल न कर सका तो सिर्फ़ वुजू करे और सुन्नत है कड़क (गरज) और बर्क़ (बिजली) चमकने के वक़्त तस्बीह पढ़े, वो ये है “सुद्धा-न मंयुसब्बिहर्अदु बिहमिदी वल मलाइकतु मिन ख़ीफ़तिही” तीन बार पढ़े। और बिजली बारिश और कड़क की तरफ़ निगाह न करे (बिजली चमकते वक़्त आँखों से न देखे) और बारिश नाज़िल होने के वक़्त ये दुआ पढ़नी चाहिये “अल्लाहुम-म सैबन हनीअंव व सैबन नाफ़िआ” और मन्दूब (वेहतर) है इसके बाद इतना ज़्यादा करना

“मुतिरना बिफ़दलिल्लाहि बरहमतिही” और लगातार बारिश और बारिश की ज़्यादती से नुक़सान व परेशानी के वक़्त ये दुआ पढ़े “अल्लाहुम-म हवालीना वला अलैना” और मकरूह है हवा को गाली देना।

### तारिके नमाज़

#### (नमाज़ छोड़ने वाला)

जिसने मकतूबा (फ़र्ज़) नमाज़ (पंज वक़ता में से किसी एक फ़र्ज़ नमाज़) का इन्कार किया उसने कुफ़्र किया या फ़र्ज़ नमाज़ सुस्ती, काहिली की वजह से छोड़ दी, या नमाज़ के लिये वुजू छोड़ दिया या जुमा छोड़ दिया अगरचे कि ज़ोहर पढ़े, तो वो मुस्लिम है, और वाजिब है उसे तलवार से क़त्ल करना जबकि तौबा न करे, तौबा तलब करने के बाद तो उसको क़त्ल किया जाए तअज़ीरन (सज़ा के तौर पर) न कि कुफ़्र की बिना पर।



## बाबुल जनाइज़ (बीमारी और मौत का बयान)

मुस्तहब (बेहतर) है कि हर शख्स मौत को दिल से याद करे, और मौत की याद कसरत से करे और मुस्तहब है कि नई तौबा के ज़रिये उसकी तैयारी करे, और मरीज़ (बीमार) को सबसे ज़्यादा करना चाहिये। और सुन्नत है मुस्लिम मरीज़ (बीमार) की इयादत (मिज़ाजपुरसी) करना अगरचे कि आँख दुखने के मर्ज़ की हो। और सुन्नत है मिज़ाजपुरसी दुश्मन बीमार की, और काफ़िर बीमार की भी जबकि पड़ोसी या क़रीबी हो और बेहतर है कि इयादत (मिज़ाजपुरसी) नागा करके करे (हर एक दिन के बाद इयादत को जाए) और बीमारपुरसी में तख़्फ़ीफ़ करे (थोड़ी देर बैठे) और बीमार की सेहत व सलामती की दुआ करे जबकि बीमार की ज़िन्दगी की उम्मीद हो, और अगर बीमार की ज़िन्दगी की उम्मीद न हो तो (इयादत करने वाला) उसे यानी बीमार को शौक़ दिलाए तौबा की, और वसियत की, और मरीज़ (बीमार) अल्लाह के साथ नेक गुमान रखे।

और मकरूह है बीमार का मौत से शिकवा (शिकायत) करना और मौत की तमन्ना करना दीन में किसी फ़िले के ख़ौफ़ के बग़ैर, अगर मौत की तमन्ना करनी ही पड़े तो यूँ करे “अल्लाहुम-म अह्यिनी मा मकानतिल हयातु ख़ैरन ली व अम्मितनी मा कानल मौतु ख़ैरन ली”

और मकरूह है बीमार को दवा खाने पर मजबूर करना। जब मौत की अ़लामत ज़ाहिर हो तो बीमार को दाहिने पहलू पर लिटा दिया जाए (और उसे क़िब्ला रुख़ कर दिया जाए) तो जब दाहिने पहलू पर लिटाना दुशवार हो तो बाएं पहलू पर लिटाया जाए, और अगर बाएं पहलू पर लिटाना दुशवार हो तो बीमार को सर की गुद्दी पर लिटा दिया जाए, और चेहरा और तलवे क़अबे की तरफ़ कर दिये जाएं और उसका सर किसी तकिये वग़ैरा से थोड़ा बुलन्द कर दिया जाए और मन्दूब (बेहतर) है “लाइला-ह इल्लल्लाह” की तलक़ीन (ज़ोर-ज़ोर से उसके पास पढ़ना) करना और मुस्लिम मय्यत को तलक़ीन का इसरार न करना, और मरीज़

से ये न कहा जाए कि कलमा पढ़ो कलमा पढ़ो। और अफ़ज़ल है कि तलक़ीन वारिस के अ़लावा कोई और करे, तो जब रूह निकल जाए तो उसकी आँखें बन्द कर दी जाएं, और उसकी दाढ़ी (जबड़े) चौड़ी पट्टी से बाँध दी जाए (ताकि मुँह खुला न रह जाए) और मय्यत के अ़ज़ा (अंग) नर्म कर दिये जाएं अगरचे कि तेल से ही हो जबकि नर्म करने की हाज़त हो और मौत का लिबास (जिस लिबास में मौत हुई) उतार दिया जाए और मय्यत का पूरा बदन हल्के कपड़े से ढक दिया जाए और मय्यत के पेट पे कोई वज़नी (भारी) चीज़ रख दी जाए और मय्यत को क़िब्ला रुख़ कर दिया जाए।

ज़िक्र किये गए तमाम काम उस (मय्यत) के महारिम (सगे रिश्तेदार) में जो ज़्यादा नर्मी से कर सकता हो वो अन्जाम दे और तमाम काम अन्जाम देते वक़्त मय्यत के लिये दुआ करता रहे और मय्यत के ज़िम्मे क़र्ज़ की अदाएंगी में जल्दी की जाए और उसकी वसियत के जारी करने में जल्दी की जाए और मुस्तहब है उसकी मौत का ऐलान करना जो नमाज़े जनाज़ा के लिये हो।

## गुस्ल मय्यत

फ़र्ज़े किफ़ाया है मय्यत को गुस्ल दिलाना, और कफ़न-दफ़न का इन्तेज़ाम करना, और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ना और उसका दफ़न करना, और गुस्ल कम से कम मय्यत के पूरे बदन पर पानी बहाना नापाकी को दूर करने के बाद, और सुन्नत है मय्यत को गुस्ल देना क़मीस में तन्हाई के मक़ाम पर, और अफ़ज़ल ये है कि मय्यत को छत के नीचे किसी तख़्त पर रखकर गुस्ल दिया जाए। और गुस्ल देने वाला और उसके साथ वाले पर वाजिब है कि अपनी आँख बिला ज़रूरत न खोलें (ज़रूरत के वक़्त देखने में हरज नहीं है) और सुन्नत है मय्यत का पेट गुस्ल देने वाला बाएं हाथ से ज़ोर से दबाए ताकि पेट की बची कुची गन्दगी निकल जाए ये काम (पेट का दबाना) मय्यत को बिठाने के बाद थोड़ा झुकाकर करे, और उस

वक्त खुशबूदार धूनी दी जाए, साथ-साथ खूब पानी बहाए और इसके बाद आगे और पीछे के मक़ाम धोए और लगी नजासत (गन्दगी) को चिथड़े से धोए (बाएं हाथ में लपेटकर और ऐसे ही तमाम बदन की नजासत (मैल कुचैल) धुलने के लिये बाएं हाथ में चीथड़ा लपेटना मन्दूब (बेहतर) है।) फिर दूसरा कपड़ा ले ताकि उससे मय्यत को मिसवाक कराए, और निकाल दे जो कुछ गन्दगी नाक में हो, और फिर वुजू कराए (तीन-तीन बार), फिर वुजू के बाद उस मय्यत का सर फिर उसकी दाढ़ी बेरी के पानी से धुले, फिर आगे से बदन का दाहिना हिस्सा (बदन का अगला हिस्सा गर्दन से क़दम तक) धोए, फिर आगे से बदन का बायाँ हिस्सा फिर मय्यत को बाईं करवट पर लिटाकर पीछे से बदन का दाहिना हिस्सा धोए, फिर दाहिने करवट पर लिटाकर बायाँ हिस्सा धोए और मन्दूब (बेहतर) है कि बेरी के उबले हुए पानी से गुस्ल दे (या मुल्तानी मिट्टी से आजकल साबुन से गुस्ल देना चाहिये) फिर ख़ालिस पानी से बेरी का असर ज़ाइल (दूर) कर दे, फिर ख़ालिस ठण्डे पानी में थोड़ा काफ़ूर मिलाकर सर से क़दम तक तीन बार पानी बहाए फिर मय्यत को किसी पाक कपड़े (तौलिया) से अच्छी तरह पोंछ दे अज़ाए मफ़ासिल (जोड़ वाले अंग) को नर्म करने के बाद, और मकरूह है मय्यत के बाल और नाखुन काटना (तराशना)। और बेहतर ये है कि मय्यत मर्द को मर्द गुस्ल दें और औरत मय्यत को औरतें गुस्ल दें, और वाजिब है मय्यत को तयम्मुम कराना जहाँ गुस्ल दुशवार हो। और अजनबी और अजनबिया के अ़लावा कोई और मौजूद न हो तो तयम्मु कराना वाजिब है (औरत मर गई और वहाँ अजनबी मर्द के अ़लावा कोई न हो, और मर्द मर गया और वहाँ अजनबी औरत के अ़लावा कोई औरत न हो तो तयम्मुम कराना वाजिब है।)

### कफ़न

कफ़न की मिक्दार कम से कम अज़ाए औरत (ज़रूरी बदन) छुपाने के काबिल एक कपड़ा है (उसे कफ़न वाजिब कहते हैं) और सुन्नत है मर्द के लिये तीन लिफ़ाफ़े यानी कपड़े (तीनों लिफ़ाफ़े पूरे बदन

छुपाने के काबिल हों) और औरत के लिये पाँच कपड़े, एक इज़ार (पैजामा या तहबन्द), फिर एक कमीस, उसके बाद एक ओढ़नी और उसके बाद दो लिफ़ाफ़े (चादर), और अफ़ज़ल है कफ़न का सफ़ेद होना, और कफ़न का धुला हुआ होना, और कफ़न का सूती कपड़े का होना अफ़ज़ल है। और मन्दूब (बेहतर) है कि कफ़न को अगर (खुशबूदार लकड़ी) की लकड़ी से धूनी दी जाए, और अफ़ज़ल है कि जनाज़ा पाँच आदमी उठाएँ और मन्दूब (बेहतर) है जनाज़े के लिये पैदल जाना, जनाज़े के आगे चलना, और जनाज़े के करीब रहना, और मन्दूब (बेहतर) है जनाज़ा ले चलने में जल्दी करना (मुराद दरम्यानी चाल है न बिल्कुल आहिस्ता न बिल्कुल तेज़ दौड़ने की तरह) और मकरूह है जनाज़े में (जनाज़ा ले जाते वक्त या दफ़न के वक्त) दुनियावी बातचीत करना और जनाज़े के साथ आग ले जाना, और मकरूह है औरतों का जनाज़े के साथ जाना।

### नमाज़े जनाज़ा

जनाज़े की नमाज़ के सात रुक़न (फ़र्ज़) हैं।

- (1) नियत, जैसा कि दूसरे तमाम फ़र्ज़ों में नियत है।
- (2) चार तकबीरें।
- (3) सूरए फ़ातिहा की क़िराअत।
- (4) क़याम (खड़ा होना), क़ुदरत वाले के लिये।
- (5) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दूसरी तकबीर के बाद दुरूद पढ़ना।
- (6) तीसरी तकबीर के बाद मय्यत के लिये दुआ करना।
- (7) सलाम।

और सुन्नत है नमाज़े जनाज़ा की हर तकबीर में रफ़ए यदैन (हाथ उठाना) करना, और सिरी (आहिस्ता) क़िराअत करना, और अक़ज़ु बिल्लाह पढ़ना, और सुन्नत नहीं है दुआए इस्तिफ़ताह पढ़ना, और नमाज़े जनाज़ा की शर्तें वही हैं जो दूसरी नमाज़ों की हैं।

और जाइज है गाइबाना नमाजे जनाजा पढ़ना, और दफन किये हुए की नमाजे जनाजा पढ़ना उस शख्स के लिये जो उनकी मौत के दिन नमाजे जनाजा पढ़ने का एहल हो सिवाए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्र के (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गाइबाना नमाजे जनाजा पढ़ना जाइज नहीं।) और लोगों में नमाजे जनाजा के ज्यादा हक्दार मय्यत के अस्बात यानी बाप, दादा, बेटा, पोता वगैरा हैं फिर जविल अरहाम यानी नाना, नवासा, भाँजा, मामू वगैरा हैं।

### शहीद

और हराम है शहीद को गुस्ल देना और उसकी नमाजे जनाजा पढ़ना और शहीद (फिकही यानी शरीअत में शहीद जिसकी नमाज व गुस्ल नहीं) वो शख्स है जो कुप्फार (या एक ही काफिर) से क़िताल (जंग) करने के सबब क़त्ल गाह में मर जाए (अगरचे कि अपने हथियार से चोट लगकर मर गया हो या किसी मुसलमान ने ही गुलती से मार दिया हो वो शहीद है।) और नातमाम बच्चे की भी नमाज नहीं पढ़ी जाएगी (हराम है) मगर जबकि ज़िन्दगी की निशानियाँ व आसार (मसलन बच्चे का चीखना वगैरा) पाए जाएं जैसे इख़्तिलाज (पपोटों का फड़कना) और वाजिब है नातमाम (अधूरे) बच्चे को गुस्ल देना (और कफ़न देना और उसको दफ़न करना) जबकि बच्चा चार महीने का हो (नमाज नहीं पढ़ी जाएगी।)

### दफ़न

और दफ़न के लिये कम से कम ऐसी क़ब्र है जो लाश से फैलने वाली बदबू को रोके और लाश को दरिन्दों (जंगली जानवर) से महफूज़ रखे। और मुकम्मल क़ब्र मुतवस्सित (दरम्यानी) इन्सान की लम्बाई चौड़ाई (क़दो कामत) के बराबर है, और मुतवस्सित इन्सान (अज़रूए क़दो कामत आमतौर से) साढ़े तीन हाथ का होता है। (क़ब्र इतनी गहरी हो कि ऊपर से ढकने के बाद भी खड़ा हुआ जा सके) और हराम है क़ब्र का उखाड़ना (खोदना) मय्यत के सड़ने गलने से पहले मगर ज़रूरत के वक़्त मसलन बे गुस्ल दफ़न कर दिया, छीने हुए या चुराए हुए कफ़न में दफ़न कर दिया या ग़ैर क़िब्ले में दफ़न कर दिया तो क़ब्र खोद सकते हैं।

### ज़कात

ज़कात का मअना लुगत में पाक करना, इस्लाह (सुधार) करना, और बढ़ना, के आता है और शरीअत में ज़कात माल का वो हिस्सा जो मुतअय्यन व ख़ास तरीके पर निकाला जाए, के है। ज़कात इस्लाम का एक अहम रुक्न (फ़र्ज) है इसका इन्कार करने वाला काफ़िर है। ज़कात अदा न करने वाले से ज़बरदस्ती लिया जाए, क़िताल (जंग) करने का भी हुक्म है। (मुतर्जिम) ज़कात वाजिब नहीं है मगर आज़ाद मुसलमान (मर्द व औरत) पर, सिवाए जिन्नीन के (जिन्नीन वो बच्चा जो अभी माँ के पेट में हो (उस पर ज़कात नहीं।) और ज़कात का वाजिब होना चन्द सूरतों में है।

### जानवरों की ज़कात

हर पाँच ऊँट में बीस तक एक साल का एक-एक मेंढा या दो साल की एक-एक बकरी (तो बीस ऊँट में चार मेंढे, या चार बकरियाँ ज़कात दी जाएंगी), और पच्चीस ऊँट में एक बिनत मखाज़ (एक साल की ऊँटनी की ज़कात वाजिब है या दो साल का एक मुज़क़र (नर) ऊँट जबकि एक साल की ऊँटनी न हो, और छत्तीस ऊँट में दो साल की एक ऊँटनी की ज़कात वाजिब है। और छियालीस ऊँट में तीन साल की एक ऊँटनी की ज़कात वाजिब है। और इकसठ ऊँट में चार साल की एक ऊँटनी की ज़कात वाजिब है। और छियत्तर ऊँट में दो साल की दो ऊँटनी की ज़कात वाजिब है। और इक्यानवे ऊँट में तीन साल की दो ऊँटनी की ज़कात वाजिब है। और एक सौ इक्कीस ऊँट में दो साल की तीन ऊँटनी की ज़कात वाजिब है और एक सौ तीस ऊँट में तीन साल की एक ऊँटनी और दो साल की दो ऊँटनी की ज़कात वाजिब है। ज़िक्र की गई तादाद के बाद फिर हर चालीस में एक, दो साल की ऊँटनी और हर पचास में एक, तीन साल की ऊँटनी की ज़कात वाजिब है।

और वो शख्स जो वाजिब किया हुआ (जानवर) न पाए

(मसलन जिसके पास छत्तीस ऊँट हों उस पर दो साल की एक ऊँटनी की ज़कात वाजिब है और ये ऊँटनी उसके पास मौजूद न हो) तो वाजिब किये हुए जानवर से अज़ला (ऊपर) की तरफ़ एक दर्जा बढ़े, और दो बकरी ले ले जो कुरबानी के लाइक हों या इस्लामी बीस दिरहम ले ले। या वाजिब शुदा जानवर से एक दर्जा नीचे उतरे और कुरबानी के लाइक दो बकरियाँ दे या इस्लामी बीस दिरहम दे।

### गाय भैंस की ज़कात

और तीस गाय में (ऐसे ही भैंस का हुक्म है) एक साल के एक बछड़े की ज़कात वाजिब है, या एक साला एक बछिया की ज़कात वाजिब है। और चालीस गाय में दो साला एक बछिया की ज़कात वाजिब है, और साठ गाय में एक साल के दो बछड़े की ज़कात वाजिब है, और हर चालीस में दो साल की एक बछिया की ज़कात वाजिब है।

### बकरी की ज़कात

और चालीस बकरी पर एक साला एक बकरी की ज़कात वाजिब है एक सौ बीस तक, और एक सौ इक्कीस बकरी पर दो बकरी की ज़कात वाजिब है दो सौ तक, और दो सौ एक बकरी पर एक साला तीन बकरी की ज़कात वाजिब है तीन सौ निन्यानवे तक, और चार सौ बकरी में एक साला चार बकरी की ज़कात वाजिब है इसके बाद फिर हर सौ बकरी पर एक साला एक बकरी की ज़कात वाजिब है।

### ज़िक्र किये गए जानवरों की ज़कात के मुतअल्लिक़ मसाइल

और जाइज़ नहीं है ज़िक्र किये गए जानवरों से ऐबदार की ज़कात लेना (ज़कात में ऐबदार को अदा करना जाइज़ नहीं) मगर जब कि तमाम जानवर ऐबदार हों। और यही हुक्म मरीज़ (बीमार) जानवर का है। और जाइज़ नहीं मुअन्नस (मादा) के बदले मुज़क्कर (नर) का लेना मगर उस सूरत में जिसका बयान गुज़र चुका और सिवाए उस सूरत में जबकि कुल

के कुल जानवर मुज़क्कर (नर) हों (तो ज़कात में मुज़क्कर ही लेले) और जाइज़ नहीं है कम उम्र जानवर का लेना मगर जब कि कुल के कुल जानवर कम उम्र हों (तो ज़कात में कम उम्र ही ले ले।)

और अगर दो ऐसे शख्स जो ज़कात देने के काबिल हों वो दोनों किसी एक निसाब (वह माल जिस पर ज़कात वाजिब है) में शरीक हों तो उन दोनों पर ज़कात वाजिब है।

### जानवरों की ज़कात की शर्तें

और जानवरों की ज़कात के वाजिब होने की चन्द शर्तें हैं। (जानवरों के निसाब की शर्त का ज़िक्र पहले हो चुका) वाजिब होने के शराइत ये हैं। मालिक की मिल्कियत में पे दरपे (लगातार) पूरा एक साल गुज़रना सिवाए नताज (नए पैदा जानवर के दरम्याने साल में) के कि वो अपनी माँ के मातहत होगा, और शर्त है कि जानवर पूरे साल मुबाह (जाइज़) घास चरा हो, और शर्त है कि पूरी चराई मालिक की तरफ़ से हो, तो ज़कात नहीं है, उस जानवर में जो जानवर खुद चराता हो या उसे मालिक के अज़ावा ने चराया हो, और शर्त है कि वो जानवर जुताई और उस जैसे काम के लिये न हो।

### अनाज और फलों की ज़कात

अनाज और फल की ज़कात सिर्फ़ अक्वात (जिससे बिल्क़सद ग़िज़ा हासिल की जाती हो) में वाजिब है। और वो फलों में खजूर और अंगूर हैं। और अनाज में गेहूँ, जौ और चावल और हर वो अनाज जिसे इख़्तियार की हालत में इस्तेमाल करने से ग़ालिबन इन्सान के बदन को ग़िज़ा मिलती हो, (सिर्फ़ बयान की गई चीज़ों में ज़कात वाजिब है।)

और फल और अनाज का निसाब पाँच वस्क़ है, हर वस्क़ साठ साअ़ का होता है और एक साअ़ चार मुद का होता है और मुद एक बग़दादी रित्तल और तिहाई रित्तल  $1/3$  का होता है (आजकल के हिसाब से फल और अनाज जब कि 844 किलो हों तो ज़कात वाजिब है) और वज़न का

ऐतेबार होगा जबकि खजूर और अंगूर सूख जाएं, और तबई (कुदरती) ऐतेबार से जितने दिन में सूखते हों न सूखने पर तो तर खजूर और तर अंगूर से ही ज़कात निकाली जाएगी और अनाज (दाना) में ऐतेबार सिर्फ़ ख़ालिस दाने का है न कि भूसे और छिलके का। और निसाब मुकम्मल करने के लिये एक जिन्स को दूसरी जिन्स से मिलाया नहीं जाएगा मसलन गेहूँ को चावल के साथ। और निसाब पूरा करने के लिये एक किस्म को दूसरी किस्म से मिलाया जाएगा मसलन उमदा गेहूँ ख़राब गेहूँ के साथ। और अल्स (गेहूँ की तरह अनाज) को गेहूँ के साथ मिलाया जाएगा और अल्स और गेहूँ की मिक्दार के हिसाब से ज़कात निकाली जाएगी जब कि आसानी हो वरना (जब कि आसानी न हो) औसत (बीच) के हिसाब से ज़कात निकाली जाएगी। और निम्माब पूरा करने के लिये इस साल के फल को पार साल के फल से मिलाया नहीं जाएगा और ऐसा ही अनाज का हुक्म है (निसाब मुकम्मल करने के लिये दो सालों के अनाज को नहीं मिलाया जाएगा) और एक ही साल के फल को दूसरे फलों के साथ और अनाज को दूसरे अनाजों के साथ मिलाया जाएगा बअज़ को बअज़ के साथ।

### वाजिब ज़िक्र किये की ज़कात

और बग़ैर मशक्कत (तकलीफ़) के सैराब शुदा तैयार हुई पैदावार में उ़शर 1/10 (दसवाँ हिस्सा) वाजिब है और जो पैदावार मशक्कत (महनत) से सैराब हुई हो उसमें निस्फ़ उ़शर (बीसवाँ हिस्सा) वाजिब है। और जो पैदावार दोनों पानियों से सैराब हुई हो चाहे दोनों पानी बराबर हों, या मुश्किल हों, (न मालूम कौन पानी कितना लगा) तो पैदावार की चौथाई से तिहाई हिस्सा 4/3 वाजिब है। और अगर मालूम हो कि कौन पानी कितना इस्तेमाल हुआ तो उसी के हिसाब से ज़कात वाजिब है। और फलों और अनाज में ज़कात उस वक़्त वाजिब है जब कि फल में सलाहियत ज़ाहिर हो जाए (ज्यादातर खाने के काबिल हो जाएं) और दाना

बाली में पक जाए और सुन्नत है इमाम के लिये कि वो मालिक के सामने फलों का अन्दाज़ा कराए और अन्दाज़ा करने वाले कि शर्त ये है कि वो मुज़क्कर (मर्द), मुसलमान, आज़ाद और अन्दाज़े का जानकार हो, और ये कि ख़ारिस (अन्दाज़ा करने वाला), मालिक को वाजिब की मिक्दार का ज़ामिन (ज़िम्मेदार) बना दे और मालिक उस ज़मानत को कुबूल करे (बई तौर ख़ारिस कहेगा मैंने तुझे हक्दारों के हिस्से का मालिक (ज़िम्मेदार) बना दिया, मालिक कहे मैंने कुबूल किया) इसके बाद फिर ज़िम्मेदार पूरे फल में तसरुफ़ (दख़ल अन्दाज़ी) कर सकता है।

### सोने चाँदी की ज़कात

और सोने चाँदी की ज़कात रुबए उ़शर 10/4 यानी चालीस रूपए पर एक है अगरचे कि सोने चाँदी मअदन (कान) से हासिल हों और सोने का निसाब ख़ालिस बीस मिसक़ाल है और एक मिसक़ाल चौबीस कीरात का होता है (आजकल के हिसाब से सोने का निसाब साढ़े सात तोला है, 83 ग्राम 215 मिली ग्राम, इससे कम सोने में ज़कात वाजिब नहीं) और चाँदी का निसाब दो सौ इस्लामी दिरहम है और एक दिरहम सत्रह कीरात का होता है मगर कीरात का पाँचवाँ हिस्सा कम, आजकल के हिसाब से साढ़े बावन तोला 630 ग्राम है और सोने चाँदी के ज़िक्र किये गए निसाब पर जितना ज्यादा होगा तो उसी के हिसाब से ज़कात निकाली जाएगी। और खोटे सोने और चाँदी में ज़कात वाजिब नहीं यहाँ तक कि वो (खेट या मिलावटी सोने चाँदी) ख़ालिस सोने चाँदी की मिक्दार को न पहुँच जाएं और ज़कात वाजिब नहीं है जाइज़ ज़ेवरात में जब कि उससे कन्ज़ (दौलत जमा करने) का इरादा न हो। और सोने चाँदी में ज़कात वाजिब होने के लिये हौल (पूरा एक साल) गुज़रने की शर्त है। और रकाज़ (दफ़ीने) में मिक्दार खुम्स (पाँचवाँ हिस्सा) वाजिब है और रकाज़ (दफ़न किये माल) की शर्त ये है कि वो सोना या चाँदी हो, ब-क़द्र निसाब हो, और ज़मानए जाहिलियत (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ़

आवरी से पहले) का दफ़न हो और वो ग़ैर आबाद ज़मीन में दफ़न हो या वो ज़मीन ग़ैर आबाद थी फिर उसे आबाद करने वाला अपनी मिल्कियत में पाया हो।

### तिजारत की ज़कात

तिजारत :- फ़ायदे की गर्ज से माल को बदले में रद्दो बदल (इधर उधर) करने को तिजारत कहते हैं।

तिजारत के माल में ज़कात रुबए उशर (10/4 चालीसवाँ हिस्सा) वाजिब है, और तिजारत के माल में ज़कात वाजिब होने की छैः शर्तें हैं।

- (1) उरूज़ (सामान) हो नक़द न हो।
- (2) तिजारत की नियत हो।
- (3) नियत ज़िक्र किये गए अब्वल कौल व करार (तमल्लुक यानी मालिक होने) से मुत्तसिल (मिली) हो।
- (4) तमल्लुक (मालिक होना) मुआवज़े के बदले हो।
- (5) माले तिजारत साल के दरम्यान में अज़रूए नक़द के मिक्दार निसाब से कम न हो जाए।
- (6) माले तिजारत से साल के दरम्यान में कमाई के लिये माल रोके रखने का इरादा न हो। (इन शर्तों के साथ जबकि तिजारत का माल निसाब की मिक्दार को पहुँच चुका हो) तो तिजारत के माल की कीमत का रुबअ उशर 10/4 (चालीसवाँ हिस्सा) वाजिब है, और तिजारत के माल की कीमत अस्ल माल के जिन्स से लगाई जाएगी या नक़द बलद (रिवाज पाए सिक्के) से लगाई जाएगी जबकि उसका मालिक किसी सामान के बदले हुआ हो, और तिजारत के माल में निसाब की शर्त साल के आखिर में होगी।

### सदक़ए फ़ित्र

और वाजिब होता है सदक़ए फ़ित्र चन्द शर्तों के साथ, वो शर्तें ये

हैं। ईद की रात सूरज ग़रूब होने का वक़्त पाना (ज़िन्दा रहना), और मुसलमान होना, और ये कि निकाला हुआ माल (सदक़ा), अपने और अपने एहलो अयाल के ईद की रात और ईद के दिन की ज़रूरियात से फ़ाज़िल (ज़्यादा) हो और अपने और अपने एहलो अयाल के पहनने के लाइक़ कपड़े लत्ते से वो माल फ़ाज़िल हो और अपने और अपने एहलो अयाल के रहने के मकान से फ़ाज़िल हो और अपने और अपने एहलो अयाल के उस खादिम से फ़ाज़िल (ज़्यादा) हो जिसकी ज़रूरत हो। और सदक़ए फ़ित्र उनकी तरफ़ से भी अदा करना वाजिब है जिनका खाना-पीना और खर्च पानी इसके ज़िम्मे में हो जबकि वो मुसलमान हों यानी बीवी की तरफ़ से, बेटे की तरफ़ से, और बाप की तरफ़ से, और गुलाम की तरफ़ से।

और सदक़ए फ़ित्र की वाजिब मिक्दार एक साअ़ ढाई किलोग्राम) शहर में अकसर (ज़्यादातर) खाए जाने वाले अनाज से है, इस हाल में कि वो अनाज ऐबदार न हो। और अगर बअज़ साअ़ (कुछ कम मिक्दार) निकालने पर क़ादिर हो तो वाजिब है कि उतना ही निकाले, और जाइज़ है रमज़ान के महीने में सदक़ए फ़ित्र निकालना, और सुन्नत ये है कि नमाज़े ईद से पहले (ईद की फ़ज़ के बाद) सदक़ए फ़ित्र निकाले, और हराम है सदक़ए फ़ित्र को ईद के दिन से बाद में अदा करना।

### ज़कात की नियत

और वाजिब है दिल से नियत करना तो इस तरह नियत करे, ये मेरे माल की ज़कात है और ऐसे ही दूसरे अलफ़ाज़ मसलन ये मेरे माल का सदक़ए फ़र्ज़ है या ये मेरे फ़र्ज़ हुए माल का सदक़ा है। और जाइज़ है साल मुकम्मल होने से पहले ज़कात की जल्द अदाएगी करना। और जल्द ज़कात के जाइज़ होने की शर्त ये है कि मालिक (ज़कात देने वाला) साल के आखिर तक वाजिब होने का एहल हो और ये शर्त है कि क़ाबिज़ (ज़कात लेने वाला) साल के आखिर में ज़कात का हक़दार हो और जब

जाइज़ न रहा (शर्त ख़त्म होने के सबब) तो ज़ल्द दी गई ज़कात लेने वाले से वापस ले ली जाएगी जबकि कब्ज़ा करते वक़्त काबिज़ को मालूम था कि ये ज़कात मुअज़्जला यानी वक़्त से पहले दी गई है।

### ज़कात के हक़दार

ज़कात के हक़दार आठ किस्म के लोग हैं और वाजिब है इन आठ किस्म के मौजूद लोगों की तरफ़ ज़कात अदा करना, वह आठ किस्म के लोग ये हैं।

(1) फ़कीर (2) मिसकीन (3) कर्जदार (4) और इब्नुस्सबील (मुसाफ़िर या जाइज़ सफ़र का इरादा करने वाले मुहताज लोग)। (5) और आमिलून (बादशाह इस्लाम के मुकर्रर करदा ज़कात वसूल करने वाले और उसके अलावा लोग) (6) और मुअल्लिफ़ा और मुअल्लिफ़ा कुलूब वो लोग हैं जो इस्लाम के बारे में ज़ईफ़ूनियत (कमज़ोर नियत) और अपनी कौम में शरीफ़ हों, इन्हें अता करने से इन जैसे से इस्लाम कुबूल करने की उम्मीद है। (7) और वो मुज़क्कर गाज़ी (मर्द मुजाहिद) जो जिहाद के लिये तैयार खड़े रहें। (8) और मुकातिबून जबकि किताबत सही हो। (मुकातिब वो गुलाम जिसका आका लिख दे, अगर इतना अदा करे तो तू आज़ाद है।) और कम से कम तादाद उन अफ़राद की जिन्हें ज़कात दी जाएगी वो हर किस्म के हक़दारों से तीन-तीन लोग हैं। (यानी आठों किस्मों में से हर किस्म के तीन-तीन अफ़राद) मगर जबकि ये आठों किस्म चन्द अफ़राद में मुन्हसिर हो जाएं तो ज़कात हक़दारों की हाज़त के लिहाज़ से अदा की जाएगी सिवाए आमिल (ज़कात वसूल करने वाले) के कि जाइज़ है कि आमिल एक हो।

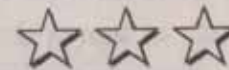
### सदक़ए नाफ़िला

और अफ़ज़ल है सदक़ए नाफ़िला में इसरार (छुपाकर देना) करना सिवाए ज़कात के (ज़कात छुपाकर न दे बल्कि ज़ाहिर करे) और

अफ़ज़ल है क़रीबी को सदक़ा देना और अफ़ज़ल है अक़रब महारिम (ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार) को सदक़ा देने में अव्वल रखना, और बीवी शौहर अक़रब के दर्जे में है। फिर इसके अबअद महारिम (दूर के रिश्तेदार) को मुक़द्दम करना अफ़ज़ल है। फिर अफ़ज़ल है रज़ाई महरमों (दूध शरीक रिश्तेदारों) को अव्वल करना, फिर ससुराली रिश्ते को, फिर रिश्तए वला (सरपरस्ती) को, फिर पड़ोसी को, और अफ़ज़ल है दुश्मन पे सदक़ा करना और नेक मोहताजों पे सदक़ा करना।

और अफ़ज़ल है सदक़ा देना फ़ज़ीलत के वक़्त में मसलन जुमे के दिन, और अफ़ज़ल है सदक़ा देना फ़ज़ीलत की जगहों पर मसलन मक्का व मदीना शरीफ़ में, और अफ़ज़ल है सदक़ा करना सख़्त हाज़तों (परेशानियों) के वक़्त मसलन जंग और सूरज गृहण और मर्ज़ और हज के दिनों में, और अफ़ज़ल ये है कि अपनी महबूब (पसन्दीदा) चीज़ सदक़ा करे और खुश दिली से करे। और हलाल नहीं है उस चीज़ का सदक़ा करना कि अपने नान व नफ़के (रोटी और खर्च) या अपने एहलो अयाल (घरवालों) के नान व नफ़के में जिसकी हाज़त हो उस दिन और उस रात, और उस माल का सदक़ा हलाल नहीं जिसकी हाज़त हो ऐसे कर्ज़ के लिये जिसके वफ़ा की उम्मीद न हो।

और मुस्तहब (बेहतर) है हर उस चीज़ का सदक़ा करना जो उसकी और उसके एहलो अयाल की हाज़त से फ़ाज़िल (ज़्यादा) हो जबकि तंगदस्ती पर सब्र करना इसके लिये दुश्वार न हो। और मकरूह है सदक़ा वापस ले लेना ख़रीद या फ़रोख़्त के ज़रिये या किसी और तरीक़े से, और हराम है मालदार पर माल या मेहनत का सवाल करना और सदक़ा देकर एहसान जताना सदक़े को बरबाद कर देता है और ताकीद के साथ हुक्म है पानी से सदक़ा करना और दूधारी बकरी से सदक़ा करना।



## रोज़ा

लुग़त (शब्दकोष) में सौम का मअना रुकना है, और शरीअत में नियत के साथ सुबह सादिक से गुरुब आफ़ताब (सूर्य अस्त) तक खाने, पीने और जिमाअ (हमबिस्तरी) से रुके रहने का नाम रोज़ा है।

वाजिब हो जाता है रमज़ान का रोज़ा तीस शअबान के मुकम्मल होने से या एक आदिल शख्स के चाँद देख लेने से (जब कि वह काज़ी के पास गवाही दे) और जब किसी शहर में रूयते हिलाल हुई (चाँद देखा गया) तो दूसरे शहर वालों पर रोज़ा लाज़िम है जबकि दूसरे शहर वालों का मतलअ (चाँद निकलने की जगह) रूयते हिलाल वाले शहर के मतलअ के मुताबिक़ हो। और रोज़ा सही होने की चन्द शर्तें हैं।

(1) हर दिन के लिये नियत, और वाजिब है रात ही में नियत करना फ़र्ज़ रोज़े में न कि नफ़िल में तो किफ़ायत करती है नफ़िल की नियत ज़वाल से पहले भी, और वाजिब है खास करने की भी नियत न कि फ़रीज़ा की नियत करना फ़र्ज़ में।

(2) रुका रहना क़सदन (जानबूझ कर) जिमाअ (हमबिस्तरी) से और क़सदन इस्तिमना (मुश्त ज़नी से इन्ज़ाल चाहना) यानी मुट्ठी मारकर वीर्य निकालने से।

(3) रुका रहना क़सदन कैं करने से और हरज नहीं है बिला इख़्तियार कैं हो जाना।

(4) रुका रहना किसी चीज़ को दाख़िल करने से बदन के खुले हुए सूराख़ में मसलन कान के अन्दरूनी हिस्से में और पेशाब के सूराख़ में बशर्तें कि उस चीज़ का दाख़िल होना खुले हुए सूराख़ से हो (तो रोज़ा टूट जाएगा), और नुक़सान नहीं देगा मसाम (बदन के छोटे-छोटे सूराख़) का तेल से भर जाना, और ज़रर (नुक़सान) नहीं देगा सुर्मा लगाना और गुस्ल करना। तो अगर खाया या पिया भूलकर या जहालत के सबब थोड़ा या ज़्यादा तो

रोज़ा नहीं टूटेगा और जाहिल उज़्र वाला न जाना जाएगा मगर जबकि नौ मुस्लिम हो या इलमा-ए किराम से दूर जंगल में पला बड़ा हो। और रोज़ा नहीं टूटेगा सड़कों और रास्तों के गुबार (धूल) से अगरचे कि मुँह जानबूझ कर खोला था। और रोज़ा नहीं टूटेगा मुँह में जमा हुए ख़ालिस पाक थूक निगल लेने से अगरचे कि थूक अपनी जुबान पर निकालकर निगल गया हो। और रोज़ा टूट जाएगा दाँतों के दरम्यान थूक की गरदिश (इधर-उधर) करके निगलने से हालाँकि उसके फँकने थूकने पर कादिर था और यही हुक्म रेंठ (नेटा) का भी है। और रोज़ा टूट जाएगा कुल्ली और इस्तिन्शाक़ (नाक) का पानी पेट के अन्दर और दिमाग़ तक पहुँच जाने से जबकि बिला नापाकी के मुबालगा (ज़्यादती) किया हो, और बिला मुबालगा भी रोज़ा टूट जाएगा। पानी के पेट में पहुँच जाने से जबकि कुल्ली ठण्डक हासिल करने के लिये किया हो या चौथी कुल्ली किया हो, या बेकार कुल्ली किया हो, और रोज़ा टूट जाएगा (जब इजतेहाद ग़ौर फ़िक़र करके खाया) और जाहिर हुआ कि दिन में खाया था और रोज़ा नहीं टूटेगा इकराह (मजबूर किये जाने) की हालत में खाने पीने से।

(5-6-7) इस्लाम (मुसलमान होना), और हैज़ व निफ़ास से पाक होना, और अक़लमन्द होना, जबकि ये तीनों (इस्लाम, हैज़ व निफ़ास से पाकी और अक़ल) दिन के पूरे वक़्त में मौजूद हों, और हरज नहीं है बेहोशी और नशा जबकि दिन में एक लहज़ा (लम्हा) भी फ़ायदा हो जाए। और सही नहीं है ईदैन (ईदुल फ़ित्र, ईदुल अद्वहा) के दिन रोज़ा रखना सिवाए विर्द (जो शख्स हमेशा रोज़ा रखने का आदी हो या एक दिन रोज़ा रखता हो और एक दिन इफ़तार करता हो) के रोज़े के और सिवाए नज़र के रोज़े के, या क़ज़ा के रोज़े के, या कफ़फ़ारे के रोज़े के, या निस्फ़ (आधे) के मा बाद (बाद वाले) को मा क़ब्ल (पहले वाले) से मिलाने के रोज़े के (जुदा होने की ये तमाम सूरतें आख़िर शअबान के दिन रोज़ा रखने से मुतअल्लिक़ हैं।)

## रोज़ा किस पर वाजिब है?

वो शख्स जिस पर रमज़ान का रोज़ा वाजिब होगा उसकी शर्त ये है। अक़लमन्द होना, बालिग़ होना, मुसलमान होना, और रोज़ा रखने की ताक़त होना। और वाजिब है सात साल के बच्चे को रोज़े का हुक्म करना और दस साल के उम्र के बच्चे को रोज़ा तर्क करने (छोड़ने) पर मारा जाएगा जबकि रोज़ा रखने की ताक़त रखता हो।

## रोज़ा छोड़ना जाइज़ है

और जाइज़ है इफ़्तार (रोज़ा न रखना) ऐसे मर्ज़ के सबब जिससे तयम्मुम जाइज़ हो जाए, और हलाकत से ख़ौफ़ करने वाले के लिये, और शिद्दत की भूख और शिद्दत की प्यास ग़ालिब आ जाने की वजह से और जाइज़ है इफ़्तार (रोज़ा न रखना) लंबे जाइज़ सफ़र के मुसाफ़िर के लिये मगर जबकि सफ़र फ़ज्र के बाद करे (तो इफ़्तार नहीं करना चाहिये)। और अफ़ज़ल है कि सफ़र में रोज़ा रखे जबकि रोज़े से तकलीफ़ का अन्देशा न हो। और जब बच्चा बालिग़ हुआ, या मुसाफ़िर सफ़र से लौट आया, या बीमार शिफ़ा पा गया हालाँकि ये तीनों रोज़ादार थे तो अब इफ़्तार (रोज़ा तोड़ना) हुराम है और अगर इफ़्तार कर लिया तो मुस्तहब (बेहतर) है कि वो तीनों रुके रहें (खाने-पीने, जिमाअ (भोग-विलास) करने से)। और हर वो शख्स जो इफ़्तार कर ले, उज़्र के सबब या बिला उज़्र के तो उस पर वाजिब है क़ादिर होने के बाद रोज़े की क़ज़ा करना सिवाए बच्चे के और मजनून (पागल) के और काफ़िर असली के और मुस्तहब (बेहतर) है क़ज़ा की मवालात (पे दरपे) करना, और मुबादरत (जल्दी) करना। और वाजिब है मवालात व मुबादरत जबकि बिला उज़्र के रोज़ा तोड़ दिया हो, और वाजिब है नियत न करने वाले और क़सदन रोज़ा तोड़ने वाले का रमज़ान में रुका रहना (न खाना न पीना) और वाजिब है शक के दिन में रुका रहना जबकि उस दिन का रमज़ान से होना ज़ाहिर हो जाए और वाजिब है फ़ौरन उसकी क़ज़ा करना।

## रोज़े की सुन्नतें

और मुस्तहब है इफ़्तार में जल्दी करना जबकि सूरज ग़रुब का यकीन हो जाए और सुन्नत है तीन तर खजूरों से इफ़्तार करना, तो अगर तीन खजूर न हों तो एक खजूर से इफ़्तार करे और अगर खजूर न हो तो पानी से इफ़्तार करना सुन्नत है। और मुस्तहब है इफ़्तार कर लेने के बाद यह दुआ पढ़ना “अल्लाहुम-न ल-क सुम्तु व अला रिज़कि-क अफ़तस्तु” और मुस्तहब है रोज़ादारों को इफ़्तार कराना और उनके साथ इफ़्तार करना और मुस्तहब है सहरी खाना, और सहरी में ताख़ीर (देर) करना जबकि तुलू (वक़्त) फ़ज्र का शक न हो और मुस्तहब है फ़ज्र से पहले गुस्ल करना। अगर गुस्ल की हाजत हो और सख़्ती के साथ हुक्म है रोज़ादार के लिये किज़्ब (झूठ) और ग़ीबत (चुगली) का छोड़ना। और सुन्नत है रोज़ादार के लिये मुबाह (जाइज़) ख़्वाहिशात का ख़त्म करना भी। तो अगर कोई रोज़ादार (साइम) रोज़ादार को गाली दे तो रोज़ादार कहे मैं रोज़े से हूँ और सुन्नत है रोज़ादार के लिये पछना (सिंगी) न लगवाना, और मज़ग़ न करना (मुँह में किसी चीज़ को रखकर चबाना) और खाने का ज़ाइका न चखना, और बीवी का बोसा न लेना, और हुराम है बोसा जबकि उसमें इन्ज़ाल (मनी आने) का अन्देशा हो, और मकरूह है रोज़ादार को मिसवाक करना ज़वाल के बाद, और मुस्तहब है रमज़ान में एहलो अयाल का रिज़्क ज़्यादा करना, और रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ एहसान करना और सद्क़े की कसरत (ज़्यादती) करना, और तिलावत की कसरत करना, और तिलावते कुरआन मुदारसत (एक ने दूसरे को पढ़कर सुनाना) की कसरत करना, और ऐतिकाफ़ की कसरत करना। खासकर रमज़ान के आख़री अशरे (दस दिन) में ऐतिकाफ़ की कसरत करना। और लैलतुल क़द्र रमज़ान के आख़री अशरे में है और आख़री अशरे में ये दुआ पढ़नी चाहिये :-

“अल्लाहुम-म इन्-क अफ़वुन तुहिबुल अफ-व फ़अफ़ अनी” और अच्छा है लैलतुल क़द्र का छुपाना (जब उसकी अलामत देखे) और

बेहतर है लैलतुल क़द्र में शब बेदारी करना, और उस दिन रात की तरह इबादत करना, और हराम है सौमे विसाल (हमेशा रोज़ा) रखना।

### कफ़ारा (गुनाह से पाक होने का अमल)

कफ़ारा वाजिब है उस पर जिसने रमज़ान का रोज़ा ख़राब कर लिया हो जिमाअ (हमबिस्तरी) के ज़रिये अगरचे कि जिमाअ (संभोग) पीछे के मक़ाम में किया हो और अगरचे कि जिमाअ जानवर के साथ किया हो। और वाजिब नहीं है कफ़ारा औरत पर और न उस पर जिसने निसयान (भूल) की हालत में भूलकर जिमाअ किया हो और न उस पर जिसको मजबूर किया गया हो। और कफ़ारा वाजिब नहीं है उस शख्स पर जिसने रमज़ान के अलावा का रोज़ा ख़राब किया हो और न उस पर जिसने बिला जिमाअ के रोज़ा तोड़ दिया हो। और कफ़ारा वाजिब नहीं है मुसाफ़िर पर और मरीज़ पर अगरचे कि दोनों ने ज़िना (हरामकारी) करके रोज़ा तोड़ा हो। और न ही उस पर जिसने गुमान किया अभी रात है (और खा लिया) फिर ज़ाहिर हुआ कि दिन हो गया था।

और कफ़ारा ये है :- आज़ाद करना मोमिन गुलाम का जो हर उस ऐब से सालिम हो जो ऐब कि अमल (काम करने) में नुक़सानदे हो, तो अगर गुलाम न पाए तो दो महीने लगातार रोज़ा रखे (साठ रोज़े) तो अगर रोज़ा रखने पर क़ुदरत न हो तो साठ मिसकीनों को खाना खिलाए हर मिसकीन को एक मुद (एक पैमाना जो वज़न में दो रिल्ल के बराबर है यानी लगभग एक सेर)।

और कफ़ारा साक़ित (माफ़) हो जाएगा दिन के दरम्यानी हिस्से में पागलपन तारी हो जाने से और मौत वाक़ेअ हो जाने से। और कफ़ारा साक़ित (माफ़) न होगा मरीज़ (बीमार) हो जाने से और सफ़र करने से और कफ़ारा साक़ित न होगा तंगदस्त (कंगाल) हो जाने से, और रमज़ान का हर रोज़ा फ़ासिद (ख़राब) करने की वजह से हर रोज़े का अलग-अलग कफ़ारा है।

### फ़िदया (बदला)

जो शख्स रोज़ा तोड़ दिया हो तो क़ज़ा के साथ वाजिब है कि एक मुद (620 ग्राम) शहर के ज़्यादातर इस्तेमाल होने वाले अनाज से फ़िदया अदा करे, और ये फ़िदया फ़कीर या मिसकीन में से किसी को दिया जाए। और वाजिब है हर दिन का फ़िदया (अलग) देना, और हर दिन का फ़िदया एक मुद (620 ग्राम) निकाला जाएगा। मुर्दा आदमी के छोड़े माल से जबकि उसके ज़िम्मे रमज़ान या रमज़ान के अलावा का रोज़ा बाक़ी हो हालाँकि उसके क़ज़ा पर क़ादिर था या क़सदन रोज़ा तोड़ दिया था (अगरचे कि बाद में उस रोज़े की क़ज़ा पर क़ादिर न हो तो एक मुद अदा करे) या मुर्दा आदमी की जानिब से (क़ज़ा रोज़े के बदले) क़रीबी रिश्तेदार बतौर फ़िदया रोज़ा रखे, या मय्यत के वारिस का माज़ून (जिसे इजाज़त दी जाए) रोज़ा रखे, या मय्यत का माज़ून (रोज़ा) रखे। और वाजिब है हर दिन के बदले एक मुद अदा करना उस पर जो रोज़ा रखने पर क़ादिर न हो, बुढ़ापे की वजह से या ऐसी बीमारी की वजह से जिसके शिफ़ा की उम्मीद न हो। और वाजिब है फ़िदया अदा करना (रोज़े के बदले) हमल (गर्भ) वाली औरत पर और दूध पिलाने वाली औरत पर जबकि बच्चे पर ख़ौफ़ करने के सबब रोज़ा तोड़ दिया हो, दोनों पर फ़िदये के साथ रोज़े की क़ज़ा वाजिब है और वाजिब है फ़िदया मअ क़ज़ा उस पर जो किसी हैवान (जानवर) को हलाकत से बचाने के लिये रोज़ा तोड़ दिया हो। और वाजिब है हर दिन के रोज़े के बदले फ़िदया देना उस पर जो रमज़ान का क़ज़ा रोज़ा बिला उज़र दूसरे साल के रमज़ान तक मुअख़्ख़र (देर) करे।

### नफ़ली रोज़ा

सुन्नत है नफ़ली रोज़ा रखना, नफ़ली रोज़े की तीन किस्में हैं।

(1) वह रोज़े जो साल के बार-बार आने से बार-बार होते हैं और वह यौमे अरफ़ा (नर्वी तारीख़) का रोज़ा है। हाजी और मुसाफ़िर के अलावा के

लिये और ज़िलहिज्जा (ईद क़ुर्बा) के नौ रोज़े और यौमे आशूरा (दस मुहर्रम) का रोज़ा, और नौ मुहर्रम का रोज़ा, और ग्यारह मुहर्रम का रोज़ा, और शव्वाल के छैः रोज़े, और सुन्नत है शव्वाल के छैः रोज़ों का लगातार होना, और उनका ईद से मुत्तसिल (मिला) होना।

(2) वो रोज़े जो महीने के मुकर्रर (बार-बार) होने से मुकर्रर (लोटने वाले) होते हैं और वो अय्यामे बीज़ के रोज़े हैं, और अय्यामे बीज़ हर महीने की 13, 14, 15 तारीख़ है और सुन्नत है अय्यामे सौद के रोज़े, और अय्यामे सौद हर महीने की 28, 29, 30 तारीख़ है।

(3) वो रोज़े जो हफ़्तों के मुकर्रर (लोटने वाले) होने से मुकर्रर (बार-बार) होते हैं, और सुन्नत है सोमवार और जुमेरात को रोज़ा रखना। और सुन्नत है हराम के महीनों (ज़ी क़अदा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब) में रोज़ा रखना और ऐसे हो शअबान का रोज़ा रखना सुन्नत है।

और हराम के महीनों में अफ़ज़ल पहले मुहर्रम है फिर रजब फिर बाकी हराम के महीने और हराम के महीनों के बाद अफ़ज़ल शअबान का महीना है। और मकरूह है सिर्फ़ जुमे के दिन रोज़ा रखना, और सिर्फ़ सनीचर के दिन, और सिर्फ़ इतवार के दिन, (सुन्नत ये है कि एक साथ दो रोज़े रखे) और अफ़ज़ल रोज़ा ये है कि एक दिन रोज़ा रखे और एक दिन इफ़तार करे।



## ऐतिकाफ़

लुग़त में ऐतिकाफ़ का मअना ठहरना है, और शरीअत में “खास शख्स का खास मकान में खास ठहरना” है। ऐतिकाफ़ सुन्नत मुअवक़दा है, और ऐतिकाफ़ की सात शर्तें हैं।

(1) इस्लाम (मुसलमान) होना। (2) अक़ल (3) हैज़ व निफ़ास से पाकी। (4) जुनुबी (बे गुस्ल) न होना। (5) नमाज़ के इत्मीनान से ज़्यादा ठहरना। (6) मस्जिद में ठहरना और जामा मस्जिद में ऐतिकाफ़ करना अफ़ज़ल है। (7) ऐतिकाफ़ की नियत करना।

और वाजिब है फ़रज़ियत की नियत जबकि नज़र (मन्नत) का ऐतिकाफ़ हो और वाजिब है तजदीद (नई) नियत करना मस्जिद से निकलने से जबकि रुजूअ (लौटने) की नियत नहीं थी, और अगर मुतलक् मुदत के साथ ऐतिकाफ़ की नियत किया तो वाजिब है नई नियत करना जबकि क़ज़ाए हाज़त के अलावा के लिये निकले, और अगर ऐतिकाफ़ चन्द दिन लगातार की नियत किया तो वाजिब है कि तजदीद (नई) नियत करे जबकि (क़ज़ाए हालत के अलावा) ऐसी हाज़त के लिये निकला जो लगातार या मुसलसल को काटने वाली हो। और अगर किसी मुतअय्यन मस्जिद में ऐतिकाफ़ की नज़र (मन्नत) माना तो जाइज़ है दूसरी मस्जिद में ऐतिकाफ़ की नज़र (मन्नत) अदा करना सिवाए तीन मस्जिद के, वो तीन मस्जिदें ये हैं “मस्जिदे हराम, मस्जिदे मदीना, मस्जिदे अक़सा।” और हराम है औरत का ऐतिकाफ़ में बैठना शौहर की इजाज़त के बग़ैर, और गुलाम का ऐतिकाफ़ आका (मालिक) की इजाज़त के बग़ैर।

## ऐतिकाफ़ ख़त्म करने वाली चीज़ें

और ऐतिकाफ़ बातिल (ख़त्म) हो जाता है जिमाअ (हमबिस्तरी) कर लेने से, और शहवत (जिस्मानी हवस) के साथ छू लेने

से जबकि इन्ज़ाल (मनी) हो जाए और जुनून (पागल हो जाने) से, और बेहोश हो जाने से। और ऐतिकाफ़ बातिल (ख़राब) हो जाता है जुनुबी (बे गुस्ल) हो जाने से जबकि फ़ौरन गुस्ल न करे। और बातिल हो जाता है मुर्तद हो जाने से और हराम नशे से। और जब मुअय्यन (खास) मुदत के ऐतिकाफ़ की नज़र माना तो मुअय्यन ऐतिकाफ़ लाज़िम हो गया। और तताबेअ (पे दरपे) को काट देगा नशा और कुफ़्र और क़सदन (जानबूझ कर) जिमाअ और क़सदन मस्जिद से क़ज़ाए हाजत के बग़ैर निकलना। और तताबेअ (लगातार) को नहीं काटेगा क़ज़ाए हाजत के लिये मस्जिद से निकलना, और खाना खाने के लिये मस्जिद से निकलना और पानी पीने के लिये मस्जिद से निकलना जबकि मस्जिद में पानी न मिल सके। और क़ातेए तताबेअ (लगातार को काटने वाला) नहीं है मर्ज़ की वजह से मस्जिद से निकलना जबकि मस्जिद में ठहरना बीमार पर दुशवार गुज़रे, या मस्जिद की तलवीस (गन्दा होने) का अन्देशा हो और इसी कि मिस्ल जुनून और बेहोशी है और क़ातेए तताबेअ नहीं है उस शख्स का निकलना जिसे नाहक़ निकलने पर मजबूर किया गया हो और हैज़ (माहवारी) भी क़ातेए तताबेअ नहीं है जबकि ऐतिकाफ़ की मुदत पाकी की मुदत से लम्बी हो।



## हज़ व उमरा

लुग़त में हज़ का मअना क़स्द व इरादा है और शरीअत में “कअबे का क़स्द मख़्सूस अफ़आल (अमल) के लिये” और उमरे का लुग़वी मअना ज़्यारत है। और शरीअत में कअबे का क़स्द करना मख़्सूस अफ़आल (अमल या इबादत) के लिये।

हज़ और उमरा दोनों फ़र्ज़ हैं, दोनों के वाजिब होने की शर्त ये है। इस्लाम (मुसलमान होना), आज़ाद होना, मुक़ल्लफ़ (वह शख्स जो अक़लमन्द और बालिग़ हो) होना और इस्तिताअत (ताक़त), इस्तिताअत की चन्द शर्तें हैं।

(1) वुजूदे तोशा (खाने-पीने का सामान मौजूद होना), और तोशे से मुतअल्लिक़ साज़ व सामान (यहाँ तक कि दस्तरख़्वान भी) का होना, और आने जाने के लाइक़ खाने और कपड़े की ज़रूरियात का होना।

(2) सवारी का होना, उसके लिये जिसके शहर और मक्के के दरम्यान दो मन्ज़िल (32 मील) का फ़ासला हो, या गोशए मिहमल (ऊँट की काठी या कजावे के किनारे) पे क़ुदरत (इस्तिताअत) उसके लिये जो सवारी की क़ुदरत न रखे, और वाजिब है औरत के लिये (सवारी पे क़ुदरत के बावजूद) कि उसके साथ एक आदिल (इन्साफ़ वाला) शख्स भी हो। और शर्त नहीं है सवारी की उसके लिये जिसके दरम्यान और मक्के के दरम्यान दो मन्ज़िल (32 मील) से कम का फ़ासला हो, हालाँकि वो पैदल जाने पर क़ादिर हो। और शर्त है ज़िक्र की गई शर्तों का होना जबकि वो ज़िक्र किये गए लवाज़ेमात (सामान) उसके दैन (क़र्ज़) से फ़ाज़िल हों और जाने और वापस आने के ज़माने तक अपने एहलो अयाल की ज़रूरियात से फ़ाज़िल (ज़्यादा) हों और रहने के मकान से फ़ाज़िल हो और ज़रूरत के ख़ादिम से फ़ाज़िल हो।

(3) रास्ते का महफूज़ व अमन-शान्ति वाला होना।

(4) पूरे रास्ते में वक़्त और जगह के ऐतेबार से तोशा (सामाने सफ़र) और

पानी का होना या उसके बराबर कीमत का होना कि जिससे तोशा और पानी वक्त और मक़ाम के चलन के ऐतबार से ख़रीदना मुम्किन हो।

**समने मिस्ल :-** इतने रूपए पैसे का होना कि रास्ते में वक्त और जगह के ऐतबार से तोशा और पानी ख़रीदने के लाइक् हो और सवारी (जानवर) का चारापानी हर मन्ज़िल (16 मील) पर उस कीमत से ख़रीद सके।

और वाजिब नहीं है औरत पर हज़ करना मगर जबकि उसके साथ उसका शौहर हो या कोई मेहरम (खास क़रीबी) हो, या उसके साथ चन्द नेक, क़ाबिले ऐतमाद औरतें हों।

(5) सवारी पर साबित रह सकता हो बग़ैर सख़्त मशक्कत के (यानी सवारी पे बैठने के क़ाबिल हो) और वाजिब नहीं है अंधे पर हज़ करना मगर जबकि अंधा किसी काइद (रहनुमाई करने वाले) को पा ले। और जो शख्स खुद हज़ करने (बुढ़ापा या बीमारी के सबब) से अज़िज़ हो तो उस पर वाजिब है कि हज़ बदल कराए जबकि क़ादिर हो हज़ बदल कराने के बराबर माल पर या पाए ऐसे शख्स को जो उसकी तरफ़ से बतौर नेकी हज़ कर दे, सिवाए उस अज़िज़ के जिसके शहर और मक्के के दरम्यान का फ़ासला क़स्म की दूरी (48 मील) से कम हो तो उस पर खुद हज़ करना वाजिब है।

### एहराम बाँधने का वक्त और जगह

उम्रे का एहराम पूरे वक्त (साल में किसी भी वक्त) बाँध सकता है और हज़ का एहराम चन्द मख़सूस महीनों में बाँधेगा वो चन्द महीने ये हैं:- “शव्वाल और ज़ी क़अदा और ज़िलहिज्जा के दस दिन” और जिसने हज़ का एहराम हज़ के वक्त के अलावा (मख़सूस महीनों के अलावा) में बाँधा तो वो एहराम, उम्रे का एहराम शुमार होगा। और जो शख्स मक्के में हो तो हज़ का एहराम मक्के से ही बाँधे, और उम्रे का एहराम “हिल” (मक्के का वह इलाक़ा जहाँ शिकार वग़ैरा जाइज़ है) के

जिस गोशे से चाहे बाँधे। और जो शख्स ग़ैर मक्की हो वो हज़ और उम्रे का एहराम मीक़ात (एहराम बाँधने की जगह) से बाँधे और तहामए यमनी की मीक़ात यलमलम है। और नजदे यमन और नजदे हिजाज़ की मीक़ात ‘क़र्न’ है। और एहले इराक़ व ख़ुरासान की मीक़ात ज़ात अर्क़ है। और एहले शाम और मिस्र और मग़रिब (पश्चिम) की मीक़ात हजफ़ा है। और एहले मदीना की मीक़ात जुल हुलैफ़ा है। तो अगर हज़ या उम्रे के इरादे से मीक़ात से गुज़र गया फिर एहराम बाँधा तो उस पर दम (कुर्बानी के जानवर का ज़िबह करना) देना वाजिब है जबकि मीक़ात की तरफ़ न लौटे (और मीक़ात की तरफ़ लौटना उस वक्त सही है जबकि) अज़माले हज़ व उम्रे में मशगूल होने से पहले लौटे। और मीक़ात से एहराम बाँधना अफ़ज़ल है ब-निस्बत उसके जो अपने शहर से बाँधे।

### अरकाने हज़

हज़ के पाँच रुकन (फ़र्ज़) हैं:- एहराम और अरफ़े (मैदाने अरफ़ात) में ठहरना और तवाफ़ और सई (दौड़ना) और हल्क़ (बाल कटाना) (और तरतीब भी रुकन है)।

और उम्रे के चार रुकन हैं:- एहराम और तवाफ़ और सई और हल्क़ (और तरतीब भी रुकन है)।

### एहराम

**एहराम :-** हज़ में दाख़िल होने की नियत करना या उम्रे में दाख़िल होने की नियत करना या हज़ व उम्रे की एक साथ नियत करना। और सिर्फ़ नियत से एहराम मुनअक्किद (जारी) हो जाएगा फिर उस नियते एहराम को चाहे तो हज़ के लिये कर दे या उम्रे के लिये कर दे, और मुस्तहब (बेहतर) है नियत का लफ़ज़ से अदा कर लेना या इस तरह कहे “नवैतुल हज़-ज अविल उम र-त व अहरमतु बिही लिल्लाहि तआला” और अगर दूसरे की तरफ़ से हज़ बदल किया या उमरा बदल कर रहा हो तो यूँ कहे “नवैतुल हज़-ज अन फ़लानिन व अहरमतु बिही लिल्लाहि

तअला” या उमरे में कहे “नवैतुल उम स-त आखिर तक” और मुस्तहब है नियत एहराम के साथ लब्बैक कहना और लब्बैक की कसरत करना और मुस्तहब है मर्द का लब्बैक बुलन्द आवाज से कहना सिवाए पहली तलबीह (लब्बैक) के कि उसे आहिस्ता कहे। और मन्दूब (बेहतर) है कि तलबीह में अपने एहराम का जिक्र करे और तलबीह के अलफाज ये हैं “लब्बैक अल्लाहुम-म लब्बैक लब्बै-क ला शरी-क ल-क लब्बैक इन्नल हम्-द वन्नेअम-त ल-क वल मुल्क ला शरी-क लक” और तलबीह (लब्बैक) की तकरार तीन बार करे, फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद पढ़े फिर अल्लाह तअला से उसकी रज़ा और जन्नत का सवाल करे और दोज़ख़ से पनाह चाहे और फिर जो दुआ पसन्द हो करे। और जब एहराम वाला या ग़ैर एहराम वाला कोई ऐसी चीज़ देखे जो उसे भाती हो या उससे कराहियत होती हो तो ये कहे “लब्बै-क इन्नल ऐ-शु ऐशुल आखिरति।”

### हज की सुन्नतें

और सुन्नत है गुस्ल करना, एहराम के लिये और मक्के में दाख़िल होने के लिये और वुकूफ़े अरफ़ा (अरफ़ात में ठहरने) के लिये और वुकूफ़े मुज़दल्फ़ा के लिये और तशरीक़ के दिनों की रमी (कंकर मारने) के लिये और मुस्तहब है एहराम के वक़्त बदन में खुशबू लगाना (गुस्ल के बाद) कपड़े में खुशबू न लगाएं। और मुस्तहब है (मर्द के लिये एहराम से पहले) इज़ार (तहबन्द) और चादर पहनना दोनों नए सफ़ेद हों वरना दोनों धुले हुए हों और मुस्तहब है नअलैन (जूते) पहनना और सुन्नत है सुन्नते एहराम की नियत से दो रकअत नमाज़ पढ़ना, दो रकअत पढ़ने के बाद एहराम बाँधे जबकि वो क़िब्ला रुख़ हो और अफ़ज़ल ये है कि अपने सफ़र की शुरुआत के वक़्त एहराम बाँधे और मुस्तहब है मक्के में दाख़िल होना उसके फ़राज़ (बुलन्द) हिस्से में, और मुस्तहब है दिन में पैदल नंगे पाँव दाख़िल होना, और तवाफ़े कूदूम (खुदा के दरबार में हाज़री का

तवाफ़) करना जबकि वो हज का एहराम या हज किरान का एहराम बाँधा हो, और मुस्तहब है वुकूफ़े अरफ़ा से पहले मक्के में दाख़िल होना।

### वाजिबाते तवाफ़

और तवाफ़ के वाजिब आठ हैं।

- (1) सतरे औरत (बदन का छुपाना) (2) हृदस (वुजू व गुस्ल) से पाकी
- (3) नजासत (गन्दगी) से पाकी (4) कअबे को अपने बाएं हाथ के मुक़ाबिल करना। (5) तवाफ़ की इब्तिदा हज़रे असवद से करना।
- (6) अपने पूरे बदन (के बाएं हिस्से) से हज़रे असवद का सामना करना।
- (7) सात चक्कर तवाफ़ करना (8) तवाफ़ का मस्जिद के अन्दर होना और कअबा शाज़रवान और हज़र (पत्थर) के ख़ारिज (बाहर) होना।

### तवाफ़ की सुन्नतें

और सुन्नत है पैदल तवाफ़ करना और इस्तिलामे हज़र (हज़रे असवद का हाथ से इशारा करके चूमना) और हज़रे असवद को बोसा देना (बग़ैर आवाज़ के) और अपनी पेशानी हज़रे असवद पे रखना और रुकने यमानी का इस्तिलाम (इशारा करके चूमना) करना और सुन्नत दुआएं हर चक्कर में पढ़ना। और मसनून नहीं है औरत के लिये इस्तिलाम (हज़रे असवद का हाथ से छूना) और तकबील (बोसा देना) मगर तन्हाई में (औरत इस्तिलाम व तकबील कर सकती है) और सुन्नत है मर्द के लिये पहले तीन चक्कर में रमल (सीना तानकर चलना) करना उस तवाफ़ में जिसके बाद सई (सफ़ा मरवा की दौड़) हो और मसनून है मर्द के लिये इज़तिबाअ करना उस तवाफ़ में जिसके बाद सई हो (इज़तिबाअ चादर का बीच दाहिने मूँढे के नीचे और दोनों किनारे बाईं मूँढे के ऊपर रखना) और मसनून है कअबे से क़रीब तवाफ़ करना और तवाफ़ में मवालात (पे दरपे, लगातार) होना और नियत करना और तवाफ़ के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़ना सुन्नत है।

## वाजिबाते सई

और वाजिबाते सई चार हैं। (1) पहला वाजिब यह है कि सई (दौड़) की इब्तिदा सफ़ा पहाड़ी से करें। (2) दूसरी सई की इब्तिदा मरवा पहाड़ी से करे। (3) सात सई करे (4) सई तवाफ़े रुक्न (फ़र्ज़) या तवाफ़े कुदूम के बाद करे।

## सई की सुन्नतें

और सुन्नत है सफ़ा और मरवा पर इन्सानी क़द के मिक्दार चढ़ना और ज़िक्र यानी दुआ, तस्बीह का विर्द करना हर सई के बाद तीन बार। और फिर दुआ करना हर सई के बाद। और सुन्नत है हर सई के अव्वल व आख़िर में दरम्यानी चाल चलना और हर सई के वस्त (बीच) में तेज़ चलना और सई का मक़ाम मारुफ़ व मशहूर है।

## वुकूफ़ (अरफ़ात में ठहरना)

और वुकूफ़ वाजिब है। और वुकूफ़ का वाजिब अदा हो जाएगा जब हाजी अरफ़ा के दिन (नवी ज़िलहिज्जा) ज़वाल के बाद मक़ामे अरफ़ात में एक लम्हे के लिये भी हाज़िर हो जाए अगरचे कि गुज़रते हुए (गुलाम वगैरा की तलाश में) और अगरचे कि सोया हुआ बशर्ते कि अक़ल व होश वाला हुआ और वुकूफ़ (ठहरने) का वक़्त यौमे नहर (कुर्बानी के दिन) की फ़ज़ तक बाकी रहता है।

## वुकूफ़ की सुन्नतें

और सुन्नत है वुकूफ़ में रात का हिस्सा और दिन के हिस्से के दरम्यान जमा करना और तहलील करना, अफ़ज़ल तहलील ये है “ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अल्ला क़ुल्लि शैइन क़दीर” और सुन्नत है तकबीर और तलबियह और तस्बीह और तिलावत करना और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद पढ़ना और ज़िक्र व दुरूद के साथ ख़ूब रोना, और सुन्नत है वुकूफ़

करने वाले के लिये ज़िक्र व दुआ के वक़्त किब्ला रुख़ रहना और पाक रहना, और सतर पोश (बदन छुपाए) रहना, और धूप में खड़ा रहना, और मौक़फ़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुस्तजू करना और वो सख़्रात के करीब है मर्दों के लिये और औरतों के लिये सुन्नत है हाशिया मौक़फ़ (अरफ़ात के किनारे) में वुकूफ़ करना, और सुन्नत है ज़ोहर व अस्त्र की जमा तकदीम (ज़ोहर के साथ अस्त्र पढ़ना) करना मुसाफ़िर के लिये (मस्जिदे इब्राहीम में) और मग़रिब को इशा तक मुअख़्ख़र (देर) करना, मुसाफ़िर के लिये ताकि मग़रिब व इशा को मुज़दलफ़ा में जमा ताख़ीर (बाद वाली के साथ पहली जमा करना) कर सके।

## हल्क़ (बाल कटाना)

हल्क़ हज और उमरे का एक रुक्न (फ़र्ज़) है। और हल्क़ का कम से कम सर के तीन बालों का साफ़ करना है और मन्दूब (बेहतर) है हल्क़ का बाद में करना जमरए उक्बा की रमी (कंकरी मारने) के बाद और मन्दूब (बेहतर) है हल्क़ की इब्तिदा सर के दाहिने हिस्से से करना, और किब्ला रुख़ होकर हल्क़ करना, और मर्द का पूरे सर का हल्क़ कराना (मुँडवाना) और औरत का बालों को छोटा करना।

## वाजिबाते हज

और वाजिबाते हज छै: हैं:-

- (1) मक़ामे मुज़दलफ़ा में रात गुज़ारना और वो (शब गुज़ारी) ये है कि शब नहर (कुरबानी की रात) के निस्फ़ सानी (दूसरे आधे हिस्से) में एक लम्हा भी हाज़िर हो जाए और वाजिब नहीं है शब गुज़ारी मजबूर पर।
- (2) और जमरए उक्बा की सात बार रमी (कंकरी मारना) करना।
- (3) और तीनों जमरों की रमी तशरीक़ के दिनों में करना और हर जमरे की रमी सात बार करे।
- (4) उसकी तीनों रातें वहीं गुज़ारना, या पहली दो रातें गुज़ारना जबकि

तशरीक के दिनों के दूसरे दिन पहले कूच का इरादा हो।

(5) एहराम मीकाते साबिक (अव्वल) से बाँधना।

(6) तवाफ़े विदाअ करना।

### रात गुज़ारने और रमी की सुन्नत और शर्तें

और सुन्नत है नमाज़े फ़ज़ के बाद मुज़दल्फ़ा में मशअरे हराम के करीब वुकूफ़ करना (ठहरना), और जमरए उक्बा की सात कंकरियाँ मुज़दल्फ़ा से लेना, और जमरए उक्बा की रमी की इब्तिदा करते वक़्त तलबियह बन्द करना, और तकबीर पढ़ना हर कंकरी के साथ हर रमी में, और दाख़िल हो जाता है हल्क़ (बाल कटाने) का वक़्त, और जमरए उक्बा की रमी का वक़्त, और तवाफ़े इफ़ाज़ा का वक़्त शबे नहर (कुर्बानी की रात) के निस्फ़ शब (आधी रात) से, और जमरए उक्बा की रमी का वक़्त बाकी रहता है तशरीक के आख़िर दिन तक। और बाकी रहता है हल्क़ का वक़्त और तवाफ़ का वक़्त हमेशा (ता ज़िन्दगी), और सुन्नत है जमरए उक्बा की रमी और हल्क़ के बाद नहर (कुर्बानी) के दिन तवाफ़े इफ़ाज़ा में जल्दी करना, फिर मक्का में दाख़िल हो और तवाफ़ करे और सई करे जबकि तवाफ़े कूदूम के बाद सई न किया था, फिर मक़ामे मिना लौटे, और वाजिब है कि तशरीक़ यानी नर्वी ज़िलहिज्जा से बारहवीं ज़िलहिज्जा के दिन की रातें मक़ामे मिना में गुज़ारे और वाजिब है कि तशरीक़ के दिनों में हर दिन ज़वाल के बाद तीनों जमरों की रमी करे और हर रमी में सात कंकरियाँ होंगी। और शर्त है कि सात कंकरियों की रमी एक-एक करके करे। (सातों कंकरियाँ एक साथ न फेंके) और शर्त है कि तशरीक़ के दिनों में तीनों जमरों में तरतीब करे और ये कि रमी तशरीक़ के दिनों में ज़वाल और सूरज ग़रूब के दरम्यान हो, और शर्त है कि फेंका हुआ पत्थर हो, और ये कि रमी (फेंकना) कहा जा सके (कंकरी का रख देना काफी न होगा) और शर्त है कि रमी हाथ से हो। और सुन्नत है रमी की ये कि कंकरी दाहिने हाथ से फेंके और पाक हाथ से फेंके, और लोबिया

(ख़ज़फ़) के बराबर (मिक्दार) कंकरी फेंके, और जिसने जमरए उक्बा की रमी छोड़ दिया या तशरीक़ के दिनों की बअज़ रमी छोड़ दी तो जाइज़ है कि तशरीक़ के दूसरे दिनों में उसका तदारुक (बदला) करे और जिसने तशरीक़ के दूसरे दिन मिना से कूच का इरादा किया तो जाइज़ है (इस पर दम नहीं।)

### हज के दो तहल्लुल

हज के लिये दो तहल्लुल हैं। (तहल्लुल का मअना शरीअत में हज के अरकान से फ़ारिग़ होना है)।

**पहला तहल्लुल :-** तीन रुकों में से दो रुकन करने से हासिल होता है। (1) जमरए उक्बा की रमी (2) हल्क़ (3) तवाफ़े इफ़ाज़ा।

**दूसरा तहल्लुल :-** इन तीनों रुकन के करने से हासिल होता है। और तहल्लुल अव्वल से तमाम मुहर्रमात (मना चीज़ें) हलाल हो जाते हैं सिवाए वती (हमबिस्तरी) के और अक्द के और सिवाए शहवत (हवस) के साथ मुबाशिरत (संभोग) के और दूसरे तहल्लुल से बाकी मुहर्रमात (मना चीज़ें) भी हलाल हो जाती हैं।

### अदाए नुसुकैन् का तरीक़ा

और अदा किये जाएंगे नुसुकैन् (हज व उमरा) चन्द तरीक़े पर, अफ़ज़ल तरीक़ा इफ़राद है जबकि हज के साल में उमरे का एहराम बाँधे।

**इफ़राद :-** ये है कि पहले हज करे फिर हज के बाद उसी साल उमरा करे फिर इफ़राद के बाद अफ़ज़ल हज तमत्तुअ है।

**तमत्तुअ :-** ये है कि पहले उमरा करे फिर उमरे से फ़राग़त के बाद हज करे फिर तमत्तुअ के बाद अफ़ज़ल हजे क़िरआन है।

**क़िरआन :-** ये है कि हज व उमरा दोनों का एहराम एक साथ बाँधे, या सिर्फ़ उमरे का एहराम बाँधे, फिर तवाफ़ से पहले हज का एहराम बाँधे, और दम (खून) वाजिब होता है। तमत्तुअ हज करने वाले पर चार शर्तों से।

**पहली शर्त:-** ये है कि वो (तमत्तुअ वाला) एहले हरम (मक्के का वह इलाका जहाँ शिकार वगैरा हराम है) से न हो, और उसके दरम्यान और हरम के दरम्यान मसाफ़त (दूरी) क़स्र से कम का फ़ासला न हो।

**दूसरी शर्त :-** ये कि उमरे का एहराम हज के महीनों में बाँधा हो।

**तीसरी शर्त :-** ये कि उमरा और हज दोनों का एहराम एक ही साल में बाँधा हो।

**चौथी शर्त :-** ये कि तमत्तुअ वाला मीक़ात तक वापस न लौटा हो। और क़िरान वाले पर दम दो शर्तों से वाजिब होता है।

**पहली शर्त :-** ये कि क़िरान वाला एहले हरम से न हो।

**दूसरी शर्त :-** ये कि मक्के में दाख़िल होने के बाद मीक़ात तक वापस न लौटा हो।

### तस्तीब दम

और तमत्तुअ का दम, और क़िरान का दम, और मीक़ात से एहराम तर्क (छोड़ने) करने का दम, और रमी तर्क करने का दम, और मुज़दल्फ़ा में रात गुज़ारना (शब बाशी) तर्क करने का दम और मक़ामे मिना में रात गुज़ारना तर्क करने का दम, और तवाफ़े विदाअ तर्क (छोड़ने) करने का दम, क़ुरबानी की एक बकरी है (ऊँट गाय का सातवाँ हिस्सा) तो अगर दम से आजिज़ हो तो दस रोज़े रखे, तीन हज के दौरान और सात रोज़े जब कि वतन वापस लौट आए।

### मुहर्माते एहराम

हराम हो जाती हैं एहराम की वजह से छै: चीज़ें:-

(1) एहराम से हराम हो जाता है मर्द का अपना सर छुपाना (ढाँकना) या सर का बअज़ हिस्सा छुपाना, और पूरे बदन को घेरने वाला कपड़ा पहनना, या बदन के किसी इज़्ब (अंग) को घेरने वाला कपड़ा पहनना, (सिला हुआ कपड़ा पहनना भी हराम है) और औरत पर एहराम से हराम

हो जाता है चेहरा छुपाना और दस्ताना पहनना।

(2) एहराम से हराम हो जाता है खुशबू लगाना बदन के ज़ाहिरी हिस्से पर, और अन्दरूनी (इस तरह कि खुले हिस्से पर और कपड़े पर)

(3) एहराम से हराम हो जाता है सर के बाल में तेल लगाना और दाढ़ी के बाल में तेल लगाना।

(4) एहराम से हराम हो जाता है बाल का काटना और नाखून का काटना तो अगर घेरे दार कपड़ा पहना, या खुशबू लगाया या बाल में तेल लगाया, या शहवत (हवस) के साथ मुबाशरत किया (छुआ) या इस्तिम्ना (मुश्त ज़नी यानी मुट्ठी मारना) करने से इन्ज़ाल (मनी आना) हो गया इस हाल में कि ये ज़िक्र किये गए काम जानबूझ कर क़सदन हालते इख़्तियार में किया हो तो उस पर दम वाजिब है, या तीन नाखूनों का इज़ाला किया (काटा) पे दरपे या तीन नाखून से ज़्यादा काटे, या तीन बाल या उससे ज़्यादा लगातार काटे अगरचे कि भूलकर (हालते निसयान में) किया हो, तो दम देना वाजिब है जो कि क़ुरबानी में किफ़ायत करे (या ऊँट गाय का सातवाँ हिस्सा) या छै: मिसकीनों या छै: फ़कीरों को खाना दे, हर मिसकीन को निस्फ़ साअ (सवा किलो) या तीन दिन रोज़ा रखे (दम, खाना, और रोज़े में से जिसे चाहे करे इसमें इख़्तियार है) और वाजिब है एक बाल, और एक नाखून काटने से एक मुद (620 ग्राम) ग़ल्ला दे या एक रोज़ा रखे। और दो बाल दो नाखून दूर करने (काटने) से दो मुद (1240 ग्राम) अनाज दे या दो रोज़े रखे।

(5) एहराम से हराम हो जाता है जिमाअ (संभोग) करना, तो अगर हज में अब्वल तहल्लुल से पहले क़सदन (जानबूझ कर) हालते इख़्तियार में जिमाअ (हमबिस्तरी) कर लिया और उमरे से फ़ारिग़ होने से पहले जिमाअ कर लिया तो उसका नुसुक (हज) ख़राब हो गया। और वाजिब है फ़ासिद (ख़राब) हज का अदा करना और फ़ौरन उसकी क़ज़ा करना

और वाजिब है कफ़ारे में बुदना (ऊँट की कुरबानी) देना तो अगर बुदना न दे सके तो कफ़ारे में बकरा (गाय) वाजिब है। और अगर गाय की कुरबानी से आजिज़ हो तो सात बकरियाँ दे फिर अगर बकरी न दे सके तो बुदना की कीमत मिस्ले (बराबर रक़म) से मिसकीनों पर खाना (गुल्ला) तक़सीम करे, तो अगर बुदना की कीमते मिस्ल से आजिज़ हो तो कीमते मिस्ल के मुद (620 ग्राम) के हिसाब से हर मुद के बदले एक एक रोज़ा रखे।

(6) एहराम से हराम हो जाता है शिकार करना बरी माकूल (खुशकी का हलाल खाया जाने वाला जानवर) का या हलाल माकूल जानवर और ग़ैर माकूल (न खाया जाने वाला) जानवर के जुफ़ती (नर मादा के मिलने) से पैदा शुदा जानवर का शिकार करना, और इलाक़ए हरम में शिकार करना हलाल (ग़ैर हाजी) पर भी हराम है। और हराम है हरम के तर पौधे और तर घास का उखाड़ना और काटना सिवाए इज़खर (एक खुशबूदार किस्म की घास) और कांटेदार पौधे के, और सिवाए जानवर के चारे की घास के, और सिवाए दवा की घास के, और सिवाए ज़रअ (खेती) (गेहूँ जौ वगैरा) के और सूखी घास का उखाड़ना हराम है, उसका काटना हराम नहीं।

फिर अगर ऐसा जानवर हलाक किया जिसके मिस्ल जानवर मिला सके तो कफ़ारे में मिसली (वैसा ही) जानवर दे। और अगर हलाक शुदा के मिस्ल जानवर न हो तो कफ़ारे में उसकी कीमत दे, तो शतुर मुर्ग के कफ़ारे में ऊँट दे, और कबूतर के कफ़ारे में बकरी दे, नील गाय और जंगली गधे के कफ़ारे में बकरी दे और हिरनी के कफ़ारे में बकरी दे और मिसली जानवर में इख़्तियार है, इस बारे में मिसली जानवर को हरम में ज़िबह करके उसे हरम में ही सद्का कर दे और या तो कीमत मिस्ल (बराबर रक़म) का खाना हरम में सद्का कर दे और या तो कीमत मिस्ल के अनाज के जितने मुद (620 ग्राम) बनें इस हिसाब से हर मुद के

बदले एक रोज़ा रखे। और वो जानवर जिसका मिस्ल (सामान) न हो जैसे टिट्टी तो उसके कफ़ारे में इख़्तियार है इस बारे में चाहे तो उसकी कीमत का खाना निकाले और चाहे तो मुदों के हिसाब से हर मुद के बदले रोज़ा रखे। और वाजिब है कि हरम के बड़े पेड़ के कफ़ारे (बदले) में एक साल की गाय दे और हरम के उस छोटे पेड़ में जो बड़े पेड़ का एक बटा सात हो  $1/7$  हो उसके कफ़ारे में बकरी दे (इन मसाइल में भी ज़िक्र किये गए इख़्तियार का लिहाज़ है) इख़्तियार है उसके ज़िबह करने, और उसकी कीमत का खाना सद्का करने और मुदों के हिसाब से हर मुद के बदले एक रोज़ा रखने के दरम्यान।

और बिल्कुल छोटे दरख़्त में भी इख़्तियार है इस दरम्यान के उस हरम के छोटे पेड़ की कीमत का खाना सद्का करे और चाहे तो मुदों के हिसाब से हर मुद (620 ग्राम) के बदले एक रोज़ा रखे।

### हज से रोकने वाली चीज़ें

और जाइज़ है माँ-बाप के लिये कि वो अपने ग़ैर मक्की बेटे को नफ़िल हज और नफ़िल उमरा करने से रोक सकें सिवाए हज फ़र्ज़ के (माँ-बाप बेटे को हज फ़र्ज़ से नहीं रोक सकते) और जाइज़ है आका का अपने गुलाम को हज से रोकना चाहे वो हज फ़र्ज़ हो या हज सुन्नत। तो अगर उन्होंने यानी बेटा, बीबी, गुलाम ने (वालिदैन, शौहर, आका) की इजाज़त के बग़ैर एहराम बाँध लिया तो ये तीनों (बेटा, बीबी, गुलाम) हज व उमरे का मुहस्सर (रोका हुआ) एहराम खोल दें ज़िबह करने के साथ कफ़ारे में उस जानवर को जो कुरबानी में क़िफ़ायत करता है, फिर ज़िबह के बाद हल्क़ कराए हज व उमरे से तहल्लुल की नियत के इक्तरान यानी मिला होना के साथ और जो ज़िबह (दम देने) से आजिज़ हो तो बकरी की कीमत का खाना मिसकीनों को खिलाए फिर अगर खाना खिलाने से आजिज़ हो तो मुदों के अ़दद के हिसाब से रोज़े रखे। और रकीक़ (गुलाम) तहल्लुल की नियत कर ले सिर्फ़ हल्क़ (बाल कटाने) के साथ और महले इह़सार (रुकने की जगह) खास कर ले और इन

(जिक्र किये गए लोगों) पर क़ज़ा वाजिब नहीं है। और जिसने एहराम के वक़्त शर्त रखी, तोशा ख़त्म होने की वजह से या मर्ज़ की वजह से तहल्लुल (हलाल होने) की, तो ये शर्त जाइज़ है। और वाजिब है तहल्लुल (हलाल) कर लेना जिसका वुकूफ़ अरफ़ा (अरफ़ात का ठहरना) फ़ौत हो गया हो, तहल्लुल तवाफ़ व सई से करे, और नियत हलाल होने के साथ हल्क़ कराए (बाल कटाए) और वाजिब है कि हज़ की क़ज़ा करे, और उस पर दम वाजिब है मिस्ल तमत्तुअ के दम के और वाजिब है कि ये दम (जानवर) अपने क़ज़ा के हज़ में एहराम के बाद ज़िबह करे। और वाजिब है कि हर वाजिब शुदा जानवर हरम में ज़िबह किया जाए सिवाए दम इहसार (रोकने) के, और अफ़ज़ल है हज़ में कि ज़िबह मक़ामे मिना में करे, और उमरे में अफ़ज़ल है कि मक़ामे मरवा में ज़िबह करे जिस वक़्त भी चाहे, और दम या कीमत को हरम के मिसकीनों पर तक़सीम कर दे (कम से कम तीन मिसकीनों पर तक़सीम करे।)



## कुरबानी

कुरबानी सुन्नते मुअक्कदा है। कुरबानी वाजिब नहीं होती है मगर नज़र (मन्नत) मानने के सबब और ये कौल “हाज़िही उज़हिय्यतुन” (ये कुरबानी है) या “जअल्लुहा उज़हिय्यतुन” (मैंने इसे कुरबानी के लिये कर दिया) कहने के सबब। और कुरबानी के जानवर में जाइज़ नहीं है मगर ऊँट और गाय और बकरी और अफ़ज़ल कुरबानी ऊँट की है, फिर गाय की है, फिर दुम्बे की है, फिर बकरी की है, फिर ऊँटनी का सातवाँ हिस्सा, फिर गाय का सातवाँ हिस्सा और सात बकरियों की कुरबानी अफ़ज़ल है एक ऊँटनी की कुरबानी से। और अफ़ज़ल रंग कुरबानी के जानवर का सफ़ेद है, फिर ज़र्द (पीला) अफ़ज़ल है, फिर भूरा अफ़ज़ल है फिर चितकबरा अफ़ज़ल है, फिर काला अफ़ज़ल है, फिर सुर्ख़ जानवर अफ़ज़ल है।

और कुरबानी के जानवर की शर्त ये है कि, ऊँट पूरे पाँच साल का हो और गाय और बकरी पूरी दो साल की हों और दुम्बा (भेड़) पूरे एक साल का हो। और कुरबानी के जानवर की शर्त ये है कि जानवर ख़ारशी (खुजली वाला) न हो अगरचे कि कम ख़ारिश हो, और लंगड़ा न हो, और सींग टूटा न हो, और पागल न हो, और अंधा न हो, और काना न हो, और बीमार न हो, ऐसी बीमारी जो गोश्त फ़ासिद (ख़राब) कर देती है। और शर्त है कि कुरबानी का जानवर कान कटा न हो अगरचे कि कम कटा हो या जुबान कटी हुई न हो, या थन कटा न हो, या सुरीन (चूतड़) कटी हुई न हो और बाज़ू और रान का ज़ाहिरी हिस्सा कटा हुआ न हो। और शर्त है कि उसके तमाम दाँत न झड़े हों और शर्त ये है कि कुरबानी का जानवर ज़िबह करते वक़्त नियत करे या उस (ज़िबह) से पहले नियत करे।

## वक़्त कुरबानी

और कुरबानी का वक़्त, कुरबानी के दिन सूरज तुलूअ (उदय) होने के बाद और दो रकअत और दो खुत्बे के बराबर वक़्त गुज़रने के बाद

शुरू होता है। और कुरबानी का वक्त बाकी रहता है तशरीक के आखरी दिन तक और वाजिब है (नफिल कुरबानी में) कुरबानी का कुछ कच्चा गोشت सद्का करना, और जाइज़ नहीं है कुरबानी का थोड़ा गोشت भी बेचना, और वाजिब है नज़र (मन्नत) की कुरबानी का तमाम गोشت (और खास कुरबानी का तमाम गोشت) सद्का कर देना, और मकरूह है दस ज़िलहिज्जा तक कुरबानी करने वाले के लिये अपना नाखून या बाल या उसके अलावा कुछ भी काटना या कुछ भी दूर करना जब तक कि कुरबानी न कर ले।

### अक्कीका

अक्कीके का लफ्ज़ी मअना "नौ मौलूद (नए बच्चे) के सर का बाल" है और शरीअत में नौ मौलूद के सर का बाल मूँडते वक्त जो जानवर ज़िबह किया जाए।

और अक्कीका सुन्नते मुअक्कदा है कुरबानी की तरह (इसकी शर्तें हैं) और अक्कीके का वक्त विलादत (पैदाइश) से बालिग होने तक बाप के ज़िम्मे है, फिर (बालिग होने के बाद) अपनी तरफ से अक्कीका करे। और अफ़ज़ल है कि अक्कीका पैदाइश के सातवें दिन करे अगर सातवें दिन न कर सका तो पैदाइश के चौदहवें दिन करे वरना इक्कीसवें दिन करे। और मुकम्मल अक्कीका मुज़क्कर (मर्द) के लिये दो बकरियाँ हैं (और मुअन्नस के लिये एक बकरी) और सुन्नत है कि अक्कीके के जानवर की हड्डियाँ न तोड़े। और अक्कीके का पका हुआ गोشت सद्का करे, और सुन्नत है कि अक्कीके का गोشت मीठा पकाए और बेहतर ये है कि अक्कीके का गोشت इरसाल करे (फ़कीरों के घर भेजे) और सुन्नत है ज़िबह के बाद हल्क़ रास (सर मुँडवाना) कराना, और बाल के वज़न के बराबर सोना सद्का करना, फिर चाँदी सद्का करना (जबकि सोना सद्का न कर सके) और सुन्नत है खजूर से बच्चे की तहनीक (चबाकर बच्चे के मुँह में देना) फिर मीठी चीज़ से तहनीक। और मकरूह है बच्चे का सर अक्कीके के खून से तलतीख़ (लुथेड़ना, पोतना) करना, और सर पे ज़अफ़रान का पानी लगाने (मलने) में कोई हरज नहीं।

### बाल वगैरा के मुतअल्लिक़ मुहर्रमात (हराम व मना चीज़ें)

और हराम है सफ़ेद बालों का काला करना अगरचे कि औरत ही के लिये हो सिवाए मुजाहिद (इस्लामी सिपाही) के वो दुश्मन पर दबदबा बिठाने के लिये काला खिज़ाब (रंग) लगा सकता है और हराम है दूसरों का बाल अपने बालों में जोड़ना, और दाँतों का रेती से फाड़ना, और हराम है गूँदना और मर्द और हिजड़े के लिये बिला ज़रूरत मेहंदी लगाना हराम है।

और अच्छा नाम रखना सुन्नत है। और अफ़ज़ल (बेहतरीन) नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान है और सच्चा नाम हारिस और हम्माम है और बुरा नाम हर्ब व मुरा है, बुरे नाम रखना मकरूह है और वो नाम भी रखना मकरूह है जिससे लोग मन्फ़ी (ग़लत) शगून लें जैसे नुजैह, बरका, हर्ब, मुरा वगैरा और सित्तुन्नास या सित्तुल इलमा नाम रखना मकरूह है तहरीमी (हराम के करीब) है। और मलिकुल इमलाक और शहनशाह नाम रखना हराम है। और सुन्नत है कि बुरे नामों को और जिन नामों से मन्फ़ी (बुरे) शगून लिये जाते हों उन्हें अच्छे नामों में बदल दें और अपने बेटे, शागिर्द, और गुलाम का अपना नाम न रखना मन्दूब (अच्छा) है और एहले फ़ज़ल (नेक, बुजुर्ग) मर्द व औरत की कुन्नियत (वह नाम जो बाप, माँ, बेटा, बेटी के तअल्लुक़ से बोला जाता है) रखना मन्दूब (बेहतर) है अगरचे कि उनकी औलाद न हो और सुन्नत है कि बच्चे के दाहिने कान में अज़ान दे और बाएँ कान में इक़ामत (तकबीर) कहे, फिर उसके दाहिने कान में सूरए इख़लास पढ़े और उसी कान में ये आयत पढ़े "इन्नी उर्डू जुहा बि-क व ज़ुर्रियतहा मिन शैतानि रज़ीम अज़ाज़ नल्लाहु मिन्हु वला ज़अ-ल लहू अलैना सुल्तानन आमीन वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन अब्वलं व आस्त्रिं व ज़ाहिरं व बातिनं व सल्लल्लाहु अला सैय्यिदिना मुहम्मदिं व आलिही व सहबिही व ज़ुर्रियतिही वसल्लिम कुल्लमा ज़करहु ज़ाकिरुन व ग़-फ़-ल अन ज़िकरिहिल ग़ाफ़िलून व हस्बुनल्लाहु व नेअमल वकील व आस्त्रिह दअवाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।"

## खुशखबरी

आपको ये खबर देते हुए इन्तिहाई खुशी हो रही है कि शाफई हज़रात के लिये किताबों की कमी को दूर करने के लिये इमाम शाफई फाउन्डेशन की बुनियाद रखी गई है।। कूतुबे कौकन हज़रत मख़दूम अली माहिमी रहमतुल्लाहि अलैह की तफ़्सीरे कुरआन के सूरए बक़र का उर्दू तर्जमा तीन माह की कम मुदत में शाए (प्रकाशित) होकर कामयाबी हासिल कर चुका है। दूसरे "अहकामे शाफई" रिसाला (जो सफ़ीनतुनजा फ़ी उसूले दीन व फ़िक्ह का तर्जमा है) भी शाए हो चुका है। फ़ैजे शाफई (जो मुख़्तसर बा फ़ज़ल का तर्जमा है) आपके हाथों में है। नमाज़ के मसाइल पर किताब और बरकाते शाफई जो अक़ाइदे एहले सुन्नत और इबादात से मुतअल्लिक अहम दस्तावेज़ और अनवारे शाफई जो रोज़ मर्रा के मामूलात पर फ़िक्ह शाफई (मसलक) की रौशनी में एक बेहतरीन किताब है बहुत जल्द मन्ज़रे आम पर आ रही है। अपने इमाम के तअल्लुक से जानकारी के लिये उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी में सीरते इमाम शाफई भी शाए (प्रकाशित) होने जा रही है।

आप हज़रात से गुज़ारिश की जाती है कि किताबों को घर-घर पहुँचाने के लिये हमारा साथ दें।

(1) दफ़्तर इमाम शाफई फाउन्डेशन 4/7 अमीर बाग़ न0 2  
चेम्बूर, मुम्बई 89

(2) जनाब अय्यूब अब्दुल ग़नी बाघु साहब दग्गाह मस्जिद  
डाकयार्ड रोड, मजगाँव, मुम्बई 10

(3) न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी 14, मुहम्मद अली रोड, भिण्डी  
बाज़ार मुम्बई 3